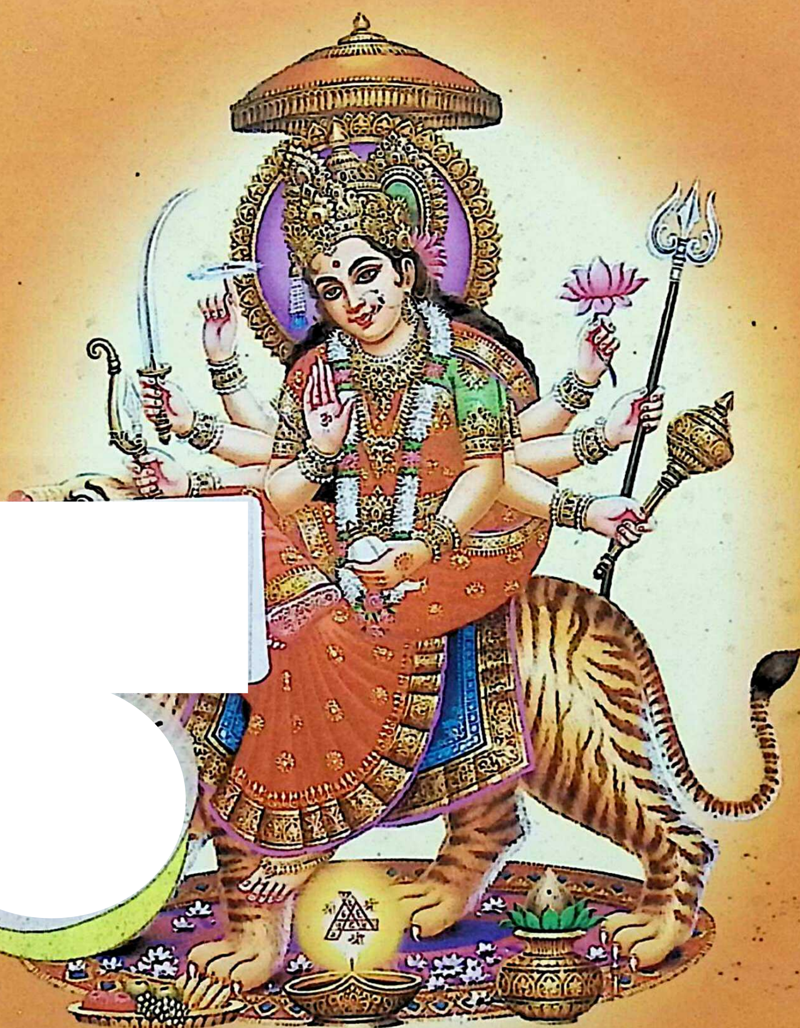
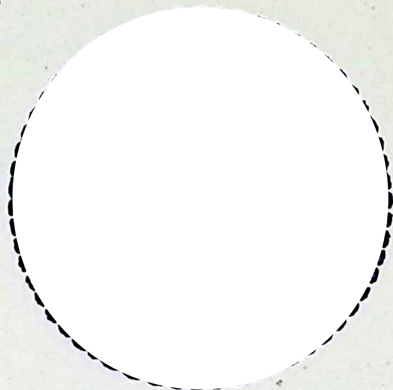
श्रीदुर्गासप्तशती

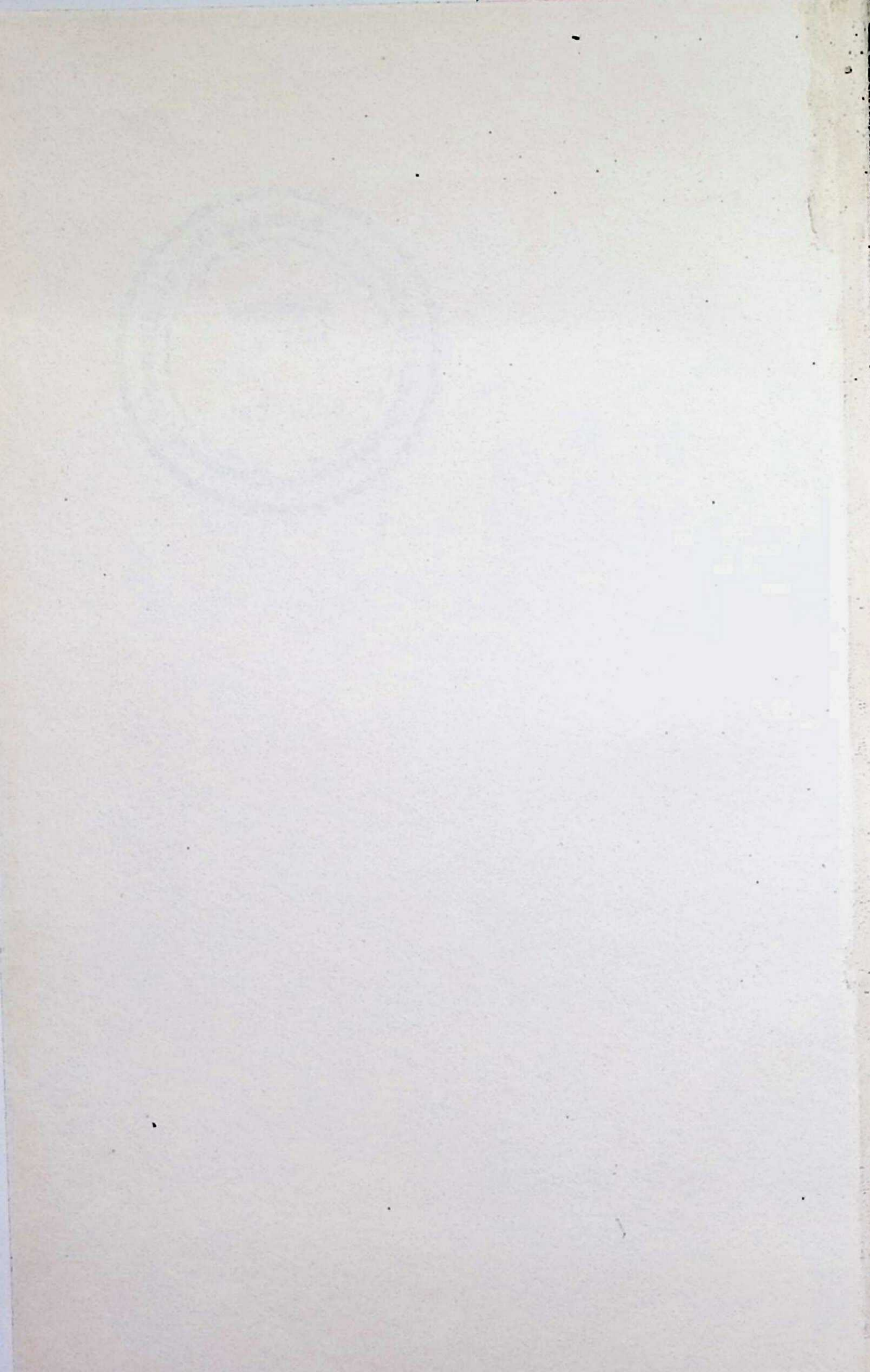
बीजाक्षरमन्त्रसहिता



सम्पादक

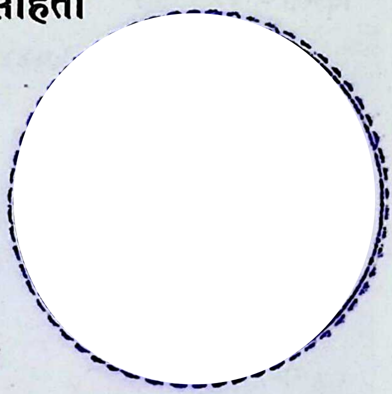
सुनील कुमार उपाध्याय





श्रीदुर्गासप्तशती

बीजाक्षरमन्त्रसहिता



सम्पादक

सुनील कुमार उपाध्याय



परिमल पब्लिकेशन्स

दिल्ली

प्रकाशक:

परिमल पब्लिकेशन्स

२७/२८ शक्तिनगर

दिल्ली – ११०००७

दूरभाष : २३८४ ५४५६, ५५४४१५१६

यह ग्रन्थ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता से

प्रकाशित है।

प्रथमसंस्करणम्, २००५

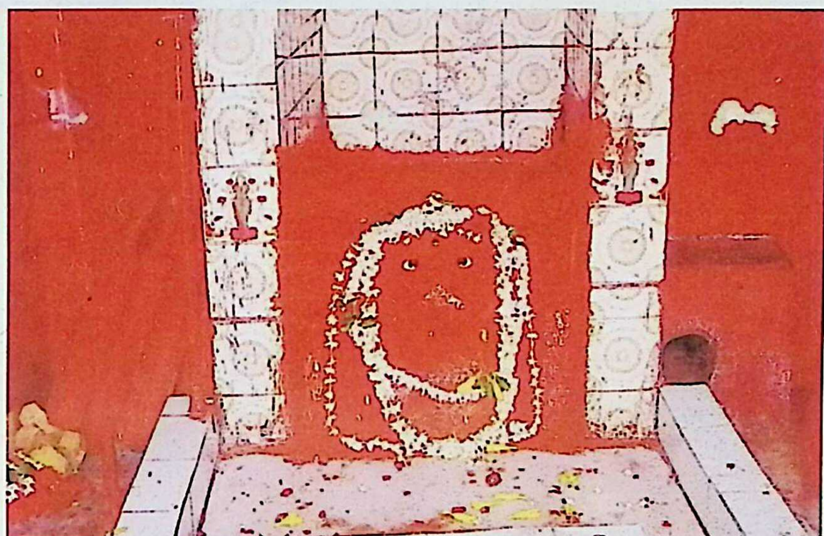
मूल्य - ९८.००

मुद्रक:

तरुण ऑफसैट प्रेस,

मेन यमुनाविहार, मुख्य मार्ग,

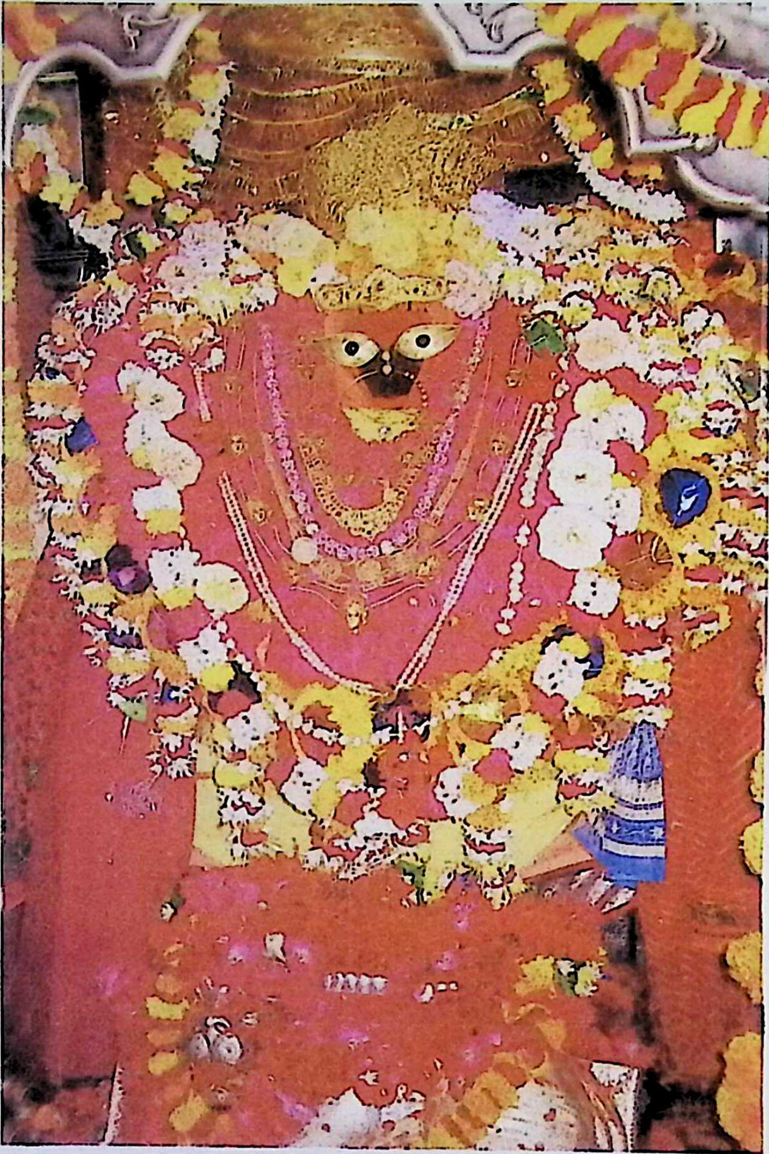
मौजपुर, दिल्ली ११००९२



बाबा भूतनाथ

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

कालीखोह, विन्ध्याचल, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)



श्री विन्ध्यवासिनी

ॐ सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्र्याहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

श्रीविन्ध्यवासिनी मंदिर, विन्ध्याचल, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

विषयसूची

समर्पण

ॐ अँ श्रीअघोरानन्दनाथाय गुरवे नमः। ॐ गँ गणपतये नमः।

ॐ बँ बटुकाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीविन्ध्यवासिन्यै सर्वस्वरूपिण्यै नमः।।

श्री दुर्गासप्तशती सात सौ बीजाक्षरों से विभूषित होकर भक्तों एवं साधकों के समक्ष प्रस्तुत है। ये बीजाक्षर कात्यायनी तंत्र में उल्लिखित हैं तथा श्री उड़िया बाबा के आशीर्वाद से उनकी शिष्यपरम्परा के द्वारा मेरे पास पहुँचे हैं। इन सभी को यथा स्थान श्रीसप्तशती के मंत्रों के साथ मैंने सम्पुटित करके भक्तों के सामने रखा है। श्री दुर्गोपासनकल्पद्रुम में उल्लेख है—"विना बीजं महास्तोत्रं न सिध्यति कदाचन" अर्थात् बीजों के बिना श्रीसप्तशती महास्तोत्र पूर्णतः प्रभाव सम्पन्न होकर सिद्धिप्रद नहीं होता। माँ विन्ध्यवासिनी जी की स्तुति करते समय अनेक बार प्रयोगों से संबंधित कई बात मेरे मन में आयी जिससे मैं इस दृढ़ निश्चय पर पहुँच गया कि बीजाक्षरों से सम्पुटित पाठ ही श्रीसप्तशती के मंत्रों के अर्थों को सर्वांश में प्रकाशित करते हैं। कामधेनु तन्त्र का वचन है "वर्णात्तु जायते ब्रह्मा तथा विष्णुः प्रजापते, रुद्रश्च जायते देवि जगत्संहारकारकः"। आगम का सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण दृश्या दृश्य ब्रह्माण्ड मातृका (वर्ण) से घटित है। तात्पर्य है कि सभी तत्त्वों एवम् अर्थों की सृष्टि, स्थिति एवं लय के मूल में मातृका है। अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिका श्रीजगदम्बा की स्तुति श्रीसप्तशती के द्वारा करने से प्रायः उनके सभी प्रधान रूपों की स्तुति हो जाती है। श्री रावण ने श्रीसप्तशती में माँ को नव करोड़ शक्तियों से सम्पन्न कहा है। इनकी परम्परा के ध्यान में 'सा चण्डी नवकोटिशक्तिसहिता' वचन प्राप्त है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए पूज्य गुरुओं का निर्देश है कि सभी सम्प्रदायों की उपासना सांगोपांग पूरी कर लेने के बाद श्री सप्तशती का पाठ करना चाहिए। इसके पहले इस स्तोत्र के अर्थ की पूरी महिमा हाथ नहीं लगती। यह सभी बातें मैंने श्रीसप्तशती के विशेष-पाठ के सन्दर्भ में कही है। अतः इसका अर्थ यह नहीं है कि सामान्य पाठ का कोई अर्थ नहीं है। संपुटहीन, सामान्य एवं निष्काम पाठ सर्वातिशायी है। किन्तु यह

निष्कामभाव सभी कामनाओं के परिपूर्ण हो जाने पर आता है। निष्काम अन्तःकरण के सन्दर्भ में साधक स्वयं प्रमाण हैं। भक्ति, साधना, उपासना इत्यादि के संदर्भ में एक बात विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि इन सभी सामान्य एवं विशेष स्तुतियों के होने पर भी आवश्यक नहीं है कि श्री माँ साधक के सम्बन्धों के अनुरूप उसका वरण कर ही ले। यह वरण जन्म-जन्मातरीय पुण्य-पुरुषार्थ, गुरुकृपा अथवा श्रीमाँ की कृपा से प्राप्त होता है। यहाँ भी श्रीमाँ का सामान्य आशीर्वाद सदा सब के साथ होता है किन्तु विशेष सिद्धियों एवं पराक्रमों के सन्दर्भ में यह नहीं मिलता।

मुझे बहुत अधिक प्रसन्नता हो रही है कि गुरुजी और श्रीमाँ विन्ध्यवासिनी जी ने मुझे जो आशीर्वाद दिया है, उसको मैं साधक एवं भक्त समाज के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस सन्दर्भ में मैं सबसे पहले श्रीगुरुजी 'अघोरानन्दनाथ जी' को प्रणाम करता हूँ। इनका निवास श्रीकालीखोह मन्दिर (विन्ध्याचल मिर्जापुर, उ०प्र०), के पीछे है। इनके घर पर इनका नाम 'श्रीभूतनाथ' उत्कीर्ण है। दुनिया इनको भूत-प्रेत-पिशाच, भवानी आदि आसुरी एवं प्रेत शक्तियों के मालिक के रूप में जानती है। इनका पूरा परिचय इनसे परिचित लोगों को मालूम है लेकिन एक बात आप लोगों को बताऊँगा कि इनसे बड़ा कोई नहीं मिला। दुनिया में सबसे बड़ा 'औघड़ दानी'। गुरुजी का प्रकाशन शास्त्र सम्मत नहीं है फिर भी गुरुजी का नाम सामने हो और मैं कुछ कहूँ नहीं' इस भावातिरेक में इतना थोड़ा सा लिख गया। यह संस्करण सबसे पहले उनको समर्पित है। मैं आपसे निवेदन करूँगा कि भाग्य से गुरुजी हों तो ऐसे' नहीं तो न हों।

अब मुझे अपनी माँ की याद आ रही है। इनका नाम 'श्रीविन्ध्यवासिनीजी' है, वैसे तो मैं इनका परिचय दे नहीं पाऊँगा किन्तु दे सकता हूँ। इन्होंने मुझे यह बताया है कि 'ये सर्वस्वरूपिणी' हैं। अब विचारणीय बात यह है कि 'सर्व' पद व्यापक है अतः सर्व के सभी अर्थों को जब तक जान नहीं लिया जाय तब तक यह कैसे कहा जा सकता है कि यह सर्व का अर्थ है। सर्व पद अनन्त, अखण्ड-सखण्ड, ब्रह्म इत्यादि सबका वाचक है। अतः इसका इदमित्थम् तथा अन्ततः

वर्णन कोई नहीं कर सकता। इस विषय में बड़े-बड़े महारथी समर्पण कर चुके हैं। एक श्लोक लिख रहा हूँ जिससे थोड़ा यह विषय स्पष्ट हो जाएगाः—

"यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।"

अर्थात् जिसके अतुल प्रभाव को श्रीहरि नारायण, ब्रह्माजी, शिवजी नहीं बता पाते उनका सांगोपांग परिचय कैसे दिया जा सकता है किन्तु ब्रह्माण्ड एवं इससे अतिरिक्त जितने अर्थों का क्रमिक ज्ञान होता जाय, सर्व पद उन सभी का परामर्शक है और उन सभी अर्थों के ज्ञान में मूल हेतु 'सर्वस्वरूपिणी माँ' हैं। बहुत बड़ी बात को बालकों को आसानी से समझने के लिए लीला, कौतुक, दृष्टान्त आदि का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि इन सब माध्यमों से वस्तु का पूरा ज्ञान नहीं हो पाता तथापि बालक उस समय संतुष्ट हो जाते हैं कि यह चीज हम जान गए। अपना परिचय मुझे देते समय श्री माँ ने लगता है उपर्युक्त कौतुक का ही सहारा लिया था। उस समय तो मैं संतुष्ट हो गया था क्योंकि छोटा बालक था। किन्तु आज मैं बड़ा हो गया हूँ। मेरे संज्ञान में वे सारी बातें ठीक-ठीक आनी चाहिए, अब मैं समझदार और जानने लायक हो गया हूँ। मेरा यह कहना है और यह अतिशीघ्र पूरा होना चाहिए। मेरे गुरु श्री अघोरानन्दनाथ जी, मेरी माँ श्री विन्ध्यवासिनी जी, मेरे पिता श्री काशी विश्वनाथ जी' बहुत बड़े एवम् अद्वितीय है, अतः मैं सब तथ्यों का अधिकारी हूँ। श्रीसप्तशती माताजी की ही स्तुति है अतः उनको यह स्वतः ही समर्पित है फिर समर्पण करने के लिए मेरे पास मुझसे प्रिय वस्तु कोई नहीं है अतः मैं खुद स्वयं को ही उनको समर्पित करता हूँ। मुझे यह मालूम है कि वे यह सब कार्य अपने अनुरूप ही करती है अतः और कुछ नहीं कहना है। समाज से निवेदन है कि निराश होकर माँ की शरण में आए- ऐसा कुछ भी नहीं है जो असम्भव है। इस विषय में प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है।

इस पुस्तक में जो कुछ भी त्रुटि हो गयी होगी उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मालूम होने पर तुरन्त इसको ठीक करने का प्रयाग करूँगा। शीघ्र ही इन बीजाक्षरों का अर्थ एवं श्रीसप्तशती का अर्थ प्रकाशित करने की कोशिश करूँगा। इस पर एक विस्तृत शोध करने की इच्छा है। इसके लिए आशीर्वाद की कामना करता हूँ। यह संस्करण सप्तशती, चण्डी, महाविद्या आदि भेदों के पाठ के उद्देश्य से तैयार किया गया है, अतः इसमें हिन्दी अर्थ एवं विषय का स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। आगामी संस्करण में यह हिन्दी व्याख्या से विभूषित रहेगा।

सुनील कुमार उपाध्याय

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

ॐ शिव उवाच

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्य विधायिनी।

कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नत:।।

देव्युवाच

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।

मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुति: प्रकाश्यते।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमंत्रस्य नारायणऋषि:; अनुष्टुप् छन्द:, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता:, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोग:।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (१)

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तो:,

स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदु:खभयहारिणि का त्वदन्या,

सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।(२)

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते

मः न विच्चे चामुण्डायैक्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (३)

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।

सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते

मः न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (४)

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसन्विते।

भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते

मः न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (५)

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,

रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्,

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्।

त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति

मः न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (६)

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

सर्वाबाधाप्रशमनम्, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि,

एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्

मः न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ। (७)

''इति सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा''

भूमिका

प्रणव एवं मायाबीज का ऐक्य:

प्रपञ्चभूत जगत् में दो पदार्थ मुख्य हैं। ब्रह्म एवं माया। संसार इसी का विकार (परिणाम) है। श्रुति का कथन है 'मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्। तात्पर्य है ' शक्ति एवं शक्तिमान् दो पदार्थ प्रधान हैं। प्रधान शक्ति इस सम्पूर्ण जगत् के रूप में स्थित है। इसके शक्तिमान् महेश्वर हैं। किन्तु ये दोनों चन्द्र एवं चन्द्रिका की तरह तादात्म्यापन्न हैं। इनका तादात्म्य वह्नि एवं दाहकता की तरह नित्य है। ब्रह्म तत्त्व का मुख्य मंत्र प्रणव 'ॐ' है। माया का मुख्य मंत्र 'ह्रीँ' मायाबीज है। यह माया बीज समस्त जगत् में व्याप्त है। भुवनेश्वरी संहिता में उल्लेख है—पृथिवी हिङ्कार आदित्यो हिङ्कार, द्यौर्हिङ्कार पुरोवातोहिङ्कारः, प्रजापतिर्हिङ्कारः, उद्यन्हिङ्कार, मनोहिङ्कारः। सौन्दर्यलहरी में भी इस कथन का समर्थन मिलता है:—

"मनस्त्वं व्योमत्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि;
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवतिभावेन विभृषे।।"

श्रीदेव्यथर्वशीर्ष में वियदीकार संयुक्तम् आदि मंत्र में मायाबीज का प्रतिपादन है। इस प्रकार ब्रह्म के ध्रुव, तार इत्यादि सभी नामों का वाचक जिस प्रकार प्रणव 'ॐकार' है उसी तरह माया के जितने रूप एवं नाम, शक्ति, माया, मालिनी, शिववल्लरी, मूर्ति, कला, वाणी, बीजशक्ति, कुण्डलिनी इत्यादि हैं, इन सबका वाचक मायाबीज 'ह्रीँकार' है। ब्रह्म एवं माया के अभिन्न होने के कारण प्रणव 'ॐकार' से जिस प्रकार उभय पदार्थ का ज्ञान एवम् अनुभव होता है। उसी प्रकार माया के वाचक 'ह्रीँकार' से भी ब्रह्म एवं माया दोनों का ज्ञान होता है। ब्रह्माण्डपुराण एवं प्रपञ्चसार में इन दोनों के ऐक्य का प्रमाण उपलब्ध है। 'ह्रीङ्कारः उभयात्मकः। तदा तां तारमित्याहुरोमात्येति बहुश्रुताः। तामेव शक्तिं

ब्रुवते हरीमात्मेति चापरः। तंत्र संप्रदाय में प्रणव एवं मायाबीज मंत्र के वाच्य शबलब्रह्म के लिए बिन्दु पद का व्यवहार मिलता है। शारदातिलक एवं भुवनेश्वरी स्तुति में यह तथ्य प्रमाणित है। आसीच्छाक्तिस्ततो नादो नादाद्बिन्दुसमुद्भवः। नमस्ते समस्तेशि बिन्दुस्वरूपे इति।

मायाबीज से तीन प्रधानशक्तियों का उद्भवः– मायाबीज के वाच्य बिन्दु से इच्छा, ज्ञान एवं क्रियारूप रौद्री, ज्येष्ठा एवं वामा शक्तियाँ प्रादुर्भूत होती हैं। श्री महाकाली, महालक्ष्मी, एवं महासरस्वती इन्हीं के नामान्तर हैं। इनके अनेक मंत्रों में दो प्रधान हैं, नवार्ण एवं सप्तशती। इन दोनों मंत्रों में प्रधान एवं गौणभेद से दो प्रकार हैं। इसमें नवार्ण के प्रधान रूप से ग्रहण करने पर श्रीसप्तशती उसके अङ्गरूप में रहती है। इसमें साधक को नवार्ण की दीक्षा लेकर नवार्णोक्त यंत्र में नवार्ण देवता का पूजन करके तथा नवार्ण मंत्र का जप करके उसके अङ्गभूत श्रीसप्तशती का पाठ करना पड़ता है। यह प्रथम प्रकार है। जो सप्तशती मालामंत्र में दीक्षित होते हैं उनको रहस्यों में कही गयी विधि के अनुसार सप्तशती यंत्र में सप्तशती देवता का पूजन करके उसके अङ्गभूत नवार्ण मंत्र का सप्तशती पाठ के पूर्व एवं उत्तर भाग में जप करना चाहिए। यह दूसरा प्रकार है।

सप्तशती का स्वरूपः– सभी कामनाओं को प्रदान करने वाला श्रीसप्तशती स्तोत्र वेद की तरह अनादि है। भुवनेश्वरीसंहिता में उल्लेख है–यथा वेदो ह्यनादिर्हितद्वत्सप्तशतीस्मृतेति। मेरुतंत्र में भगवान् श्रीशिव कहते हैं 'सप्तशती के सकल तत्त्व को केवल मैं जानता हूँ। मुझसे एक पादकम श्रीहरिनारायण जानते हैं। आधा भाग ब्रह्माजी को मालूम है। व्यासजी चतुर्थांश जानते हैं। कोट्यंश अन्य लोग (सिद्धादि) जानते हैं। सप्तशत्याश्च सकलं तत्त्वं वेद्भ्यहमेव हि। पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्त्यर्द्धन्तु प्रजापतिः। व्यासस्तुतुर्यांशकं वेत्ति, कोट्यंशमितरे जनाः इति। व्यासजी ने इस स्तोत्र को लोक में प्रकट किया है अत एव यह व्यासकृत है, ऐसा लोक व्यवहार है। ''मार्कण्डेय उवाच से लेकर सावर्णिर्भविता मनुः'' यहाँ तक मार्कण्डेय पुराण में उल्लिखित त्रयोदश अध्याय को सप्तशती स्तोत्र कहते हैं।

चिदम्बरसंहिता में श्रीशिव ने श्रीसप्तशती के स्वरूप को प्रकाशित किया है। उनका कथन है- अत्यन्त संकट के प्राप्त होने पर देवताओं के कार्य को सिद्ध करने के लिए और असुरों के विनाश के लिए चिन्मयी परा श्रीत्रिपुरा देवी तीन स्वरूपों वाली हुई। देवताओं ने इनको संतुष्ट किया। यही चिन्मयी शक्ति कालीरूप में प्रकट हुई। इन्होंने ही महालक्ष्मी एवं महासरस्वती रूपों को धारण किया। इन्हीं की कथा मार्कण्डेय पुराण के त्रयोदश अध्यायों में उपलब्ध है। इसके पाठ से मंत्रवित् जन्म एवं दरिद्रता दोनों का त्याग कर देता है। इससे सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं और सब प्रकार का सौख्य प्राप्त होता है। डामर तंत्र में उल्लेख है कि जिस प्रकार यज्ञों में अश्वमेध एवं देवताओं में श्रीहरि हैं उसी प्रकार सभी स्तुतियों में 'सप्तशतीस्तव' है। भुक्ति एवं मुक्ति देने वाला, पवित्रों में पवित्रतम तथा पुण्यों के निधान इस स्तोत्र से श्रेष्ठ कोई स्तुति नहीं है। इस स्तोत्र के दो नाम हैं- सप्तशती एवं सप्तसती। इस स्तोत्र में मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण स्तम्भन एवं विद्वेषण के सात सौ प्रयोग कहे गए हैं। अत एव श्रीवेदव्यास ने इसे सप्तशती कहा है। दूसरा ब्रह्मा, इन्द्र, बृहस्पति, शुक्राचार्य विष्णु, रुद्र एवं असुरों ने सात महाविद्याओं की उपासना की थी। वे ही सातों महाविद्याएँ ब्रह्मा जी द्वारा इस सप्तशती स्तोत्र के प्रथम चरित्र में उपासित हुई हैं-काली, तारा, छिन्नमस्ता, सुमुखी, भुवनेश्वरी, बाला, तथा कुब्जा।। इसी प्रकार मध्यमचरित्र में सात सतियों की आराधना की गयी है। इनके नाम हैं- लक्ष्मी, ललिता, काली, दुर्गा, गायत्री, अरुन्धती, एवं सरस्वती। इसी तरह उत्तर चरित्र में इन सातों का नाम हैं-ब्राह्मी आदि चामुण्डापर्यन्त सात तथा नन्दा, शताक्षी, शाकम्भरी, भीमा, रक्तदन्तिका, दुर्गा तथा भ्रामरी। इन सात सतियों की उपासना इस स्तोत्र में की गयी है अत एव इसका नाम 'सप्तसती' है। इन तीनों चरित्रों में सात-सात सतियों की जो चर्चा की गयी है। इन इक्कीस सतियों की समष्टि उपर्युक्त नन्दा, शताक्षी, शाकम्भरी, भीमा, रक्तदन्तिका, दुर्गा तथा भ्रामरी रूप सात सतियाँ हैं। यह तथ्य मेरुतन्त्र में प्रकाशित है। इस सप्तशती एवं सप्तसती के पाठ का प्रावधान अनेक तंत्रों के अनुरोध से अनेक प्रकार का है।

सप्तशती पाठक्रमः– मारीचिकल्प के अनुसार रात्रिसूक्त सप्तशतीस्तव फिर देवीसूक्त का पाठ करना चाहिए। वेदागम में कवच कीलक एवम् अर्गला का प्रथमतः पाठ करके सप्तशती का पाठ करना चाहिए। श्रीसप्तशती महामनु का कवचबीज, अर्गला शक्ति एवं कीलक कीलक है। सभी मंत्रों में बीज शक्ति एवम् कीलक का प्रथम उच्चारण किया जाता है। अत एव इस पाठ का निर्देश दिया गया है। चिदम्बर संहिता में अर्गला एवं कीलक का पाठ पहले कहा गया है। इसके अनन्तर कवच फिर सप्तशती तथा रहस्यत्रय के पाठ का निर्देश है। मध्य में इस पाठ को नवार्ण से संपुटित करना चाहिए। डामर तंत्र के अनुसार नवार्ण का संपुट आदि, मध्य एवम् अन्त तीनों जगह होना चाहिए।

इसमें सृष्टि, स्थिति, एंवं संहारक्रम का भी निर्देश है। जिसमें 'सावर्णिः सूर्यतनयः से सावर्णिर्भवितामनुः' तक पाठ सृष्टिक्रम का है। शुम्भवधादि से शक्रादि स्तुति पर्यन्त नव अध्यायों के पाठ के अनन्तर शेष प्रथम एवं द्वितीय चरित का पाठ करना स्थिति क्रम है। एवं 'देव्या वरं लब्ध्वा' श्लोक से आरम्भ करके 'सावर्णिः सूर्यतनयः' तक का पाठ संहारक्रम का है। लक्ष्मी पुत्रादि की कामना से 'सृष्टिमार्ग' से पाठ करना चाहिए। संकटकाल में तथा मुक्ति की कामना से 'संहारक्रम' का पाठ करना चाहिए। सभी कामनाओं के लिए विशेषतः शान्त्यादि की इच्छा से स्थितिक्रम के पाठ का निर्देश है। श्रीसप्तशती के कवच अर्गला, कीलक, रहस्यत्रय एवं नवार्ण अङ्ग है। जिस प्रकार अङ्गहीन देही सभी कर्मों में अक्षम होता है उसी प्रकार अङ्गहीन श्रीसप्तशती का पाठ है। इसको छोड़कर पाठ से हानि एवं शाप की संभावना रहती है। रावणादि इस स्तोत्र को अङ्गहीन पढ़ते थे। श्रीराम ने उसका नाश किया। इसी संदर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि कवच से आहुति का निषेध है। अन्धकासुर कवच से आहुति देता था। भगवान् शिव ने उसका विनाश किया। इसी प्रकार ऋषि, देवता, छन्दादि को छोड़कर भी पाठ नहीं करना चाहिए। कवच, अर्गला एवं कीलक के क्रम में अपनी-अपनी परंपरा के अनुसार क्रम है अतः निज स्थान में इसकी जो परम्परा हो उसी के अनुसार इसका आवर्तन करना चाहिए।

दुर्गापाठ के भेदः– रहस्यत्रय एवं चरितत्रय के संदर्भ में रुद्रयामल में उल्लेख है। मधुकैटभनाश प्रथम चरित है, महिषासुरघात द्वितीय चरित है और शुम्भवध उत्तर चरित है। इस प्रकार प्रथम से दश अध्यायों में तीनों चरित आ जाते हैं। इसके अतिरिक्त तीन अथवा दो अध्याय जिसमें शक्रादि की स्तुति, सप्तशती की फलश्रुति एवं जगदम्बा द्वारा सुरथ तथा समाधि को वरदान का वर्णन है, वह रहस्य है। इसके अलावा प्राधानिक रहस्यादि तीनों की चर्चा जो मिलती है, संभवतः वह दूसरी परम्परा के अनुरोध से है।

तीनों चरित्रों के क्रम परिवर्तन के अनुरोध से दुर्गापाठ के नव भेद हैं– महाविद्या, महातंत्री, चण्डी, सप्तशती, मृतसंजीवनी, महाचण्डी, रूपचण्डी, योगिनी चण्डी एवं पराचण्डी। आदि मध्य एवम् अन्त्य चरित्रों का पाठ महाविद्या कहा जाता है। आदि, अन्त्य एवं मध्य चरित का पाठ 'महातंत्री' कहलाता है। आदि, मध्य एवम् अन्त चरितों के क्रमशः पाठ को चण्डीपाठ कहते हैं। मध्यम, आदि, एवम्, अन्त्य चरितों के आवर्तन को 'सप्तशती' कहते हैं। अन्त्य, आदि एवं मध्य चरितों के आवर्तन को 'मृतसंजीवनी' कहते हैं। अन्त्य , मध्य, एवम् आदि चरितों के पाठ को 'महाचण्डी' कहते हैं। नवार्ण मंत्र सहित रूपं देहि जयं देहि आदि मंत्र से संपुट (प्रतिश्लोक) पाठ को 'रूपचण्डी' कहते हैं। चतुष्षष्टियोगिनी स्तोत्र मंत्र से संपुटित प्रतिश्लोक के पाठ को 'योगिनीचण्डी' कहते हैं। पराबीज 'सौः' से संपुटित पाठ को 'पराचण्डी' कहते हैं। इन नव भेदों का नाम भी पृथक् पृथक् है–जया, विजया, भद्रा, भद्रकाली, सुमुखी, दुर्मुखी, व्याघ्रमुखी, सिंहमुखी, एवं दुर्गा। फेत्कारिणी तंत्र में इनका मंत्र एवं ध्यान दिया गया है।

शापोद्धारः– यह विधि सबसे पहले कही गयी है। इसमें पाठ के आरम्भ में ही ॐ श्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ ॐ ऐँ क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठँ ठँ इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करने का निर्देश है। इसके अतिरिक्त

रुद्रयामल के दुर्गाकल्प में भी दुर्गाशाप विमोचन मंत्र का उल्लेख है। यह इस प्रकार है:—

शापोद्धारं एवम् उत्कीलन:- ॐ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ क्राँ क्रीँ चण्डिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा। पाठ के प्रारम्भ में इसका सात बार जप करना चाहिए। अन्य ॐ श्रीँ क्लीँ ह्रीँ सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का, अथवा ॐ ह्लाँ ह्लीं क्षौं ऐँ क्षमलवरफ्रीँ डमलवरफ्रीँ ॐ क्षँ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्ष: उत्कील उत्कीलय स्वाहा। इस मंत्र का अथवा ॐ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्राँ ॐ ऐँ क्षोभय क्षोभय मोहय मोहय क्षमलवरफ्रीँ स्फ्राँ स्फ्रीँ उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। इस मंत्र का पाठ के आरम्भ में इक्कीस बार जप करना चाहिए। अन्यत्र उत्कीलन की विधि में मध्य आदि एवम् अन्त्य चरितों के पाठ का निर्देश है। कीलक में पठित ददाति प्रतिगृह्णाति आदि मंत्र में दानप्रतिगृह रूप महोत्कीलन का निर्देश है।

जाग्रत्करण:— ॐ रँ सँ मूल (नवार्ण) रँ क्षँ ॐ इस मंत्र के सात बार जप से विद्या जाग्रत होती है। अन्यत्र ॐ ह्रीँ ह्रीँ वँ वँ ऐँ ऐँ मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ वँ स्वाहा इस मंत्र का शापोद्धार तथा उत्कीलन के अनन्तर सात-सात बार जप करना चाहिए। इसके बाद पन्द्रह बार प्रणव (ॐ) का जप फिर मूल का जप फिर शत बार चरित्रत्रय आदि मध्य एवम् अन्त्य में नवार्ण का जप करना चाहिए।

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापविमोचन मंत्रस्य वसिष्ठनारदसंवाद सामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्ति: त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्धियर्थे जपे विनियोग:।

ॐ (ह्रीँ) रीँ रेत: स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ताभव।
ॐ श्रीँ बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ रँ रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ क्षुँ क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ छाँ छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ शँ शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ तृँ तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ क्षाँ क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ जाँ जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ लँ लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ शाँ शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ श्रँ श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ काँ कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ माँ मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ ह्रीँ दुँ दुर्गायै सँ सर्वैश्वर्यकारिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ क्रीँ काल्यै कालि ह्रीँ फट् स्वाहायै

ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्, विमुक्ताभव।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै

त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्त्वा परमेश्वर।

चण्डीपाठं दिवारात्रौ कुर्यादेव न संशयः।। (१९)

एवं मंत्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः।

आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः।। (२०)

नवार्ण मंत्र का अर्थः– अर्ण शब्द वर्ण परक है। सुवर्ण में स्वर्ण के व्यवहार से यह सिद्ध है। नवार्ण मंत्र का उद्धार श्रीदेव्यर्थशीर्ष में किया गया है। "वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्। सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दु-संयुक्तष्टात्तृतीयकः। नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः। विच्चेनवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।" इसमें वाक् ऐँ माया ह्रीँ एवं ब्रह्मसूः क्लीँ है। इस कामबीज से षष्ठ अक्षर च कार है क्योंकि इसमें क कार प्रथम पठित है। यह चकार तद्वक्त्र आ कार से समन्वित होकर 'चा' हुआ। सूर्य मः है, अवाम श्रोत्र-पञ्चमस्वर बिन्दु अनुस्वार है। अतः 'मुँ' का उद्धार हुआ। ट कार से तृतीय वर्ण ड कार है। यह नारायण से संमिश्रित होकर 'डा' हुआ। वायु य कार है। यह अधर अर्थात् अधरोष्ठ वाले द्वादशस्वर 'यै' से युक्त है। 'विच्चे' मनस्वी उपासकों को आनन्ददायी एवं ब्रह्मसायुज्य देने वाला है।

यहाँ चिद्रूपा महासरस्वती वाग्बीज 'ऐँ' से संबोधित हैं। त्रिकालाबाधित, नित्य एवं सद्रूपा महालक्ष्मी को हृल्लेखा से संबोधित किया गया है। परमानन्ददायिनी महाकालीजी को कामबीज क्लीँ से संबोधित किया गया है। चामुण्डा शब्द मोक्षकरणीभूत निर्विकल्पकवृत्ति से विशिष्ट है। इसकी व्युत्पत्ति अन्य प्रकार से भी की गयी है। चमु सेना का पर्याय है। वियदादिसमूह यहाँ सेना

है। इसका नाश करने वाली और अपना साक्षात्कार कराने वाली चामुण्डा है। चमुं सेनां वियदादिसमूहरूपां डाति डलयोरैक्यात् लाति आदत्ते आत्मसाक्षात्कारेण नाशयतीति अथवा 'यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्त्वा त्वमुपागता' मंत्र में चण्ड एवं मुण्ड पद से तूला एवं मूला रूप अविद्याओं का कथन है। इसका चामुण्डा अपहरण करती हैं। 'विच्चे' पद में 'वित् च इ' तीन पद हैं। ये तीनों उपर्युक्त बीजत्रय के अनुसार चित् सद् एवं आनन्द के वाचक हैं वित् पद ज्ञान अर्थ में प्रसिद्ध है। च कार सत् अर्थ का वाचक है। 'विच्चे' पद का इ कार आनन्द अर्थ देने वाला है। इस प्रकार हे महासरस्वती आदिरूपिणी, चिद्रूपिणी चण्डिकाआप का हम ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए सदा ध्यान करते हैं। यह मंत्र का अर्थ है। चामुण्डा पद की व्युत्पत्ति और भी की गयी है। चमु अदने धातु से निष्पन्न चामु शब्द का अर्थ अदनीय है। यह समस्त जगत् ब्रह्म के अतिरिक्त अदनीय है। अतः ब्रह्ममात्र को विषय करने वाली शक्ति 'चामुण्डा' है। यह चराचर जगत् को विषय नहीं करती। चमु अदने इति धातोश्चामुरदनीयः पदार्थः। स च ब्रह्मातिरिक्तः सर्वोऽपि अत्ताचराचरग्रहणादित्यधिकरणे तथा निर्णयात्। तं डापयति उड्डापयति न विषयीकुरुते ब्रह्ममात्रविषयिणीति यावत्। अथवा एकाक्षरी कोश में चकार चन्द्रवाचक है। यह आह्लाद एवं प्रकाश गुण के कारण ज्ञानपरक एवं आनन्दपरक है। इसका भी फलितार्थ 'ब्रह्म' है। चकार एकाक्षर निघण्टुरीत्या चन्द्रवाचक आह्लादप्रकाशगुणयोगादिह ज्ञानपर आनन्दपरो वा सन् ब्रह्मैव वक्ति। तदासमन्तात् मुण्डयति इति चामुण्डा। अथवा चानां बुद्धीनां सुखानां वा मुण्डमिव शीर्षमिव स्थिता, सर्वोत्तमा चरमवृत्तिरूपा ब्रह्मविद्येति यावत्। अथवा चा मुण्डा शब्दः चण्डिकारूपदेवतापरः।

संकल्पः– तत्त्व शुद्धि के लिए आचमन 'ॐ ऐँ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।' ॐ ह्रीँ विद्यातत्त्वं शोधयामिनमः स्वाहा। ॐ क्लीँ शिव तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। इन चार मंत्रों से करके प्राणायाम तदनन्तर संकल्प करना चाहिए। संकल्प सकाम एवं निष्काम भेद से दो प्रकार का है। काम्यकर्मों के लिए सकाम संकल्प किया जाता

है। निष्काम भगवती की प्रसन्नता के लिए निष्काम संकल्प किया जाता है। सकाम संकल्प में 'काम्यकर्म' प्रधान रूप से निर्दिष्ट रहता है। निष्काम संकल्प में 'भगवतीप्रीत्यर्थम्' पद प्रधानतः पढ़ा जाता है। सकाम संकल्प का स्वरूप इस प्रकार होता है—

पवित्र होकर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके और हाथ में लाल फूल, जल अक्षत, द्रव्यादि लेकर—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथा नामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सुशुभे योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टयां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रुति-स्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं ममात्मन सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृसर्वविघ्पीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्तिधर्मार्थ-काममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वती-देवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलक-पाठवेदतंत्रोक्तरात्रिसूक्त-पाठश्रीदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यासविधिसहित-नवार्णजपसप्तशतीन्यास-ध्यान-सहितचरित्रसंबंधि विनियोगन्यासध्यानपूर्वकं च मार्कण्डेय उवाच ''सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः इत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुः'' इत्यन्तं दुर्गासप्तशती पाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमंत्रजप वेदतंत्रोक्तदेवीसूक्तपाठ-रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये।

इस संकल्प को लेकर भगवती की पूजा, पुस्तक पूजा तथा योनि मुद्रा से भगवती को प्रणाम करना चाहिए। नवार्ण से पीठादि आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक रखना चाहिए। इस संकल्प का स्वरूप अन्य तरह से

भी हो सकता है। संकल्प के लिए ज्योतिष का सामान्य ज्ञान आवश्यक है। योगियों का मानस संकल्प अत्यधिक प्रभावशाली रहता है।

अथ प्रयोग विधिः

सप्तशती के एक-एक मंत्र एक-एक प्रयोग हैं। इसके पाठ से सम्पूर्ण कामानओं की सिद्धि कही गयी है। साथ ही यह षट्कर्म (मारण, मोहन, वशीकरण, स्तंभन, उच्चाटन, विद्वेषण) का भण्डार है। ऐसा प्रतीत होता है कि इतने पराक्रमी असुरों से युद्ध करने के लिए इन षट्कर्मों का जगदम्बा ने खूब प्रयोग किया था। वस्तु स्थिति भी यही है कि बिना इनका प्रयोग किए शत्रु पर विजय प्राप्त करना एक दुष्कर कार्य है। किन्तु इन कर्मों के लिए जप एवं पाठ की विशेष प्रक्रियाएँ अपनानी पड़ती है जिनको योग्य गुरुओं से सीख लेना चाहिए। अङ्कुश, विदर्भित, ग्रथित, आदि जप के प्रकार इन्हीं कर्मों में सहयोगी बनते हैं।

कात्यायनीतंत्रोक्त प्रयोगः– ''ॐ'' से सपुंटित करके जप करने से मंत्रसिद्धि प्राप्त होती है। ''ॐ भूर्भुवः स्वः'' से संपुटित करने से अतिशय शीघ्र सिद्धि मिलती है। ''जातवेदसे सुनवाम'' इत्यादि मंत्र से संपुट लगाने से सभी कामनाएँ सिद्ध होती हैं। मृत्युञ्जयमंत्र से संपुटित करके सप्तशती का पाठ करने से अपमृत्यु का नाश होता है। ''शूलेन पाहि नो देवि'' इत्यादि मंत्र से संपुट करने पर भी अपमृत्यु का नाश होता है। इस श्लोक के एक लाख जप मात्र से अपमृत्यु का वारण हो जाता है। ''शरणागतदीनार्त'' श्लोक से संपुटित करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। ''करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी'', इतने अर्ध भाग से संपुटित करने से सर्वकार्यसिद्धि होती है। स्वाभीष्ट वरदान की प्राप्ति के लिए ''एवं देव्या वरं लब्ध्वा'' श्लोक से संपुट करना चाहिए। ''दुर्गे स्मृता'' श्लोक से संपुटीकरण करने पर सभी आपत्तियाँ शान्त होती हैं। इसके कार्यानुसार एक लाख जप करने से भी उक्त प्रयोजन सिद्ध होता है। ''सर्वाबाधाप्रशमनम्'' श्लोक से संपुटित करने पर श्लोकोक्त फल प्राप्त होता है। ''इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति''-मंत्र से संपुट करने पर महामारी शान्त होती है। ''ततो वव्रे नृपो.....'' श्लोक से संपुट करने पर स्वराज्य प्राप्त होता है। ''हिनस्ति

दैत्यतेजांसि'' श्लोक से संपुट करने पर तथा दीप, बलिदान तथा घण्टाबंधन से बालकों के ग्रह की शान्ति होती है। ''कांसोऽस्मि...'' इत्यादि श्रीसूक्त के मंत्र से संपुटित करने पर लक्ष्मी प्राप्ति होती है। ''एवमुक्त्वा समुत्पत्य'' श्लोक से संपुट करने पर मारण होता है। ''ज्ञानिनामपि चेतांसि'' श्लोक से संपुट करने पर सद्यः मोहन होता है। ''रोगानशेषानपहंसि'' श्लोक से संपुट करने पर सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है। इस मंत्र के जप मात्र से भी यह प्रयोजन सिद्ध होता है। ''इत्युक्ता सा तदा देवी'' मंत्र से संपुटित करने पर विद्या प्राप्ति एवं वाणी का विकार नष्ट होता है। ''भगवत्या कृतं सर्वम्'' मंत्र से संपुट करने पर सभी कामनाओं की प्राप्ति तथा सभी आपत्तियाँ नष्ट होती हैं। इन प्रयोगों में प्रतिश्लोक के अनन्तर दीप के अग्रभाग को नमस्कार करने मात्र से अतिशीघ्र सिद्धि मिलती है। प्रतिश्लोक को कामबीज ''क्लीँ''से संपुटित इकतालीस दिन तक करने पर सभी कामनाएँ सिद्ध होती हैं। इक्कीस दिन पर्यन्त प्रतिदिन बारह आवृत्ति करने पर वशीकरण सिद्ध होता है। मायाबीज ''ह्रीँ'' से (फट् पल्लव सहित) संपुटित सात दिन में तेरह आवृत्ति करने पर उच्चाटन सिद्ध होता है। इसी प्रकार चार दिन में ग्यारह आवृत्ति करने पर सभी उपद्रवों का नाश होता है। ऊनचास दिन पर्यन्त ''श्रीँ''बीज से संपुटित करके पन्द्रह आवृत्ति करने पर लक्ष्मी प्राप्ति होती है। प्रतिश्लोक को वाग्बीज ''ऐँ''से संपुटित करके सौ पाठ करने पर विद्या प्राप्ति होती है।

इसके अतिरिक्त कवच अर्गला कीलक तथा तीनों चरित्रों में प्रयोगों का भण्डार भरा पड़ा है। योग्य गुरुओं से इनको सीख कर करना चाहिए। वाराही तंत्र में चण्डीपाठ की संख्या का फल भी बताया गया है। उपसर्गों की शान्ति के लिए तीन पाठ, गृहोपशान्ति के लिए पाँच आवर्तन, महाभय के समुत्पन्न होने पर सात पाठ, नव पाठ से वाजपेय यज्ञ का फल एवं शान्ति, राजवशीकरण एवं ऐश्वर्य के लिए ग्यारह पाठ, कामना की सिद्धि एवं शत्रुनाश के लिए बारह पाठ, शत्रु एवं स्त्री वशीकरण के लिए चौदह पाठ, सौख्य एवं प्रिय प्राप्ति के लिए पन्द्रह पाठ, पुत्र पौत्र धन, धान्य आदि के लिए षोडश पाठ राजभीति नाश, एवं विपक्षोच्चाटन के लिए क्रमशः सत्रह एवं अट्ठारह पाठ महाऋण से छूटने के लिए बीस पाठ,

बन्धन से छूटने के लिए पचीस पाठ, संकट के समय, जातिध्वंस , कुलोच्छेद, आयु के नष्ट होने पर शत्रुओं की वृद्धि के समय धम नाश काल में, त्रिविध उत्पातों के प्रभावी होने पर सौ पाठ करना चाहिए। इसी प्रकार जय के लिए, राज्यवृद्धि के लिए, मनसा चिन्तित कार्यकी सिद्धि के लिए एक सौ पाठ करना चाहिए। इससे सौ अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इसके एक सहस्त्र पाठ से लक्ष्मी साधक का स्वयं वरण करके स्थिर हो जाती हैं। सभी सिद्धियों की प्राप्ति के लिए पच्चास आवर्तन का निर्देश है।

अथ देव्याः कवचम्।

ॐ अस्य श्री देव्या वज्रकवचमालामंत्रोत्तमाङ्गस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,

ॐ ख्फ्रें चामुण्डाख्या महालक्ष्मीर्देवता, ॐ ह्रीं ह्स्रौं ह्स्क्लीं ह्रीं ह्स्रौं अङ्गन्यस्ताः देव्यः शक्तयः,

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं ख्फ्रें सायुधा मातरो देव्या बीजानि।

ॐ ऐं अँ आँ इँ ई उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ऐं ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ हस्सौं कँ खँ गँ घँ ङँ ह्स्सीं ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ ह्स्क्लीं चँ छँ जँ झँ ञँ ह्स्क्लीं ॐ कौमार्यै नमः। ॐ श्रीं टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रीं ॐ वैष्णव्यैनमः। ॐह्स्व्युं तँ थँ दँ धँ नँ ह्स्व्युं ॐ वाराह्यै नमः। ॐ क्ष्म्रौं पँ फँ बँ भँ मँ क्ष्म्रौं ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ लौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लौं ॐ ऐन्द्रयै नमः। ॐ ख्फ्रें ळँ क्षँ ख्फ्रें ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ लँ इन्द्राय नमः। ॐ रँ अग्नये नमः। ॐ टँ यमाय नमः। ॐ क्षँ निर्ऋतये नमः। ॐ वँ वरुणाय नमः। ॐ यँ वायवे नमः। ॐ सँ सोमाय नमः। ॐ हौं ईशानाय नमः। ॐ आँ ब्रह्मणे नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। एवं दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वं सर्वरक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं ख्फ्रें रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा,

रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका,
पतिं नारीवानुरक्ता देवीभक्तं भजेज्जनम्।
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी,
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।

कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी,

भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।

खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्तिसा,

आख्याता रक्त चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च।

अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।।

इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ नमः।

।।मानसोपचार पूजनम्।।

मार्कण्डेय उवाच।

ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।

यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।१

ब्रह्मोवाच

ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतो पकारकम्।

देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।२

ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।

तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।३

ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।

सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।

उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥५

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।

विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणं गताः

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥६

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे।

नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥७

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।

ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥८

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।

ऐन्द्रीगजसमारुढ़ा वैष्णवी गरुडासना

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥९

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

माहेश्वरी वृषारुढा कौमारी शिखिवाहना।

लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥१०

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
श्वेतरूपधरादेवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारुढा सर्वाभरणभूषिता
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।११
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
इत्येताः मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।१२
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
दृश्यन्ते रथमारुढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।१३
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।१४
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
दैत्यानां देहनाशायभक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।१५
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।१६
ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्येशत्रूणां भयवर्धिनी।

प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामाग्निदेवता

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।१७

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।

प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।१८

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।

ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।१९

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।

जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।२०

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।

शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।२१

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।

त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।२२

ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।

कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।२३

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।

अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२४

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशेतु चण्डिका।

घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२५

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।

ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२६

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

नीलग्रीवा बहिः कण्ठेनलिकां नलकूबरी।

स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२७

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।

नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२८

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।

हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी

ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।२९

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

नाभौ च कामिनीरक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवासिनी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३०
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेद् सर्वकामप्रदायिनी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३१
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३२
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
नरवान् दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३३
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तंच मुकुटेश्वरी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३४
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्ज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ।।३५
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।

अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।३६
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।३७
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
रसे रूपेच गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।३८
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।३९
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।४०
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्सीं ऐं ॐ।।४१
ॐ ऐं ह्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी

खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४२
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४३
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४४
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृत्तः पुमान्
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४५
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४६
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
दैवीकलाभवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४७
ॐ ऐं ह्स्सीं ह्स्क्लीं श्रीं ह्स्व्युं क्ष्म्रौं लौं खफ्रें
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्
खफ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सीं ऐं ॐ॥४८

ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
अभिचाराणि सर्वाणि मंत्रयंत्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।४९
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
सहजा कुलजामाला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।५०
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।५१
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परं
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।५२
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वातु कवचं पुरा
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।५३
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ
यावद्भूमण्डलंधत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी
ख्फ्रेँ लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युँ श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सी ँ ऐँ ॐ।।५४
ॐ ऐँ ह्सी ँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युँ क्ष्म्रौँ लौँ ख्फ्रेँ

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः

खफ्रें लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युं श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।५५

ॐ ऐँ ह्सीँ ह्स्क्लीँ श्रीँ ह्स्व्युं क्ष्म्रौँ लौँ खफ्रें

लभते परमं रूपं शिवेन सहमोदते

खफ्रें लौँ क्ष्म्रौँ ह्स्व्युं श्रीँ ह्स्क्लीँ ह्सीँ ऐँ ॐ।।५६

इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।।

अथार्गलास्तोत्रम्।।

ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमंत्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता, नवार्णशक्तिः, मन्त्रोदिता देव्यो बीजानि, सप्तशती मंत्रस्तत्त्वमिष्टार्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना,
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषितनूदरी,
सुकर्कशसमोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनी।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णा कमलं कमलालया,
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृणमृत्युभयापहम्,
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता,
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायन् जपन् संपूजमन्नमन्
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतादिकम्,
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे त्रैलोक्यं वशं कुरु कुरु।
ॐ नमश्चण्डिकायै।

मार्कण्डेय उवाच।

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

जयत्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।३

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।४

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।५

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।६

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।७

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनी।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।८
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।९
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१०
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीहभक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।११
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१२
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१३
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१४
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१५
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तंजनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१६
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१७
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१८
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।१९
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२०
ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
म:न विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२१

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२२

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२३

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

पत्नीं मनरोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२४

ॐ समलवरफ्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः

इदं स्तोत्रं पठित्त्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्या वरमाप्नोति सम्पदाम्
मःन विच्चे चामुण्डायै समलवरफ्रीं ॐ।।२५

इति देव्या अर्गलास्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

अथ कीलकम्

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ अस्य श्रीकीलकाख्यस्तोत्रमंत्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः महासरस्वती देवता, नर्वाण मंत्रः शक्तिः, मन्त्रोदिता देव्यो बीजम्, सप्तशतीमंत्रस्तत्त्वमुत्कीलनार्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना,
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषितनूदरी,
सुकर्कशसमोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनी।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णा कमलं कमलालया,
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्,
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षीसा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता,
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायन् जपन्
संपूजयन्नमन् अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।१
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वमेतद्विजानीयान्मत्राणामभिकीलकम्।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्पर:
म:न विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।२
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनिवस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुतवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति
म:न विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
न मंत्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्
म:न विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।४
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशंकामिमां हर:।
कृत्वा निमंत्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्
म:न विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।५
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार स:।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियंत्रणाम्
म:न विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।६
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशय:।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहित:
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।७
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ।।८

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥९
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥१०
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥११
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥१२
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥१३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्री ऐँ ॐ॥१४

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः रात्रिर्देवता, गायत्री छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः। विश्वा अधि श्रियोऽधित मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः। ज्योतिषा बाधते तमः मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः निरुस्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती। अपेदु हासते तमः मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।३

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि। वृक्षे न वसतिं वयः मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।४

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः। नि श्येनासश्चिदर्थिनः मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।५

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः यावया वृक्यं वृकं यवयस्तेनमूर्म्ये। अथा नः सुतरा भव मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।६

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः उपमा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित। उषऋणेव यातय मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।७

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः। रात्रिस्तोमं न जिग्युषे मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

इति वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्।।

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

विश्वेश्वरी जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१

ब्रह्मोवाच।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥२

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥३

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

त्वयैद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत्।

त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥४

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।

तथा सहतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥५

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।

महामोहा च भवती महादेवी महासुरी

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥६
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥७
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥८
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥९
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१०
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥११
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१२
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१४
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१५

इति रात्रिसूक्तम्।

अथ श्रीदेव्यर्थशीर्षम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वे वै देवाः देवीमुपतस्थुः कासित्वं महादेवीति
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
साऽब्रवीत् अहं ब्रह्मस्वरूपिणी।
मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने।
अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि।
अहमखिलं जगत् म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्।
अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।४
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुतविश्वेदेवै:।
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।५
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि।
अहं विष्णुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।६
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वन्त: समुद्रे। य एवं वेद स दैवीं सम्पदमाप्नोति

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।७
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
ते देवा अब्रुवन् नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम:।
नम: प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणता: स्म ताम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।८
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नम:
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।९
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपा: पशवो वदन्ति।

सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१०

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।

सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमाम: पावनां शिवाम्

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।११

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

महालक्ष्म्यैच विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।

तन्नो देवी प्रचोदयात् म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१२

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।

तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धव:

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१३

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

कामो योनि: कमला वज्रपाणिर्गुहा हसामातरिश्वाभ्रमिन्द्र:।

पुनर्गुहा सकला माययाच पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१४

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

एषाऽत्मशक्ति। एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा।

एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१५

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वत:

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१६

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

सैषाष्टौवसव:। सैषैकादश रुद्रा:। सैषा द्वादशादित्या:।

सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरारक्षांसिपिशाचा यक्षाः सिद्धा। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् मःन विच्चे चामुण्डाये क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१७

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१८
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१९
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात्षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२०
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२१
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२२

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता।
यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा;
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका।
अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
मंत्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२४
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२५
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्त्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२६

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

नवार्ण एवं न्यासविधि

ऐँ बीज इन्दु के समान कान्तिवाला है। ह्रीँ बीज सूर्यतेज के समान अद्वितीय है। क्लीँ बीज अग्नि के तुल्य है। 'चा' शुद्ध जाम्बूनद की आभा से संपन्न है। 'मु' रक्त वर्ण वाला है। 'डा' उग्र कष्ट को हरने वाला सुनील के वर्ण का है। 'यै' कृष्णवर्ण का रिपुओं का नाश करने वाला है। 'वि' पाण्डुरवर्ण का है। 'च्चे' धूम्रवर्ण का है। नवबीजों से विभूषित इस मंत्र के जप से सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं। राजाओं के अनुचर जिस प्रकार वश में होते हैं उस प्रकार कामिनियाँ साधक के वश में होती हैं। हस्ति, सर्प, अग्नि, चोर, एवं शत्रु का भय समाप्त हो जाता है। सभी संपत्तियाँ प्राप्त होती हैं। दारुण रोग नष्ट हो जाते हैं। नाभिपर्यन्त जल में इसके जप से कवित्व प्राप्त होता है। अयुत जप से राजबन्धनादि संकट दूर होते हैं। इस नवाक्षर मंत्र में महालक्ष्मी व्यवस्थित हैं। इसमें सिद्धादि का विचार नहीं किया जाता।

'ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः' इस नवार्ण मंत्र के ऋषि ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर हैं। गायत्री, उष्णिक् एवं अनुष्टुप् छन्द है। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी तथा महासरस्वती देवता है। नंदजा शाकम्भरी भीमा शक्तियाँ हैं। रक्तदन्तिका दुर्गा तथा भ्रामरी बीज हैं। ह्रीँ कीलक है। अग्नि वायु एवं सूर्य तत्त्व हैं। अभीष्ट सभी कार्यों में इसका विनियोग होता है।

नवार्ण मंत्र के न्यास की विधिः– ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्यब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दासि। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः। नन्दजाशाकंभरीभीमा शक्तयः। रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि। ह्री ँ कीलकम्। अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि। कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः– ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्छन्दोभ्यो नमो मुखे। महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्यो

नमो हृदि। नन्दजाशाकंम्भरीभीमाशक्तिभ्यो नमः दक्षिणस्तने। रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमः वामस्तने। ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ। अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अथैकादश-न्यासः–मातृका न्यासः– इस न्यास से देवता का सारूप्य लाभ होता है। यथा–

ॐ ऐँ अँ आँ कँ खँ गँ घँ ङँ इँ ईँ हृदयाय नमः। ॐ उँ ऊँ चँ छँ जँ झँ ञँ ऋँ ॠँ शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीँ लृँ टँ ठँ डँ ढँ णँ लॄ शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डा एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुँ। ॐ यै ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय बौषठ्। ॐ विच्चे अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

सारस्वत न्यासः– इससे अज्ञान नष्ट होता है । यथा—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः कनिष्ठयोः। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः अनामिकयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः मध्यमयोः। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः तर्जन्योः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः अङ्गुष्ठयोः। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः करतलकरपृष्ठयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः पृष्ठे। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः मणिबन्धे। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः कूर्परे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः हृदये। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः शिरसि। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः शिखायाम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः कवचे। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः नेत्रत्रये। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः अस्त्रे।

मातृगणन्यासः– इस न्यास से त्रैलोक्य विजय प्राप्त होता है।

ॐ ह्रीँ ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु। ॐ ह्रीँ माहेश्वरी आग्नेये मां पातु।

ॐ ह्रीँ कौमारी दक्षिणे मां पातु। ॐ ह्रीँ वैष्णवी नैर्ऋत्ये मां पातु। ॐ ह्रीँ वाराही पश्चिमे मां पातु। ॐ ह्रीँ इन्द्राणी वायव्ये मां पातु। ॐ ह्रीँ चामुण्डा उत्तरे मां पातु। ॐ ह्रीँ महालक्ष्मीः ऐशान्ये मां पातु। ॐ ह्रीँ

व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु। ॐ ह्रीँ सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु। ॐ ह्रीँ कामेश्वरी पाताले मां पातु।

नंदजादिन्यासः– इस न्यास के जरामृत्यु का नाश होता है। यथा—

ॐ नंदजायै कमलांकुशमंडितायै नमः पूर्वांगे मां पातु। ॐ रक्तदन्तिकायै खड्गपात्रहस्तायै नमः दक्षिणांगे मां पातु। ॐ शाकम्भर्यै पुष्पपल्लवसंयुतायै नमः पृष्ठे मां पातु। ॐ दुर्गायै धनुर्बाणहस्तायै नमः वामांगे मां पातु। ॐ भीमायै शिरःपात्रकारायै नमः मस्तकादिचरणान्तं मां पातु। ॐ भ्रामर्य्यै चित्रकान्त्यै नमः पादादिमस्तकान्तं मां पातु।

ब्रह्माख्यन्यासः– इससे कामनाओं की प्राप्ति होती है। यथा—

ॐ ब्रह्मणे नमः पादादिनाभिपर्यन्तं सदा मां पातु। ॐ जनार्द्दनाय नमः नाभेः विशुद्धिपर्यन्तं मां पातुनित्यम्। ॐ रुद्राय त्रिलोचनाय नमः विशुद्धेर्ब्रह्मरंध्रातं सदा मां पातु। ॐ हंसाय नमः पादयोः मां पातु। ॐ गरुडाय नमः करयोः मां पातु। ॐ वृषभाय नमः नेत्रयोः मां पातु। ॐ गजाननाय नमः सर्वांगे मां पातु। ॐ आनन्दमयपरमात्मने नमः परापरदेहभागे मां पातु।

६. महालक्ष्म्यादिन्यासः– इससे सद्गति प्राप्त होती है। यथा—

ॐ महालक्ष्म्यै अष्टादशभुजायै नमः मध्ये मां पातु। ॐ सरस्वत्यै अष्टादशभुजायै नमः ऊर्ध्वं मां पातु।

ॐ महाकाल्यै दशभुजायै नमः अधः मां पातु। ॐ सिंहाय नमः हस्तयोः मां पातु। ॐ हंसाय नमः नेत्रयोः मां पातु। ॐ यमाय महिषवाहनाय नमः पादयोः मां पातु। ॐ महेशचण्डिकाभ्यां नमः सर्वाङ्गे मां पातु। ॐ महेशचण्डिकाभ्यां नमः पृष्ठे मां पातु।

७. मंत्रवर्णन्यासः– इस न्यास से अतिशीघ्र रोग दूर होते हैं। यथा—

ॐ ऐँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे। ॐ चाँ नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुँ नमः वामकर्णे। ॐ डाँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ यैँ नमः वामनासापुटे। ॐ विं नमः मुखे। ॐ च्चैँ नमः पायौ।

विलोमक्रमवर्णन्यास- ऊँ च्चें नमः मूलाधारे। ॐ विं नमः मुखे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे। ऊँ डाँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ मुँ नमः वामकर्णे। ॐ चाँ नमः दक्षिणकर्णे। ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे। ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणेनेत्रे। ॐ ऐँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। इस न्यास से समस्त दुःख दूर होते हैं।

८. देवीन्यासः– इससे सभी दुःखों का विनाश होता है। यथा–

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः पादादि ब्रह्मरन्ध्रांतम्। इस का आठ बार व्यापक न्यास करना चाहिए।

मंत्रव्यापक न्यासः– इससे देवता की प्राप्ति होती है। यथा—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकादिपादान्तम्। (आठ बार),

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः पादादिमस्तकांतम्। (आठ बार),

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः पूर्वे। (आठ बार),

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः दक्षभागे। (आठ बार),

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः पृष्ठे। (आठ बार),

षडङ्गन्यासः— इससे त्रैलोक्य वशीकरण होता है यथा–

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शिरसे स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शिखायै वषट्। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुँ। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

एकादशन्यासः–

ॐ ऐँ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा।। १
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।२
यच्च किञ्चत्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।३

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्त्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशंनीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।४
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते अतोऽतस्त्वां कस्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।५

इसका सर्वाङ्ग में न्यास करना चाहिए।

ॐ ह्रीँ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।१
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष रक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।३
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लव संगीनि तैरस्मान् सर्वतः।।४

इसका सर्वत्र न्यास करना चाहिए।

ॐ क्लीँ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो र्देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।१
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२
ज्वालाकरालमृत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।३
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।४
असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।५

इसका स्तन में न्यास करना चाहिए।

इन एकादश न्यासों को करके षडङ्ग न्यास करना चाहिए। यथा-

ॐ ऐँ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीँ शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुँ। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐँ ह्री क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

फिर मंत्र न्यास करना चाहिए। यथा–

ॐ ऐँ नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे। ॐ चाँ नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुँ नमः वामकर्णे। ॐ डाँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ यैँ नमः वामनासापुटे। ॐ विं नमः वक्त्रे। ॐ च्चेँ नमः गुदे।

इसके अनन्तर ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः पादादिमूर्द्धान्तम्। मंत्र से आठ बार व्यापक न्यास करना चाहिए अर्थात् शिर से पैरों तक दोनों हथेलियों से स्पर्श करना चाहिए। इस प्रकार न्यास करके ध्यान एवं मानसोपचार पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः–
खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
शिरः नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवेमहाकालिकाम्;
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिहमहालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।
घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुस्सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्रसरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

लमित्यादिपञ्चोपचारपूजनम्

इसके अनन्तर पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में पीठ पूजा करके मंडूकदिपीठ देवताओं को पद्धति मार्ग से स्थापित करके नवपीठशक्तियों का पूजन करना चाहिए। नवपीठशक्तियों का मंत्र है—**ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्द्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मंगलायै नमः।** इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित मंत्र को ताम्रपात्र में रखकर घृत से लेप करके उसके ऊपर दूध एवं जल की धारा डालकर और उसे पोछकर उसके ऊपर त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, चतुर्विंशतिदल, इसके ऊपर चतुष्षष्टिदल को अष्टगंध से लिखकर इसके ऊपर चार द्वारों वाले भूपुर को लिखकर "ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्" इस मंत्र से पुष्पाद्यासन प्रदान करके दलों की देवियों को स्थापित करके एवं प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करना चाहिए। तदनन्तर पद्धति मार्ग से पुष्पांत उपचारों से पूजन करके पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते" इस मंत्र से प्रार्थना करके देवी की आज्ञा से आवरण पूजन करना चाहिए। यथा—

त्रिकोणे पूर्वकोणे ॐ ब्रह्मसरस्वतीभ्यां नमः। ब्रह्मसरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र। नैर्ऋत्यकोणे ॐ विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः। विष्णुलक्ष्मीश्रीपा० वायुकोणे ॐ पार्वतीशंकराभ्यां नमः। पार्वतीशंकरश्रीपा०।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावणार्चनम्।" यह कहकर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह प्रति आवरण पूजन के अन्त में कहना चाहिए।

ततो देव्युत्तरे ॐ सिंहाय नमः। देवीदक्षिणतः ॐ महिषाय नमः।

इति पूजयित्त्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।

इसके अनन्तर पूर्व दिशा की ओर से वामावर्त से षट्कोण में- **ॐ नन्दजायै नमः। नन्दजाश्रीपा०।**

ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गाश्रीपा०। ॐ भीमायै नमः। भीमाश्रीपा०। ॐ भ्रामर्य्यै नमः। भ्रामरीश्रीपा०।

इति पूजयित्त्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इति तृतीयावरणम्।

ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्मै नमः। ब्राह्मीश्रीपा०। ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा०। ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीश्रीपा०। ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीश्रीपा०। ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा०। ॐ नारसिंहयै नमः। नारसिंहीश्रीपा०। ॐ ऐन्द्रयै नमः। ऐन्द्रीश्रीपा०। ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डाश्रीपा०। इति सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इति चतुर्थावरणम्।

ततः चतुर्विंशतिपत्रेषु प्राचीक्रमेण ॐ विष्णुमायायै नमः। विष्णुमायाश्रीपा०। ॐ चेतनायै नमः। चेतनाश्रीपा०। ॐ बुद्धयै नमः। बुद्धिश्रीपा०। ॐ निद्रायै नमः। निद्राश्रीपा०। ॐ क्षुधायै नमः। क्षुधाश्रीपा०। ॐ छायायै नमः। छायाश्रीपा०। ॐ शक्त्यै नमः। शक्तिश्रीपा०। ॐ परायै नमः। पराश्रीपा०। ॐ तृष्णायै नमः। तृष्णाश्रीपा०। ॐ क्षान्त्यै नमः। क्षान्तिश्रीपा०। ॐ जात्यै नमः। जातिश्रीपा०। ॐ लज्जायै नमः। लज्जाश्रीपा०। ॐ शान्त्यै नमः। शांतिश्रीपा०। ॐ श्रद्धायै नमः। श्रद्धाश्रीपा०। ॐ कीर्त्यै नमः। कीर्तिश्रीपा०। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीश्रीपा०। ॐ धृत्यै नमः। धृतिश्रीपा०। ॐ वृत्यै नमः। वृत्तिश्रीपा०। ॐ श्रुत्यै नमः। श्रुतिश्रीपा०। ॐ स्मृत्यै नमः। स्मृतिश्रीपा०। ॐ दयायै नमः। दयाश्रीपा०। ॐ तुष्ट्यै नमः। तुष्टिश्रीपा०। ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टिश्रीपा०। ॐ भ्रान्त्यै नमः। भ्रान्तिश्रीपा०। इति पूजयित्त्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इति पंचमावरणम्॥

ततः चतुषष्टिदले प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च– ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ जयन्त्यै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ दिव्ययोग्यै नमः। ॐ महायोग्यै नमः। ॐ सिद्धयोग्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ प्रेताश्यै नमः। ॐ डाकिन्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालरात्र्यै नमः। ॐ टंकाक्ष्यै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ वेताल्यै नमः। ॐ हुङ्कार्यै नमः। ॐ ऊर्ध्वकेशिन्यै नमः। ॐ विरूपाक्ष्यै नमः। ॐ शुष्काङ्ग्यै नमः। ॐ नरभोजिकायै नमः। ॐ फट्कार्यै नमः। ॐ वीरभद्रायै नमः। ॐ धूमाङ्ग्यै नमः। ॐ कलहप्रियायै नमः। ॐ राक्षस्यै नमः। ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः। ॐ विश्वरूपायै नमः। ॐ भयङ्कर्यै नमः। ॐ चण्डमार्यै नमः। ॐ चण्ड्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ मुण्डधारिण्यै नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ ऊर्ध्वाक्ष्यै नमः। ॐ

दुर्मुख्यै नमः। ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः। ॐ खट्वाङ्ग्यै नमः। ॐ लम्बोष्ठ्यै नमः। ॐ मालिन्यै नमः। ॐ मत्तयोगिन्यैनमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कङ्काल्यै नमः। ॐ भुवनेश्वर्यै नमः। ॐ त्रोटिक्यै नमः। ॐ महामार्यै नमः। ॐ यमदूत्यै नमः। ॐ करालिन्यै नमः। ॐ केशिन्यै नमः। ॐ दमन्यै नमः। ॐ रोमगंगाप्रवाहिन्यै नमः। ॐ बिडाल्यै नमः। ॐ कामुकालाक्ष्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ अधोमुख्यै नमः। ॐ मुण्डाग्रधारिण्यै नमः। ॐ व्याघ्र्यै नमः। ॐ कांक्षिण्यै नमः। ॐ प्रेतभक्षिण्यै नमः। ॐ धूर्जट्यै नमः। ॐ विकट्यै नमः। ॐ घोर्यै नमः। ॐ कपाल्यै नमः। ॐ विषलम्बिन्यै नमः। इति चतुष्षष्टियोगिनीः संपूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्।

इसके बाद भूपुर के अन्दर ही आग्नेयादि चारों दिशाओं में ॐ गं गणेशाय नमः। गणेशश्रा पा०। ॐ क्षँ क्षेत्रापालय नमः। क्षेत्रपालश्रीपा०। ॐ बँ बटुकाय नमः। बटुकश्रीपा०। ॐ यौं योगिन्यै नमः। योगिनीश्रीपा०। इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरणम्।

इसके अनन्तर भूपुर में पूर्वादिक्रम से ॐ लँ इन्द्राय नमः। ॐ रँ अग्नये नमः। ॐ मँ यमाय नमः। ॐ क्षँ निर्ऋतये नमः। ॐ वँ वरुणाय नमः। ॐ यँ वायवे नमः। ॐ कुँ कुबेराय नमः। ॐ हँ ईशानाय नमः। ईशानपूवयोर्मध्ये ॐ आँ ब्रह्मणे नमः। निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ ह्रीँ अनन्ताय नमः। इति दशदिक्पालान् पूजयित्त्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इसके अनन्तर इन्द्रादि के समीप इनके वज्राद्यायुधो की पूजा करनी चाहिए। यथा ॐ वँ वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दँ दण्डाय नमः। ॐ खँ खड्गाय नमः। ॐ पाँ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गँ गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पँ पद्माय नमः। ॐ चँ चक्राय नमः। इति वज्राद्यायुधानि सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इस प्रकार आवरण पूजन करके प्रधान देवता का पूजन एवं नमस्कार करके मंत्रार्थ का स्मरण करते हुए जप करना चाहिए। इस नवार्ण का पुरश्चरण चार लाख हैं। पायसान्न से दशांश होम एवम् उसका दशांश तर्पण, मर्जन तथा ब्रह्मण भोजन का विधान है। हवनादि की अनुपस्थिति में उतनी संख्या में जप करना चाहिए। इस प्रकार मंत्र सिद्ध होने पर प्रयोगों को करना चाहिए। जप के अन्त में

देवीजी के बाँयें हाथ में जप समर्पण क्षमा प्रार्थना एवं विसर्जनादि विधियों का पालन करना चाहिए। इस विधि में बहुत सी बातें छूट गयी हैं। उन सबको योग्य गुरु से सीखना चाहिए।

सप्तशती न्यासः– अथ करषडङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा। अंगुष्ठाभ्या नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वेनन नः पाहि चापज्यानिः स्वेनन च। तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राच्या रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरिमध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्। अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः। कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्र्याहि
नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः–

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा। हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वेनन नः पाहि चापज्यानिःस्वेनन च। शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्या रक्ष प्रतीच्यां न चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि। शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्। कवचाय हुँ।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।

करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वत:। नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।

भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते। अस्त्राय फट्।

इन न्यासों में निर्दिष्ट अंगों का स्पर्श करना चाहिए गुरुओं से इसको सीखना चाहिए

अथ ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां

कन्याभि: करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।

हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं

बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

लमित्यादिपञ्चोपचारपूजनम्।।

दूसरे मत में भी इसका न्यास उपलब्ध है। यथा–

ॐ महाविद्यायै अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। हृदयाय नम:।

ॐॐ महातंत्रायै तर्जनीभ्यां नम:। शिरसे स्वाहा।

ॐ चण्डीसप्तशत्यै मध्यमाभ्यां नम:। शिखायै वषट्।

ॐ मृतसंजीविन्यै अनामिकाभ्यां नम:। कवचाय हुँ।

ॐ महाचण्ड्यै कनिष्ठिकाभ्यां नम:। नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ चतुषष्टिपद्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। अस्त्राय फट्।

डारमतंत्रोक्तन्याय:– ॐ अस्य श्रीसप्तशतिकास्तोत्रमालामंत्रस्य मार्कण्डेयसुमेधाब्रह्मेन्द्रवासुदेवरुद्राद्य: ऋषय:। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। मधुकैटभमर्दिनीमहिषासुरसेनानीमहिषासुरमर्दिनीधूम्रलोचनचण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भम र्दिन्यो देवता:। मधुकैटभमर्दिनीमहिषासुरमर्दिनी-शुम्भनिशुम्भमर्दिन्य: प्रधानदेवता:। ब्राह्मीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीवाराहीन्द्राणीचामुण्डा गर्भदेवता:।

नन्दारक्तदन्तिकाशाकंभरी-दुर्गाभीमाभ्रामर्यश्चाङ्ग देवताः। त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका। देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निःशेषदेवगण समूह मूर्त्या। आधारभूता जगस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि इति बीजम्। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा। या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। विद्याः समस्तास्तव देविभेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु इति शक्तिः। परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी। मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। लक्ष्मि लज्जे महाविधे श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे। इति कीलकम्। श्री देवीमाहात्म्योक्तसंपूर्णफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यासः- ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ह्रां नन्दायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः।

ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ह्रीँ रक्तदन्तिकायै नमः तर्जनीभ्यां नमः। शिरसे स्वाहा।

ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके हूँ शाकम्भर्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः। शिखायै वषट्।

ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके हैँ दुगार्यै नमः। अनामिकाभ्यां नमः। कवचाय हुम्।

ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ह्रौं भीमायै नमः। कनिष्ठिकाभ्यां नमः। नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ शम्भुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके हः भ्रामर्यै नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः।

अथाङ्गन्यासः- ॐ वाराह्यै नमः पादयोः:। ॐ नारसिंह्यै नमः नितम्बे। ॐ ब्राह्मयै नमः पृष्ठे। ॐ वैष्णव्यै नमः दक्षभुजे। ॐ माहेश्वर्यै नमः वामभुजे। ॐ कौमार्यै नमः स्कन्धयोः। ॐ कात्यायन्यै नमः मुखे। ॐ शिवदूत्यै नमः शिरसि। ॐ शिवायै नमः हृदये। ॐ काल्यै नमः वामकुक्षौ। ॐ रक्तदन्तिकायै नमः दक्षकुक्षौ। ॐ शताक्ष्यै नमः पृष्ठवंशे। ॐ शाकम्भर्यै नमः भ्रुवोः।

अथान्याङ्गन्यासः-

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा। नमः शिरसि।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वेनन नः पाहि चापज्यानिः स्वेनन च। नमः मुखे।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि। नमः कण्ठे।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्। नमः भुजयोः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः। नमः हृदि।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते। नमः उदरे।
ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते। नमः नाभौ।
ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासु रसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते। नमः ऊर्वोः।
ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव। नमः जान्वोः।
ॐ असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्। नमः पादयोः।

अथ ध्यानम्

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः-
सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभाम्
शंखं चक्रवराभयानि दधीतमिन्दोः कलां बिभ्रतीम्।

ग्रैवेयाङ्गदहारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैस्स्तुताम्।
ध्यायेद्विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं पार्श्वस्थपञ्चाननाम्॥
या देवी मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डशमनी या रक्तबीजाशनी।
या शुम्भादिनिशुम्भदैत्यशमनी या सिद्धलक्ष्मीः परा
सा चण्डी नवकोटिशक्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीं ह्रीँ ऐँ ॐ॥

मानसोपचारपूजन

अथ कुल्लुकादिन्यासः– इस न्यास से उपासना की शक्ति विश्रृंखलित नहीं होती। यह अनिवार्यतः कर्त्तव्य है। यथा–

ॐ ह्रीँ हूँ कुल्लुकायै नमः शिरसि। ॐ सेतवे नमः हृदि। ॐ स्त्रीँ महासेतवे नमः कण्ठे। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे एँ अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः। कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ निवार्णाय नमः मणिपूरे। ॐ ऐँ महाकुण्डलिन्यै नमः मूलाधारे। ॐ क्लीँ कामराजाय नमः लिङ्गे। ॐ राँ रीँ रमलवरयूँ राकिन्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ द्विजिह्वायै नमः हृदि।

अथनवार्णन्यासक्रमः– आचमन एवं प्राणायाम करके ॐ अस्य श्री नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः। नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि। अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि। सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः– ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।

गायत्र्युष्णिगनुष्टुब् छन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदये। नन्दाशाकम्भरी भीमाशक्तिभ्यो नमः कण्ठे। रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरी बीजेभ्यो नमः स्तनयोः। अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः फलके। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे इत्यनेन करौ संशोध्य ततोऽङ्गुलिन्यासः- यथा

अङ्गुलिन्यासः–

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठभ्यां नमः।

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः–

ॐ ऐँ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीँ शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः–

ॐ ऐँ नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीँ नमः दक्षनेत्रे। ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे। ॐ चाँ नमः दक्षिणे कर्णे। ॐ मुँ नमः वामकर्णे। ॐ डाँ नमः दक्षिण नासायाम्। ॐ यैँ नमः वामनासायाम्। ॐ विँ नमः मुखे। ॐ च्चे नमः गुह्ये। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः शिखादिपादपर्यन्तम्। (आठ बार)

दिङ्न्यासः– ॐ ऐँ नमः प्राच्यै। ॐ ऐँ नमः आग्नेय्यै। ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणायै। ॐ ह्रीँ नमः नैर्ऋत्यै। ॐ क्लीँ नमः पश्चिमायै। ॐ क्लीँ नमः वायव्यै। ॐ चामुण्डायै नमः उदीच्यै। ॐ विच्चे नमः ईशान्यै। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः ऊर्ध्वायै। ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः अधरायै।

अथ ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-
खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपादशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमल जो हंतुं मधुं कैटभम्।।
अक्षस्त्रक् परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।

शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभिमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।
घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुस्सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरी देहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीं ह्रीँ ऐँ ॐ।।

मानसोपचारपूजनम्।

अथ श्रीदुर्गासप्तशती

अथ प्रथमोऽध्यायः।

श्री गणेशाय नमः।

मेधा ऋषि का राजा सुरथ और समाधि को भगवती की महिमा सुनाना और मधुकैटभ के वध का प्रसंग सुनाना,

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-१०८।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। (१०८)

विनियोगः,

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। महाकाली देवता। गायत्री छन्दः। नन्दा शक्तिः रक्तदन्तिका बीजम्। अग्निस्तत्त्वम्। ऋग्वेदः स्वरूपम्। श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे धर्मार्थे च प्रथमचरित्रजपे विनियोगः।

'ध्यानम्'

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
खड्गं चक्रगदेषु चापरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्,
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

मानसोपचार पूजन।।

ॐ नमश्चण्डिकायै

ॐ ऐँ श्रीँ नमः मार्कण्डेय उवाच मःन श्रीँ ऐँ ॐ।।१

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।

निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥ २

ॐ ऐँ क्लीँ नमः महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।

स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः मनः क्लीँ ऐँ ॐ ॥ ३

ॐ ऐँ श्रीँ नमः स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।

सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले म:न श्रीँ ऐँ ॐ ॥ ४

ॐ ऐँ प्रीँ नमः तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।

बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा म:न प्रीँ ऐँ ॐ ॥ ५

ॐ ऐँ ह्राँ नमः तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।

न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः म:न ह्राँ ऐँ ॐ॥ ६

ॐ ऐँ ह्रीं नमः ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।

आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः म:न ह्रीं ऐँ ॐ॥ ७

ॐ ऐँ स्रोँ नमः अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।

कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः म:न स्रोँ ऐँ ॐ॥ ८

ॐ ऐँ प्रेँ नमः ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।

एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् म:न प्रेँ ऐँ ॐ॥ ९

ॐ ऐँ म्रीँ नमः स तत्राश्रममद्राक्षीद्द्विजवर्यस्य मेधसः।

प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् म:न म्रीँ ऐँ ॐ॥ १०

ॐ ऐँ ह्लीँ नमः तस्थौ कञ्चित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।

इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे म:न ह्लीँ ऐँ ॐ॥ ११

ॐ ऐँ म्लीँ नमः सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टमानसः।

मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् म:न म्लीँ ऐँ ॐ॥

ॐ ऐँ स्त्रीँ नमः मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।

न जाने सप्रधानो मे शूरो हस्ती सदा मदः म:न स्त्रीँ ऐँ ॐ॥ १३

ॐ ऐँ क्राँ नमः मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते

ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः म:न क्राँ ऐँ ॐ॥ १४

ॐ ऐँ ह्स्लीँ नमः अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ।

असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् म:न ह्स्लीँ ऐँ ॐ॥१५
ॐ ऐँ क्रीँ नमः सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः म:न क्रीँ ऐँ ॐ॥१६
ॐ ऐँ चाँ नमः तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः म:न चाँ ऐँ ॐ॥१७
ॐ ऐँ भैं नमः सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् म:न भैं ऐँ ॐ॥१८
ॐ ऐँ क्रीँ नमः प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्
म:न क्रीँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ वैं नमः वैश्य उवाच म:न वैं ऐँ ॐ॥२०
ॐ ऐँ ह्रौं नमः समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले
म:न ह्रौं ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ युं नमः पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनः स्वजनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् म:न युं ऐँ ॐ॥२२
ॐ ऐँ जुं नमः वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् म:न जुं ऐँ ॐ॥२३
ॐ ऐँ हँ नमः प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् म:न हँ ऐँ ॐ॥२४
ॐ ऐँ शँ नमः कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः
म:न शँ ऐँ ॐ॥२५॥
ॐ ऐँ रोँ नमः राजोवाच म:न रोँ ऐँ ॐ॥२६॥
ॐ ऐँ यँ नमः यैर्निरस्तो भवाल्लुँब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः
म:न यँ ऐँ ॐ॥२७
ॐ ऐँ विं नमः तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्
म:न विं ऐँ ॐ॥२८
ॐ ऐँ वैं नमः वैश्य उवाच म:न वैं ऐँ ॐ॥२९

ॐ ऐँ चैं नमः एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः म:न चैं ऐँ ॐ॥३०

ॐ ऐँ ह्रीं नमः किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनुलुब्धैर्निराकृतः म:न ह्रीं ऐँ ॐ॥३१

ॐ ऐँ क्रूं नमः पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते म:न क्रूं ऐँ ॐ॥३२

ॐ ऐँ सँ नमः यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते म:न सँ ऐँ ॐ॥३३

ॐ ऐँ कँ नमः करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्
म:न कँ ऐँ ॐ॥३४

ॐ ऐँ श्राँ नमः मार्कण्डेय उवाच म:न श्राँ ऐँ ॐ॥३५

ॐ ऐँ त्रौं नमः ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ
म:न त्रौं ऐँ ॐ॥३६॥

ॐ ऐँ स्त्राँ नमः समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् म:न स्त्राँ ऐँ ॐ॥३७॥

ॐ ऐँ ज्यँ नमः उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ
म:न ज्यँ ऐँ ॐ॥३८॥

ॐ ऐँ रौं नमः राजोवाच म:न रौं ऐँ ॐ॥३९॥

ॐ ऐँ द्राँ नमः भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्
म:न द्राँ ऐँ ॐ॥४०॥

ॐ ऐँ द्रों नमः दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि म:न द्रों ऐँ ॐ॥४१

ॐ ऐँ ह्लाँ नमः जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः म:न ह्लाँ ऐँ ॐ॥४२

ॐ ऐँ द्रूं नमः स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ म:न द्रूं ऐँ ॐ॥४३

ॐ ऐँ शाँ नमः दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।

तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि म:न शाँ ऐँ ॐ॥४०

ॐ ऐँ मीँ नम: ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता
म:न मीँ ऐँ ॐ॥४५

ॐ ऐँ श्रौँ नम: ऋषिरुवाच म:न श्रौँ ऐँ ॐ॥४६

ॐ ऐँ जुँ नम: ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे म:न जुँ ऐँ ॐ॥४७

ॐ ऐँ ह्ल्रूँ नम: विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक्पृथक्।
दिवान्धा: प्राणिन: केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे म:न ह्ल्रूँ ऐँ ॐ॥४८

ॐ ऐँ श्रूँ नम: केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टय:।
ज्ञानिनो मनुजा: सत्यं किं नु ते न हि केवलम् म:न श्रूँ ऐँ ॐ॥४९

ॐ ऐँ प्रीँ नम: यतो हि ज्ञानिन: सर्वे पशुपक्षिमृगादय:।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् म:न प्रीँ ऐँ ॐ॥५०

ॐ ऐँ रं नम: मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयो:।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु म:न रँ ऐँ ॐ॥५१

ॐ ऐँ वँ नम: कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषा: सुतान्प्रति म:न वँ ऐँ ॐ॥५२

ॐ ऐँ व्रीँ नम: लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्त्ते निपातिता: म:न व्रीँ ऐँ ॐ॥५३

ॐ ऐँ व्लँ नम: महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मय: कार्यो योगनिद्रा जगत्पते: म:न व्लँ ऐँ ॐ।५४

ॐ ऐँ स्त्रौँ नम: महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा म:न स्त्रौँ ऐँ ॐ॥५५

ॐ ऐँ ल्वाँ नम: बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् म:न ल्वाँ ऐँ ॐ॥५६

ॐ ऐँ लूँ नम: सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी म:न लूँ ऐँ ॐ॥५७

ॐ ऐँ साँ नम: संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी म:न साँ ऐँ ॐ॥५८

ॐ ऐँ रौं नमः राजोवाच म:न रौं ऐँ ॐ॥५९
ॐ ऐँ स्हौं नमः भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान्
म:न स्हौं ऐँ ॐ॥६०
ॐ ऐँ क्रूं नमः ब्रवीति कथमुत्पन्ना कर्म चास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा हि सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा म:न क्रूं ऐँ ॐ॥६१
ॐ ऐँ शौं नमः तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदांवर
म:न शौं ऐँ ॐ॥६२
ॐ ऐँ श्रौं नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौं ऐँ ॐ॥६३
ॐ ऐँ वँ नमः नित्यैव सा जगन्मूर्त्तिस्तया सर्वमिदं ततम्
म:न वँ ऐँ ॐ॥६४
ॐ ऐँ त्रूं नमः तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा म:न त्रूं ऐँ ॐ॥६५
ॐ ऐँ क्रौं नमः उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते म:न क्रौं ऐँ ॐ॥६६
ॐ ऐँ क्लूं नमः आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ म:न क्लूं ऐँ ॐ॥६७
ॐ ऐँ क्लीँ नमः विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥६८
ॐ ऐँ श्रीँ नमः दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः म:न श्रीँ ऐँ ॐ॥६९
ॐ ऐँ व्लूं नमः प्रबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् म:न व्लूं ऐँ ॐ॥७०
ॐ ऐँ ठाँ नमः स्तौमि निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलतेजसः
म:न ठाँ ऐँ ॐ॥७१॥
ॐ ऐँ ठ्रीं नमः ब्रह्मोवाच म:न ठ्रीं ऐँ ॐ॥७२॥
ॐ ऐँ स्त्राँ नमः त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका

म:न स्त्राँ ऐँ ॐ॥७३

ॐ ऐँ स्लूँ नम: सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषत: म:न स्लूँ ऐँ ॐ॥७४

ॐ ऐँ क्रैँ नम: त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् म:न क्रैँ ऐँ ॐ॥७५

ॐ ऐँ च्राँ नम: त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने म:न च्राँ ऐँ ॐ॥७६

ॐ ऐँ फ्राँ नम: महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति:
म:न फ्राँ ऐँ ॐ॥७७

ॐ ऐँ जीँ नम: महामोहा भगवती महादेवी महेश्वरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी म:न जीँ ऐँ ॐ॥७८

ॐ ऐँ लूँ नम: कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा म:न लूँ ऐँ ॐ॥७९

ॐ ऐँ स्लूँ नम: लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्ति: क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा म:न स्लूँ ऐँ ॐ॥८०

ॐ ऐँ नौँ नम: खड्गिनी चापिनी बाणा भुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी म:न नौँ ऐँ ॐ॥८१

ॐ ऐँ स्त्रीँ नम: परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मके म:न स्त्रीँ ऐँ ॐ॥८२

ॐ ऐँ प्रूँ नम: तस्य सर्वस्य या शक्ति: सा त्वं किं स्तूयसे मया।
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् म:न प्रूँ ऐँ ॐ॥८३

ॐ ऐँ स्त्रूँ नम: सोऽपि निद्रावशं नीत: कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वर:।
विष्णु: शरीरग्रहणमहमीशान एव च म:न स्त्रूँ ऐँ ॐ॥८४

ॐ ऐँ ज्राँ नम: कारितास्ते यतोऽतस्त्वां क: स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावै: स्वैरुदारैर्देवि: संस्तुता म:न ज्राँ ऐँ ॐ॥८५

ॐ ऐँ वाँ नम: मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु मःन वाँ ऐँ ॐ॥८६

ॐ ऐँ ओँ नमः बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ मःन ओँ ऐँ ॐ॥८७

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥८८

ॐ ऐँ ऋँ नमः एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा
मःन ऋँ ऐँ ॐ॥८९

ॐ ऐँ रूँ नमः विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः मःन रूँ ऐँ ॐ॥९०

ॐ ऐँ क्लीँ नमः निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽ व्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥९१

ॐ ऐँ दुं नमः एकार्णवे हि शयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ मःन दुं ऐँ ॐ॥९२

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः क्रोधरक्तेक्षणौ हन्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥९३

ॐ ऐँ गूं नमः पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ मःन गूँ ऐँ ॐ॥९४

ॐ ऐँ लाँ नमः उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्
मःन लाँ ऐँ ॐ॥९५

ॐ ऐँ ह्राँ नमः श्रीभगवानुवाच मःन ह्राँ ऐँ ॐ॥९६

ॐ ऐँ गँ नमः भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि मःन गँ ऐँ ॐ॥९७

ॐ ऐँ ऐँ नमः किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मया
मःन ऐँ ऐँ ॐ॥९८॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥ ९९

ॐ ऐँ जूं नमः वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्
मःन जूं ऐँ ॐ॥१००

ॐ ऐँ डैं नमः विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता मःन डैं ऐँ ॐ॥१०१॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच म:व श्रौँ ऐँ ॐ॥१०२

ॐ ऐँ द्रौँ नमः तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।

कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः म:न द्रौँ ऐँ ॐ॥१०३॥

ॐ ऐँ क्लीँ नमः एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।

प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥१०४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः॥



द्वितीयोऽध्याय:

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव एवं महिषासुर की सेनाओं का वध

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषि:; महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक्छन्द:, शाकम्भरी शक्ति:, दुर्गाबीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेद: स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं धनार्थेच मध्यमचरित्रजपे विनियोग:।

'ध्यानम्'

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अक्षस्रक् परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तै: प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।
मानसोपचार पूजन।
ॐ ऐँ श्रौं नम: ऋषिरुवाच म:न श्रौं ऐँ ॐ।।१
ॐ ऐँ श्रीँ नम: देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे म:न श्रीँ ऐँ ॐ।।२।।
ॐ ऐँ ह्सूँ नम: तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुर: म:न ह्सूँ ऐँ ॐ।।३।।
ॐ ऐँ हौं नम: तत: पराजिता देवा: पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ म:न हौं ऐँ ॐ।।४।।
ॐ ऐँ ह्रीँ नम: यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशा: कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् म:न ह्रीँ ऐँ ॐ।।५।।
ॐ ऐँ अँ नम: सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति म:न अँ ऐँ ॐ।।६।।

ॐ ऐँ क्लीँ नमः स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ चाँ नमः एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् मःन चाँ ऐँ ॐ॥८॥
ॐ ऐँ मुं नमः इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शंभुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ मःन मुं ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ डाँ नमः ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च मःन डाँ ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ यैं नमः अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत मःन यैं ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ विं नमः अतीव तेजसः कूटं ज्वलंतमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् मःन विं ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ च्चैं नमः अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा मःन च्चैं ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ ईं नमः यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा मःन ईं ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ सौं नमः सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यमैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः मःन सौं ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ व्राँ नमः ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका मःन व्राँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ त्रौं नमः तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा मःन त्रौं ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ लँ नमः भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा मःन लँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ वँ नमः ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः मःन वँ ऐँ ॐ ॥१९॥

ॐ ऐँ ह्राँ नमः शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान्कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः म:न ह्राँ ऐँ ॐ॥२०
ॐ ऐँ क्रीँ नमः शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी म:न क्रीँ ऐँ ॐ॥२१
ॐ ऐँ सौँ नमः वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात् म:न सौँ ऐँ ॐ॥२२
ॐ ऐँ यँ नमः कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् म:न यँ ऐँ ॐ॥२३
ॐ ऐँ ऐँ नमः समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः।
कालश्च दत्तावान्खड्गं तस्यै चर्म च निर्मलम् म:न ऐँ ऐँ ॐ॥२४
ॐ ऐँ मूँ नमः क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च म:न मूँ ऐँ ॐ॥२५
ॐ ऐँ सः नमः अर्द्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम् म:न सः ऐँ ॐ॥२६
ॐ ऐँ हँ नमः अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् म:न हँ ऐँ ॐ॥२७
ॐ ऐँ सँ नमः अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् म:न सँ ऐँ ॐ॥२८
ॐ ऐँ सोँ नमः अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान्वाहनं सिंह रत्नानि विविधानि च म:न सोँ ऐँ ॐ॥२९
ॐ ऐँ शँ नमः ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् म:न शँ ऐँ ॐ॥३०
ॐ ऐँ हँ नमः नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा म:न हँ ऐँ ॐ॥३१
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥३२

ॐ ऐँ म्लौँ नमः अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे मःन म्लौँ ऐँ ॐ।।३३
ॐ ऐँ यूँ नमः चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् मःन यूँ ऐँ ॐ।।३४
ॐ ऐँ त्रँ नमः तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्त्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः मःन त्रँ ऐँ ॐ।।३५
ॐ ऐँ स्त्रौँ नमः सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः मःन स्त्रौँ ऐँ ॐ।।३६
ॐ ऐँ आँ नमः अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा मःन आँ ऐँ ॐ।।३७
ॐ ऐँ प्रेँ नमः पादाक्रान्त्यानतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् मःन प्रेँ ऐँ ॐ।।३८
ॐ ऐँ शँ नमः दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृत्ते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् मःन शँ ऐँ ॐ।।३९
ॐ ऐँ ह्राँ नमः शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः मःन ह्राँ ऐँ ॐ।।४०
ॐ ऐँ स्मँ नमः युयुधे चामरश्चान्यश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः मःन स्मँ ऐँ ॐ।।४१
ॐ ऐँ ऊँ नमः अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः मःन ऊँ ऐँ ॐ।।४२
ॐ ऐँ गूँ नमः अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः मःन गूँ ऐँ ॐ ।।४३
ॐ ऐँ व्यूँ नमः वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्यो महादैत्यः पञ्चाशद्भिरथायुतैः मःन व्यूँ ऐँ ॐ।।४४
ॐ ऐँ हूँ नमः युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः मःन हूँ ऐँ ॐ।।४५

ॐ ऐँ भैं नमः युयुधे संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा म:न भैं ऐँ ॐ॥४६
ॐ ऐँ ह्राँ नमः हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा म:न ह्राँ ऐँ ॐ॥४७
ॐ ऐँ क्रूं नमः युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथा परे म:न क्रूं ऐँ ॐ॥४८
ॐ ऐँ मूँ नमः देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका म:न मूँ ऐँ ॐ॥४९
ॐ ऐँ ल्रीं नमः लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः म:न ल्रीं ऐँ ॐ॥५०
ॐ ऐँ श्राँ नमः मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी म:न श्राँ ऐँ ॐ॥५१
ॐ ऐँ द्रूं नमः चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका म:न द्रूं ऐँ ॐ॥५२
ॐ ऐँ ब्लूँ नमः त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः म:न ब्लूँ ऐँ ॐ॥५३
ॐ ऐँ ह्सौं नमः नाशयन्तोऽसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान्गणाः शङ्खांस्तथापरे म:न ह्सौं ऐँ ॐ॥५४
ॐ ऐँ क्राँ नमः मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शरवृष्टिभिः म:न क्राँ ऐँ ॐ॥५५
ॐ ऐँ स्हौं नमः खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान्घण्टास्वनविमोहितान् म:न स्हौं ऐँ ॐ॥५६
ॐ ऐँ म्लूँ नमः असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद्द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे म:न म्लूँ ऐँ ॐ॥५७
ॐ ऐँ श्रीँ नमः विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः म:न श्रीँ ऐँ ॐ॥५८

ॐ ऐँ गँ नमः केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तरशरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे मःन गँ ऐँ ॐ।।५९
ॐ ऐँ क्रूँ नमः शैलानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषाञ्चिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे मःन क्रूँ ऐँ ॐ ।।६०
ॐ ऐँ त्रीँ नमः शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः मःन त्रीँ ऐँ ॐ।।६१
ॐ ऐँ क्स्त्रीँ नमः एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः मःन क्स्त्रीँ ऐँ ॐ।।६२
ॐ ऐँ कँ नमः कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः मःन कँ ऐँ ॐ।।६३
ॐ ऐँ फ्रौँ नमः कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः मःन फ्रौँ ऐँ ॐ।।६४
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः मःन ह्रीँ ऐँ ॐ।।६५।।
ॐ ऐँ शाँ नमः शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् मःन शाँ ऐँ ॐ।।६६।।
ॐ ऐँ क्ष्म्रीँ नमः क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् मःन क्ष्म्रीँ ऐँ ॐ।।६७।।
ॐ ऐँ रोँ नमः स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति मःन रोँ ऐँ ॐ।।६८।।
ॐ ऐँ डुँ नमः देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुष्टुवुर्देवा पुष्पवृष्टिमुचो दिवि मःन डुँ ऐँ ॐ।।६९।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे महिषासुरसैन्यवधो नाम
द्वितीयोऽध्यायः।।



तृतीयोऽध्याय:

सेनापतियों सहित महिषासुर का वध

'ध्यानम्'

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकाम्।

रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम्,

देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।

मानसोपचारपूजन।

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौं ऐं ॐ।।१

ॐ ऐं क्लीं नमः निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।

सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् मःन क्लीं ऐं ॐ।।२।।

ॐ ऐं साँ नमः स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः मःन साँ ऐं ॐ।।३।।

ॐ ऐं त्रौं नमः तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीययैव शरोत्करान्।

जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् मःन त्रौं ऐं ॐ।।४।।

ॐ ऐं प्रूं नमः चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।

विव्याध चैनं गात्रेषु च्छिन्नधन्वानमाशुगैः मःन प्रूं ऐं ॐ।।५।।

ॐ ऐं ग्लौं नमः स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।

अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः मःन ग्लौं ऐं ॐ।।६।।

ॐ ऐं क्रौं नमः सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।

आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् मःन क्रौं ऐं ॐ।।७।।

ॐ ऐं व्रीं नमः तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।

ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः म:न व्रीं ऐं ॐ॥८॥
ॐ ऐं स्लौं नमः चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् म:न स्लौं ऐं ॐ॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं नमः दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवीशूलममुञ्चत।
तेन तच्छतधा नीतं शूलं स च महासुरः म:न ह्रीं ऐं ॐ॥१०॥
ॐ ऐं हौं नमः हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः म:न हौं ऐं ॐ॥११॥
ॐ ऐं श्रां नमः सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिकाद्रुतम्।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् म:न श्रां ऐं ॐ॥१२॥
ॐ ऐं ग्रीं नमः भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् म:न ग्रीं ऐं ॐ॥१३॥
ॐ ऐं क्रूं नमः ततः सिहः समुत्पत्य गजकुभान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा म:न क्रूं ऐं ॐ॥१४॥
ॐ ऐं क्रीं नमः युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः म:न क्रीं ऐं ॐ॥१५॥
ॐ ऐं यां नमः ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् म:न यां ऐं ॐ॥१६॥
ॐ ऐं द्लूं नमः उदग्रश्चरणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः म:न द्लूं ऐं ॐ॥१७॥
ॐ ऐं द्रूं नमः देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् म:न द्रूं ऐं ॐ॥१८॥
ॐ ऐं क्षं नमः उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी म:न क्षं ऐं ॐ॥१९॥
ॐ ऐं ओं नमः बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् म:न ओं ऐं ॐ॥२०
ॐ ऐं क्रौं नमः एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।

माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान्गणान् मःन क्रौं ऐँ ॐ॥ २१॥
ॐ ऐँ क्ष्म्क्ल्रीं नमः कांश्चित्तुण्डप्रहारेण क्षुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् मःन क्ष्म्क्ल्रीं ऐँ ॐ॥ २२
ॐ ऐँ वाँ नमः वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले मःन वाँ ऐँ ॐ॥ २३॥
ॐ ऐँ श्रूँ नमः निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका मःन श्रूँ ऐँ ॐ॥ २४॥
ॐ ऐँ ग्लूँ नमः सोऽपि कोपान्महावीर्यः क्षुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चैश्चिक्षेप च ननाद च मःन ग्लूँ ऐँ ॐ॥ २५॥
ॐ ऐँ ल्रीं नमः वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः मःन ल्रीं ऐँ ॐ॥ २६॥
ॐ ऐँ प्रेँ नमः धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः मःन प्रेँ ऐँ ॐ॥ २७॥
ॐ ऐँ हूँ नमः इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् मःन हूँ ऐँ ॐ॥ २८॥
ॐ ऐँ ह्रौं नमः सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे मःन ह्रौं ऐँ ॐ॥ २९॥
ॐ ऐँ दैं नमः ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत मःन दैं ऐँ ॐ॥ ३०॥
ॐ ऐँ नूँ नमः तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः मःन नूँ ऐँ ॐ॥ ३१॥
ॐ ऐँ आँ नमः करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत मःन आँ ऐँ ॐ॥ ३२॥
ॐ ऐँ फ्राँ नमः ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुराश्रितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् मःन फ्राँ ऐँ ॐ॥ ३३॥
ॐ ऐँ प्रीँ नमः ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।

पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना मःन फ्रीँ ऐँ ॐ॥३४॥
ॐ ऐँ दँ नमः ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् मःन दँ ऐँ ॐ॥३५॥
ॐ ऐँ फ्रीँ नमः सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्भूतमुखरागाकुलाक्षरम् मःन फ्रीँ ऐँ ॐ॥३६॥
ॐ ऐँ ह्लीँ नमः देव्युवाच मःन ह्लीँ ऐँ ॐ॥३७
ॐ ऐँ गूँ नमः गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः मःन गूँ ऐँ ॐ॥३८॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥३९
ॐ ऐँ साँ नमः एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् मःन साँ ऐँ ॐ॥४०॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्द्धनिष्कान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥४१॥
ॐ ऐँ जूँ नमः अर्द्धनिष्कान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः मःन जूँ ऐँ ॐ॥४२॥
ॐ ऐँ हँ नमः ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः मःन हँ ऐँ ॐ॥४३॥
ॐ ऐँ सँ नमः तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः मःन सँ ऐँ ॐ॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः॥

चतुर्थोऽध्यायः

इन्द्रादि देवत्ताओं द्वारा देवी की स्तुति

'ध्यानम्'

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदांमौलिबद्धेन्दुरेखाम्,
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरुढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीम्,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

मानसोपचार पूजन

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ।।१

ॐ ऐँ सौँ नमः शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः
प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः मःन सौँ ऐँ ॐ।।२।।

ॐ ऐँ दौँ नमः देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः
स्म विदधातु शुभानि सा नः मःन दौँ ऐँ ॐ।।३।।

ॐ ऐँ प्रेँ नमः यस्या प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु मःन प्रेँ ऐँ ॐ।।४।।

ॐ ऐँ यौँ नमः या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् मःन याँ ऐँ ॐ॥५॥
ॐ ऐँ रूँ नमः किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारिभूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु मःन रूँ ऐँ ॐ॥६॥
ॐ ऐँ भँ नमः हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि
दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या मःन भँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ सूँ नमः यस्या समस्तसुरताः समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च मःन सूँ ऐँ ॐ॥८॥
ॐ ऐँ श्राँ नमः या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य महाव्रता
त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि मःन श्राँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ ओं नमः शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्तासि सर्वजगतां परमार्त्तिहन्त्री मःन ओं ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ लूँ नमः मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा मःन लूँ ऐँ ॐ॥११॥

ॐ ऐँ डूँ नमः ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण मःन डूँ ऐँ ॐ॥ १२॥

ॐ ऐँ जूँ नमः दृष्ट्वा तु देवि कुपितभ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशांकसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन मःन जूँ ऐँ ॐ॥ १३॥

ॐ ऐँ धूँ नमः देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य मःन धूँ ऐँ ॐ॥ १४॥

ॐ ऐँ त्रँ नमः ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एवं निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना मःन त्रँ ऐँ ॐ॥ १५॥

ॐ ऐँ ह्रीं नमः धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृतीकरोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन मःन ह्रीं ऐँ ॐ॥ १६॥

ॐ ऐँ श्रीँ नमः दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥ १७॥

ॐ ऐँ ईं नमः एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।

सङ्ग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि म:न ईं ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ ह्रां नमः दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी म:न ह्रां ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ ह्लरूँ नमः खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् म:न ह्लरूँ ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ क्लूँ नमः दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि
शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि
प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ क्रां नमः केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि म:न क्रां ऐँ ॐ॥२२॥
ॐ ऐँ ल्लूँ नमः त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥२३॥
ॐ ऐँ फ्रं नमः शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च म:न फ्रं ऐँ ॐ॥२४॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥२५॥

ॐ ऐँ म्लूँ नमः सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलाक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् म:न म्लूँ ऐँ ॐ॥२६॥
ॐ ऐँ घ्रें नमः खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः म:न घ्रें ऐँ ॐ॥२७॥
ॐ ऐँ श्रौं नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौं ऐँ ॐ॥२८
ॐ ऐँ ह्रौं नमः एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः म:न ह्रौं ऐँ ॐ॥२९॥
ॐ ऐँ व्रीं नमः भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यधूपैः सुधूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान् म:न व्रीं ऐँ ॐ॥३०॥
ॐ ऐँ ह्रीं नमः श्रीदेव्युवाच म:न ह्रीं ऐँ ॐ॥३१
ॐ ऐँ त्रौं नमः व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् म:न त्रौं ऐँ ॐ॥३२
ॐ ऐँ ह्ल्लौँ नमः देवा ऊचुः म:न ह्ल्लौँ ऐँ ॐ॥३३
ॐ ऐँ गौं नमः भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते म:न गौं ऐँ ॐ॥३४
ॐ ऐँ यूँ नमः यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि म:न यूँ ऐँ ॐ॥३५
ॐ ऐँ ह्लीँ नमः संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने म:न ह्लीँ ऐँ ॐ॥३६
ॐ ऐँ हूँ नमः तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके म:न हूँ ऐँ ॐ॥३७
ॐ ऐँ श्रौं नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौं ऐँ ॐ॥३८
ॐ ऐँ ओं नमः इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप म:न ओं ऐँ ॐ॥३९
ॐ ऐँ अँ नमः इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी म:न अँ ऐँ ॐ॥४०

ॐ ऐँ म्हौँ नमः पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः मःन म्हौँ ऐँ ॐ।।४१
ॐ ऐँ प्रीँ नमः रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मया ख्यातं यथावत्कथयामि ते मःन प्रीँ ऐँ ॐ।।४२

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः।।

अथ पञ्चमोऽध्याय:

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड के मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना।

विनियोग

ॐ अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषिः महासरस्वती देवता अनुष्टुप् छन्दः भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः, स्वरूपम्, श्रीमहासरस्वती-प्रीत्यर्थं कामनासिद्ध्यर्थम् च उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-

घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुस्सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्रसरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।

।। मानसोपचारपूजन ।।

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ।।

ॐ ऐँ प्रीँ नमः पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हता मदबलाश्रयात् मःन प्रीँ ऐँ ॐ।। २।।

ॐ ऐँ ओँ नमः तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च मःन ओँ ऐँ ॐ।। ३।।

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः मःन ह्रीँ ऐँ ॐ।। ४।।

ॐ ऐँ ल्रीँ नमः हताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् मःन ल्रीँ ऐँ ॐ।। ५।।

ॐ ऐँ त्रोँ नमः तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः मःन त्रोँ ऐँ ॐ॥६॥
ॐ ऐँ क्राँ नमः इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः मःन क्राँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ ह्सौँ नमः देवा ऊचुः मःन ह्सौँ ऐँ ॐ॥८
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चन्द्ररूपिण्यै सुखायै सततं नमः मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१०
ॐ ऐँ ह्रँ नमः कल्याण्यै प्रणतामृध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः मःन ह्रँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै॥
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ रौँ नमः अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः मःन रौँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ स्त्रीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै मःन स्त्रीँ ऐँ ॐ॥१४
ॐ ऐँ म्लीँ नमः नमस्तस्यै मःन म्लीँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ प्लुँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः मःन प्लुँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ म्हौँ नमः या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै मःन म्हौँ ऐँ ॐ॥१७
ॐ ऐँ स्त्रीँ नमः नमस्तस्यै मःन स्त्रीँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ ग्लूँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः मःन ग्लूँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ व्रीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै
मःन व्रीँ ऐँ ॐ ॥२०
ॐ ऐँ सौँ नमः नमस्तस्यै मःन सौँ ऐँ ॐ॥२१॥

ॐ ऐँ लूँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न लूँ ऐँ ॐ॥२२

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥२३

ॐ ऐँ द्राँ नमः नमस्तस्यै म:न द्राँ ऐँ ॐ॥२४

ॐ ऐँ क्साँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न क्साँ ऐँ ॐ॥२५॥

ॐ ऐँ क्ष्म्रीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न क्ष्म्रीँ ऐँ ॐ॥२६

ॐ ऐँ ग्लौँ नमः नमस्तस्यै म:न ग्लौँ ऐँ ॐ॥२७

ॐ ऐँ स्कँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न स्कँ ऐँ ॐ॥२८॥

ॐ ऐँ त्रूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न त्रूँ ऐँ ॐ॥२९

ॐ ऐँ स्वलूँ नमः नमस्तस्यै म:न स्वलूँ ऐँ ॐ॥३०

ॐ ऐँ क्रौँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न क्रौँ ऐँ ॐ॥३१॥

ॐ ऐँ छ्रीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न छ्रीँ ऐँ ॐ॥३२

ॐ ऐँ म्लूँ नमः नमस्तस्यै म:न म्लूँ ऐँ ॐ॥३३

ॐ ऐँ क्लूँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥३४॥

ॐ ऐँ शाँ नमः या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न शाँ ऐँ ॐ॥३५

ॐ ऐँ ल्हीँ नमः नमस्तस्यै म:न ल्हीँ ऐँ ॐ॥३६

ॐ ऐँ स्त्रूँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न स्त्रूँ ऐँ ॐ॥३७

ॐ ऐँ ल्लीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ल्लीँ ऐँ ॐ॥३८

ॐ ऐँ लीँ नमः नमस्तस्यै म:न लीँ ऐँ ॐ॥३९

ॐ ऐँ सँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न सँ ऐँ ॐ॥४०॥

ॐ ऐँ लूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न लूँ ऐँ ॐ॥४१

ॐ ऐँ ह्सूँ नमः नमस्तस्यै म:न ह्सूँ ऐँ ॐ॥४२

ॐ ऐँ श्रूँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न श्रूँ ऐँ ॐ॥४३॥

ॐ ऐँ जूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न जूँ ऐँ ॐ॥४४

ॐ ऐँ ह्स्लरीँ नमः नमस्तस्यै म:न ह्स्लरीँ ऐँ ॐ॥४५

ॐ ऐँ स्कीँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न स्कीँ ऐँ ॐ॥४६॥

ॐ ऐँ क्लाँ नमः या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न क्लाँ ऐँ ॐ॥४७

ॐ ऐँ श्रूँ नमः नमस्तस्यै म:न श्रूँ ऐँ ॐ॥४८

ॐ ऐँ हँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न हँ ऐँ ॐ॥४९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥५०

ॐ ऐँ क्स्रूँ नमः नमस्तस्यै म:न क्स्रूँ ऐँ ॐ॥५१

ॐ ऐँ द्रौँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न द्रौँ ऐँ ॐ॥५२

ॐ ऐँ क्लूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥५३

ॐ ऐँ गाँ नमः नमस्तस्यै म:न गाँ ऐँ ॐ॥५४

ॐ ऐँ सँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न सँ ऐँ ॐ॥५५॥

ॐ ऐँ ल्स्राँ नमः या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ल्स्राँ ऐँ ॐ॥५६

ॐ ऐँ फ्रीँ नमः नमस्तस्यै म:न फ्रीँ ऐँ ॐ॥५७

ॐ ऐँ स्लाँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न स्लाँ ऐँ ॐ॥५८॥

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥५९

ॐ ऐँ फ्रेँ नमः नमस्तस्यै म:न फ्रेँ ऐँ ॐ॥६०

ॐ ऐँ ओँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न ओँ ऐँ ॐ॥६१॥

ॐ ऐँ स्म्लीँ नमः या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न स्म्लीँ ऐँ ॐ॥ ६२

ॐ ऐँ ह्राँ नमः नमस्तस्यै म:न ह्राँ ऐँ ॐ॥ ६३

ॐ ऐँ ऊँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न ऊँ ऐँ ॐ॥६४

ॐ ऐँ ह्लँ नमः या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न ह्लँ ऐँ ॐ॥६५

ॐ ऐँ हूँ नमः नमस्तस्यै म:न हूँ ऐँ ॐ॥६६

ॐ ऐँ नँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न नँ ऐँ ॐ॥६७॥

ॐ ऐँ स्राँ नमः या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न स्राँ ऐँ ॐ॥६८

ॐ ऐँ वँ नमः नमस्तस्यै म:न वँ ऐँ ॐ॥ ६९

ॐ ऐँ मँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न मँ ऐँ ॐ॥७०॥

ॐ ऐँ म्क्लाँ नमः या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न म्क्लाँ ऐँ ॐ॥७१

ॐ ऐँ शाँ नमः नमस्तस्यै म:न शाँ ऐँ ॐ॥७२

ॐ ऐँ ल्लँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न ल्लँ ऐँ ॐ॥७३॥

ॐ ऐँ भैँ नमः या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै म:न भैँ ऐँ ॐ॥७४

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः नमस्तस्यै म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥ ७५

ॐ ऐँ हौँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न हौँ ऐँ ॐ॥७६॥

ॐ ऐँ ईँ नमः इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानामखिलेषु या।

भूतेषु सततं व्याप्त्यै तस्यै देव्यै नमो नमः म:न ईँ ऐँ ॐ॥७७॥

ॐ ऐँ चेँ नमः चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्

म:न चेँ ऐँ ॐ॥७८

ॐ ऐँ ल्क्रीँ नमः नमस्तस्यै म:न ल्क्रीँ ऐँ ॐ॥७९

ॐ ऐँ ह्लीँ नमः नमस्तस्यै नमो नमः म:न ह्लीँ ऐँ ॐ॥८०॥

ॐ ऐँ क्ष्म्लीँ नमः स्तुताः सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेशदिनेशसेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः म:न क्ष्म्लीँ ऐँ ॐ॥८१॥

ॐ ऐँ पूँ नमः या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः म:न पूँ ऐँ ॐ॥८२॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौँ ऐँ ॐ॥८३

ॐ ऐँ ह्रौँ नमः एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥८४॥

ॐ ऐँ भ्रूँ नमः साऽब्रवीत्तान्सुरान्सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा म:न भ्रूँ ऐँ ॐ॥८५॥

ॐ ऐँ क्स्त्रीँ नमः स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समस्तैः समरे निशुम्भेन पराजितैः म:न क्स्त्रीँ ऐँ ॐ॥८६॥

ॐ ऐँ आँ नमः शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते म:न आँ ऐँ ॐ॥८७॥

ॐ ऐँ क्रूँ नमः तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया म:न क्रूँ ऐँ ॐ॥८८॥

ॐ ऐँ त्रूँ नमः ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः म:न त्रूँ ऐँ ॐ॥८९॥

ॐ ऐँ डुँ नमः ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् म:न डुँ ऐँ ॐ॥९०॥

ॐ ऐँ जाँ नमः नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर म:न जाँ ऐँ ॐ॥९१॥

ॐ ऐँ ह्ल्रूँ नमः स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान्द्रष्टुमर्हति मःन ह्ल्रूँ ऐँ ॐ॥ ९२॥
ॐ ऐँ फ्रौँ नमः यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं तानि ते गृहे मःन फ्रौँ ऐँ ॐ॥ ९३॥
ॐ ऐँ क्रौँ नमः ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः मःन क्रौँ ऐँ ॐ॥ ९४॥
ॐ ऐँ किँ नमः विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् मःन किँ ऐँ ॐ॥ ९५॥
ॐ ऐँ ग्लूँ नमः निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् मःन ग्लूँ ऐँ ॐ॥ ९६॥
ॐ ऐँ छ्क्लीँ नमः छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुरासीत्प्रजापतेः मःन छ्क्लीँ ऐँ ॐ॥ ९७॥
ॐ ऐँ रँ नमः मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे मःन रँ ऐँ ॐ॥ ९८॥
ॐ ऐँ क्सैँ नमः निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निश्चापि ददौ तुभ्यमग्निः शौचे च वाससी मःन क्सैँ ऐँ ॐ॥ ९९॥
ॐ ऐँ स्हुँ नमः स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते मःन स्हुँ ऐँ ॐ॥ १००॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥ १०१
ॐ ऐँ श्श्रीँ नमः निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरः मःन श्श्रीँ ऐँ ॐ॥ १०२॥
ॐ ऐँ ओँ नमः इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु मःन ओँ ऐँ ॐ॥ १०३॥
ॐ ऐँ लूँ नमः स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
तां च देवीं ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा मःन लूँ ऐँ ॐ॥ १०४॥
ॐ ऐँ ल्हूँ नमः दूत उवाच मःन ल्हूँ ऐँ ॐ॥ १०५

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः मःन ल्लूँ ऐँ ॐ॥ १०६॥
ॐ ऐँ स्क्रीँ नमः अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् मःन स्क्रीँ ऐँ ॐ॥ १०७॥
ॐ ऐँ स्त्रोँ नमः मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक्पृथक् मःन स्त्रोँ ऐँ ॐ॥ १०८॥
ॐ ऐँ स्भ्रूँ नमः त्रैलोक्ये वररत्नानि ममवश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् मःन स्भ्रूँ ऐँ ॐ॥ १०९॥
ॐ ऐँ क्ष्म्क्लीँ नमः क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तु प्रणिपत्य समर्पितम् मःन क्ष्म्क्लीँ ऐँ ॐ॥ ११०॥
ॐ ऐँ व्रीँ नमः यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने मःन व्रीँ ऐँ ॐ॥ १११॥
ॐ ऐँ सीँ नमः स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् मःन सीँ ऐँ ॐ॥ ११२॥
ॐ ऐँ भूँ नमः मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः मःन भूँ ऐँ ॐ॥ ११३॥
ॐ ऐँ लाँ नमः परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज मःन लाँ ऐँ ॐ॥ ११४॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥ ११५
ॐ ऐँ स्हैँ नमः इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् मःन स्हैँ ऐँ ॐ॥ ११६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥ ११७
ॐ ऐँ श्रीँ नमः सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥ ११८॥
ॐ ऐँ फ्रेँ नमः किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा मःन फ्रेँ ऐँ ॐ॥ ११९॥

ॐ ऐँ रूँ नमः यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्त्ता भविष्यति मःन रूँ ऐँ ॐ॥ १२०॥
ॐ ऐँ च्छ्रूँ नमः तदाऽगच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु मःन च्छ्रूँ ऐँ ॐ॥ १२१॥
ॐ ऐँ ल्हूँ नमः दूत उवाच मःन ल्हूँ ऐँ ॐ॥१२२
ॐ ऐँ कँ नमः अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः मःन कँ ऐँ ॐ॥ १२३॥
ॐ ऐँ द्रूँ नमः अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखा देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका मःन द्रूँ ऐँ ॐ॥ १२४॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥ १२५॥
ॐ ऐँ साँ नमः सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि मःन साँ ऐँ ॐ॥ १२६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥१२७
ॐ ऐँ ऐँ नमः एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा मःन ऐँ ऐँ ॐ॥ १२८॥
ॐ ऐँ स्कीँ नमः स त्वं गच्छ मयैवोक्तं यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् मःन स्कीँ ऐँ ॐ॥ १२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥



अथ षष्ठोऽध्याय:

''धूम्रलोचनवध''

''ध्यानम्''

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-
नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्द्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१
ॐ ऐँ ओँ नमः इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्टे समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् मःन ओँ ऐँ ॐ॥२॥
ॐ ऐँ त्रूँ नमः तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् मःन त्रूँ ऐँ ॐ॥३॥
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् मःन ह्रौँ ऐँ ॐ॥४॥
ॐ ऐँ क्रौँ नमः तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठते परः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा मःन क्रौँ ऐँ ॐ॥५॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥६
ॐ ऐँ त्रीँ नमः तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ मःन त्रीँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥८॥
ॐ ऐँ प्रीँ नमः न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्त्तारमुपैष्यसि।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् मःन प्रीँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥१०

ॐ ऐँ ह्रौँ नमः दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् मःन ह्रौँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१२
ॐ ऐँ ऐँ नमः इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः मःन ऐँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ ओँ नमः अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः मःन ओँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्यास्तु वाहनः मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ क्राँ नमः कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चरणेनान्यान्निजघान महासुरान् मःन क्राँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ हूँ नमः केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् मःन हूँ ऐँ ॐ॥१७
ॐ ऐँ छ्राँ नमः विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः मःन छ्राँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ क्ष्म्क्ल्रीँ नमः क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना मःन क्ष्म्क्ल्रीँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ ल्लुं नमः श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः मःन ल्लुं ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ सौँ नमः चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ मःन सौँ ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ ह्लौँ नमः हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
गच्छत तत्र गत्वा च सा समानीयतां लघु मःन ह्लौँ ऐँ ॐ॥२२॥
ॐ ऐँ सौँ क्रुं नमः केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् मःन क्रुं सौँ ऐँ ॐ॥२३॥
ॐ ऐँ सौँ नमः तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् मःन सौँ ऐँ ॐ॥२४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

'' चण्ड एवं मुण्ड का वध''

'' ध्यानम्''

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः–

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीम्,
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्राम्,
मातङ्गीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिमालाम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१
ॐ ऐँ कुँ नमः आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः मःन कुँ ऐँ ॐ॥२॥
ॐ ऐँ ह्लीँ नमः ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने मःन ह्लीँ ऐँ ॐ॥३॥
ॐ ऐँ ह्रँ नमः ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः मःन ह्रँ ऐँ ॐ ॥४॥
ॐ ऐँ मूँ नमः ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा मःन मूँ ऐँ ॐ॥५॥
ॐ ऐँ त्रौँ नमः भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी मःन त्रौँ ऐँ ॐ॥६॥
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा मःन ह्रौँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ ओँ नमः अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।

निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा म:न ओँ ऐँ ॐ॥८॥
ॐ ऐँ ह्सूँ नमः सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् म:न ह्सूँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ क्लूँ नमः पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहयोधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ क्रँ नमः तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
नि:क्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् म:न क्रँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ नैँ नमः एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् म:न नैँ ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ लूँ नमः तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि म:न लूँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ ह्स्लीँ नमः बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा म:न ह्स्लीँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ प्लूँ नमः असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहता रणे म:न प्लूँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ शाँ नमः क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् म:न शाँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ स्लूँ नमः शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डक्षिप्तैः सहस्रशः म:न स्लूँ ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ प्लाँ नमः तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् म:न प्लाँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ प्रेँ नमः ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला म:न प्रेँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ अँ नमः उत्थाय च महासिंहं देवी चडमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् म:न अँ ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ औँ नमः अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।

तमप्यपातयद्भूमौ खट्वाङ्गाभिहतं रुषा म:न औँ ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ म्ल्रीँ नमः हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् म:न म्ल्रीँ ऐँ ॐ॥२२॥
ॐ ऐँ श्राँ नमः शिरश्चण्डस्य काली सा गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् म:न श्राँ ऐँ ॐ॥२३॥
ॐ ऐँ सौँ नमः मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि म:न सौँ ऐँ ॐ॥२४॥
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौँ ऐँ ॐ॥२५
ॐ ऐँ प्रीँ नमः तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः म:न प्रीँ ऐँ ॐ॥२६॥
ॐ ऐँ ह्स्त्रीँ नमः यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि म:न ह्स्त्रीँ ऐँ ॐ॥२६॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥



अथाष्टमोऽध्यायः

रक्तबीजवध

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।

अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीं

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥

मानसोपचार पूजन।

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ म्लह्रीँ नमः चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।

बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः मःन म्लह्रीँ ऐँ ॐ॥२॥

ॐ ऐँ प्रूँ नमः ततः कोपपराधीनचेताः शुभः प्रतापवान्।

उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह मःन प्रूँ ऐँ ॐ॥३॥

ॐ ऐँ एँ नमः अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।

कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः मःन एँ ऐँ ॐ॥४॥

ॐ ऐँ क्रोँ नमः कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।

शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया मःन क्रोँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ ईँ नमः कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।

युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम मःन ईँ ऐँ ॐ॥६॥

ॐ ऐँ एँ नमः इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।

निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः मःन एँ ऐँ ॐ॥७॥

ॐ ऐँ ल्रीँ नमः आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।

ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् मःन ल्रीँ ऐँ ॐ॥८॥

ॐ ऐँ फ्रौँ नमः स च सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप।

घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपयबृंहयत् मःन फ्रौँ ऐँ ॐ॥९॥

ॐ ऐँ म्लूँ नमः धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननाः मःन म्लूँ ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ नोँ नमः तन्निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली शरौघैः परिवारिताः मःन नोँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ छ्रूँ नमः एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विता मःन छ्रूँ ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ फ्राँ नमः ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चचण्डिकां ययुः मःन फ्राँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ ग्लौँ नमः यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ मःन ग्लौँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ स्मोँ नमः हंसयुक्तविमानस्था साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते मःन स्मोँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ सौँ नमः माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्रलेखाविभूषणा मःन सौँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ स्होँ नमः तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शंङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ मःन स्होँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ ख्सेँ नमः यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रती हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराही बिभ्रती तनुम् मःन ख्सेँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ क्ष्म्लीँ नमः नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः मःन क्ष्म्लीँ ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः वज्रहस्ता तथैवेन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
सहस्रनयना प्राप्ता यथा शक्रस्तथैव सा मःन ह्रौँ ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ वीँ नमः ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् मःन वीँ ऐँ ॐ॥२२॥

ॐ ऐँ लँ नमः ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिका शक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी मःन लँ ऐँ ॐ॥२३॥
ॐ ऐँ ल्सीँ नमः सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः मःन ल्सीँ ऐँ ॐ॥२४॥
ॐ ऐँ ब्लीँ नमः ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः मःन ब्लीँ ऐँ ॐ॥२५॥
ॐ ऐँ त्स्रोँ नमः त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ मःन त्स्रोँ ऐँ ॐ॥२६॥
ॐ ऐँ ब्रुँ नमः बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः।
तदाऽगच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः मःन ब्रुँ ऐँ ॐ॥२७॥
ॐ ऐँ श्क्लाँ नमः यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता मःन श्क्लाँ ऐँ ॐ॥२८॥
ॐ ऐँ श्रूँ नमः तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुरः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता मःन श्रूँ ऐँ ॐ॥२९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥३०॥
ॐ ऐँ शीँ नमः सा च तत्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः मःन शीँ ऐँ ॐ॥३१॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥३२॥
ॐ ऐँ क्लौँ नमः कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति मःन क्लौँ ऐँ ॐ॥३३॥
ॐ ऐँ फ्रँ नमः माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना मःन फ्रँ ऐँ ॐ॥३४॥
ॐ ऐँ ह्लँ नमः ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः मःन ह्लँ ऐँ ॐ॥३५॥

ॐ ऐँ क्लूँ नमः तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्च चक्रेण च विदारिताः म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥३६॥
ॐ ऐँ र्ताँ नमः नखैर्विदारितांश्चान्याम्भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगन्तरा म:न र्ताँ ऐँ ॐ॥३७॥
ॐ ऐँ म्लँ नमः चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चाखादाथ सा तदा म:न म्लँ ऐँ ॐ॥३८॥
ॐ ऐँ हँ नमः इति मातृगणं क्रुद्धं मर्द्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः म:न हँ ऐँ ॐ॥३९॥
ॐ ऐँ स्लूँ नमः पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्द्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः म:न स्लूँ ऐँ ॐ॥४०॥
ॐ ऐँ औँ नमः रक्तबिन्दुर्यदाभूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यांतत्प्रमाणो महासुरः म:न औँ ऐँ ॐ॥४१॥
ॐ ऐँ ल्हौँ नमः युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् म:न ल्हौँ ऐँ ॐ॥४२॥
ॐ ऐँ ल्श्रीँ नमः कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः म:न ल्श्रीँ ऐँ ॐ॥४३॥
ॐ ऐँ याँ नमः यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः म:न याँ ऐँ ॐ॥४४॥
ॐ ऐँ थ्लीँ नमः ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रं शस्त्रपातातिभीषणम् म:न श्लीँ ऐँ ॐ॥४५॥
ॐ ऐँ ल्हीँ नमः पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः म:न ल्हीँ ऐँ ॐ॥४६॥
ॐ ऐँ ग्लौँ नमः वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास चैन्द्री तमसुरेश्वरम् म:न ग्लौँ ऐँ ॐ॥४७॥
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥४८॥

ॐ ऐँ प्राँ नमः शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् मःन प्राँ ऐँ ॐ॥४९॥
ॐ ऐँ क्रीँ नमः स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः मःन क्रीँ ऐँ ॐ॥५०॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः तस्या हतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥५१॥
ॐ ऐँ न्स्लुँ नमः तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् मःन न्स्लुँ ऐँ ॐ॥५२॥
ॐ ऐँ हीँ नमः तान्विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु मःन हीँ ऐँ ॐ॥५३॥
ॐ ऐँ ह्लौँ नमः मच्छस्त्रपातसम्भूतान्रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबीजात्प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना मःन ह्लौँ ऐँ ॐ॥५४॥
ॐ ऐँ ह्लैँ नमः भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति मःन ह्लैँ ऐँ ॐ॥५५
ॐ ऐँ भ्रँ नमः भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा नैवोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् मःन भ्रँ ऐँ ॐ॥५६
ॐ ऐँ सौँ नमः मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् मःन सौँ ऐँ ॐ॥५७
ॐ ऐँ श्रीँ नमः न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्या हतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥५८
ॐ ऐँ प्सूँ नमः यतस्ततः स्ववक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः मःन प्सूँ ऐँ ॐ॥५९
ॐ ऐँ द्रौँ नमः तां श्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन चक्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः मःन द्रौँ ऐँ ॐ॥६०
ॐ ऐँ स्त्राँ नमः जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंहतितो हतः मःन स्त्राँ ऐँ ॐ॥६१

ॐ ऐँ ह्स्लाँ नमः नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप मःन ह्स्लाँ ऐँ ॐ॥६२
ॐ ऐँ स्ल्ल्रीँ नमः तेषां मातृगणो मत्तो ननर्त्तासृङ्मदोद्धतः
मःन स्ल्ल्रीँ ऐँ ॐ॥६३॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः॥८॥

अथ नवमोऽध्यायः

निशुम्भवध

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-

बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र
मर्द्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन

ॐ ऐँ रौँ नमः राजोवाच म:न रौँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ क्लीँ नमः विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥ २॥

ॐ ऐँ म्लौँ नमः भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः म:न म्लौँ ऐँ ॐ॥ ३॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौँ ऐँ ॐ॥४

ॐ ऐँ ग्लीँ नमः चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे म:न ग्लीँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ ह्रौँ नमः हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥ ६॥

ॐ ऐँ ह्सौँ नमः तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदृष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः म:न ह्सौँ ऐँ ॐ॥७॥

ॐ ऐँ ईँ नमः आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः म:न ईँ ऐँ ॐ॥८॥

ॐ ऐँ ब्रूँ नमः ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः।

शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः मःन ब्लूँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ श्राँ नमः चिच्छेदास्तांश्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ मःन श्राँ ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ लूँ नमः निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् मःन लूँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ आँ नमः ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् मःन आँ ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ क्रौँ नमः कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् मःन क्रौँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ प्रँ नमः अथादाय गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता मःन प्रँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ भ्रूँ नमः तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् मःन भ्रूँ ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः स रथस्थस्तदात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः मःन ह्रौँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ क्रीँ नमः तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् मःन क्रीँ ऐँ ॐ॥१९॥
ॐ ऐँ म्लीँ नमः पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना मःन म्लीँ ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ ग्लौँ नमः ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश मःन ग्लौँ ऐँ ॐ॥२१॥
ॐ ऐँ ह्सूँ नमः ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।

कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः म:न ह्सूँ ऐँ ॐ॥ २२॥

ॐ ऐँ प्लीँ नमः अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ म:न प्लीँ ऐँ ॐ।२३॥

ॐ ऐँ ह्रौँ नमः दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥ २४॥

ॐ ऐँ ह्स्राँ नमः शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया म:न ह्स्राँ ऐँ ॐ॥ २५॥

ॐ ऐँ स्हौँ नमः सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते म:न स्हौँ ऐँ ॐ॥ २६॥

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥ २७॥

ॐ ऐँ क्स्लीँ नमः ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह म:न क्स्लीँ ऐँ ॐ॥ २८॥

ॐ ऐँ श्रीँ नमः ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा म:न श्रीँ ऐँ ॐ॥ २९॥

ॐ ऐँ स्तूँ नमः पुनश्च कृत्वा बाहुनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुतेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् म:न स्तूँ ऐँ ॐ॥ ३०॥

ॐ ऐँ च्रेँ नमः ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् म:न च्रेँ ऐँ ॐ॥ ३१॥

ॐ ऐँ वीँ नमः ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः म:न वीँ ऐँ ॐ॥ ३२

ॐ ऐँ क्ष्लूँ नमः तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे म:न क्ष्लूँ ऐँ ॐ॥ ३३॥

ॐ ऐँ श्लूँ नमः शूलहस्तं तमायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका म:न श्लूँ ऐँ ॐ॥ ३४॥

ॐ ऐँ क्रूँ नमः भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।

महाबली महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् मःन क्रू ऐँ ॐ।।३५।।
ॐ ऐँ क्राँ नमः तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि मःन क्राँ ऐँ ॐ।।३६।।
ॐ ऐँ ह्रौँ नमः ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् मःन ह्रौँ ऐँ ॐ।।३७।।
ॐ ऐँ क्राँ नमः कौमारी शक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुरा।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः मःन क्राँ ऐँ ॐ।।३८।।
ॐ ऐँ स्क्ष्लीँ नमः माहेश्वरी त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराही तुण्डघातेन केचिच्चूर्णी कृता भुवि मःन स्क्ष्लीँ ऐँ ॐ।।३९।।
ॐ ऐँ म्रूँ नमः खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णाव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे मःन म्रूँ ऐँ ॐ।।४०।।
ॐ ऐँ फूँ नमः केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे काली शिवदूतीमृगाधिपैः मःन फूँ ऐँ ॐ।।४१।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः।।९।।

अथ दशमोऽध्यायः

शुम्भवध

ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः–

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि, नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।

रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदिभजामि धृतेन्दुलेखाम्

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

॥मानसोपचार पूजन॥

ॐ ऐँ श्रीँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।

हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥२॥

ॐ ऐँ व्लूँ नमः बलावलेपादुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।

अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे याति मानिनी मःन व्लूँ ऐँ ॐ॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥४

ॐ ऐँ म्लँ नमः एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।

पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः मःन म्लँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।

तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥७

ॐ ऐँ ग्लीँ नमः अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।

तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव मःन ग्लीँ ऐँ ॐ॥८॥

ॐ ऐँ ह्रूँ नमः ऋषिरुवाच मःन ह्रूँ ऐँ ॐ॥९

ॐ ऐँ धूँ नमः ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।

पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् मःन धूँ ऐँ ॐ॥१०॥

ॐ ऐँ हुं नमः शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथा चास्त्रैः सुदारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् मःन हुं ऐँ ॐ॥ ११॥
ॐ ऐँ द्रौँ नमः दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः मःन द्रौँ ऐँ ॐ॥१२।
ॐ ऐँ श्रीँ नमः मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥ १३॥
ॐ ऐँ त्रूँ नमः ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सा च तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः मःन त्रूँ ऐँ ॐ॥ १४॥
ॐ ऐँ ब्रूँ नमः छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् मःन ब्रूँ ऐँ ॐ॥ १५॥
ॐ ऐँ फ्रेँ नमः ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत तां हन्तुं दैत्यानामधिपेश्वरः मःन फ्रेँ ऐँ ॐ॥ १६॥
ॐ ऐँ ह्राँ नमः तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् मःन ह्राँ ऐँ ॐ॥ १७॥
ॐ ऐँ जुं नमः हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः मःन जुं ऐँ ॐ॥ १८॥
ॐ ऐँ सौँ नमः चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् मःन सौँ ऐँ ॐ॥ १९॥
ॐ ऐँ स्लूँ नमः स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् मःन स्लूँ ऐँ ॐ॥ २०॥
ॐ ऐँ प्रेँ नमः तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः मःन प्रेँ ऐँ ॐ॥ २१॥
ॐ ऐँ हेस्वाँ नमः उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका मःन हेस्वाँ ऐँ ॐ॥ २२॥
ॐ ऐँ प्रीँ नमः नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् मःन प्रीँ ऐँ ॐ॥ २३॥

ॐ ऐँ फ्राँ नमः ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले मःन फ्राँ ऐँ ॐ॥२४॥
ॐ ऐँ क्रीँ नमः स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया मःन क्रीँ ऐँ ॐ॥२५॥
ॐ ऐँ श्रीँ नमः तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥२६॥
ॐ ऐँ क्राँ नमः स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् मःन क्राँ ऐँ ॐ॥२७॥
ॐ ऐँ सः नमः ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः मःन सः ऐँ ॐ॥२८॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथा शुम्भे निपातिते मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥२९॥
ॐ ऐँ व्रेँ नमः ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन्गन्धर्वा ललितं जगुः मःन व्रेँ ऐँ ॐ॥३०॥
ॐ ऐँ इँ नमः अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः मःन इँ ऐँ ॐ॥३१॥
ॐ ऐँ ज्स्ह्ल्रीँ नमः जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्तादिग्जनितस्वनाः
मःन ज्स्ह्ल्रीँ ऐँ ॐ॥३२॥

इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः॥१०॥



अथैकादशोऽध्यायः

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-
बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाऽभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥

मानसोपचार पूजन।

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ क्रँ नमः देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभा-
द्विकाशिववक्त्राब्जविकाशिताशाः मःन क्रँ ऐँ ॐ॥२॥

ॐ ऐँ श्रौँ नमः देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥३॥

ॐ ऐँ ल्लीँ नमः आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्याय्यते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये मःन ल्लीँ ऐँ ॐ॥४॥

ॐ ऐँ प्रेँ नमः त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः मःन प्रेँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ सौः नमः विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ता सकलं जगच्च।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः मःन सौः ऐँ ॐ॥६॥
ॐ ऐँ स्हौँ नमः सर्वभूता यदा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्ति परमोक्तयः मःन स्हौँ ऐँ ॐ॥७॥
ॐ ऐँ त्रूँ नमः सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते मःन त्रूँ ऐँ ॐ॥८॥
ॐ ऐँ क्लीँ नमः कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥९॥
ॐ ऐँ स्क्लीँ नमः सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते मःन स्क्लीँ ऐँ ॐ॥१०॥
ॐ ऐँ प्रीँ नमः सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते मःन प्रीँ ऐँ ॐ॥११॥
ॐ ऐँ ग्लौँ नमः शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते मःन ग्लौँ ऐँ ॐ॥१२॥
ॐ ऐँ हस्हीँ नमः हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणी।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते मःन हस्हीँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ स्तौँ नमः त्रिशूलचन्द्राहिधिरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते मःन स्तौँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ लीँ नमः मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते मःन लीँ ऐँ ॐ॥१५॥
ॐ ऐँ म्लीँ नमः शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते मःन म्लीँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ स्तूँ नमः गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते मःन स्तूँ ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ ज्स्हीँ नमः नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे।

त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते म:न ज्ह्रीँ ऐँ ॐ॥१८॥

ॐ ऐँ फ्रँ नमः किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते म:न फ्रँ ऐँ ॐ॥१९॥

ॐ ऐँ क्रँ नमः शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्ये महाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते म:न क्रँ ऐँ ॐ॥२०॥

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥२१॥

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः लक्ष्मिलज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टे स्वधे ध्रुवे।
महारात्रे महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥२२॥

ॐ ऐँ क्ष्म्रीँ नमः मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते म:न क्ष्म्रीँ ऐँ ॐ॥२३॥

ॐ ऐँ श्रूँ नमः सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते म:न श्रूँ ऐँ ॐ॥२४॥

ॐ ऐँ इँ नमः एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते म:न इँ ऐँ ॐ॥२५॥

ॐ ऐँ जूँ नमः ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते म:न जूँ ऐँ ॐ॥२६॥

ॐ ऐँ त्रैँ नमः हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव म:न त्रैँ ऐँ ॐ॥२७॥

ॐ ऐँ दूँ नमः असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् म:न दूँ ऐँ ॐ॥२८॥

ॐ ऐँ ह्रौँ नमः रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति म:न ह्रौँ ऐँ ॐ॥२९॥

ॐ ऐँ क्लीँ नमः एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥३०॥

ॐ ऐं सूं नमः विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्त्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयस्येतदतीव विश्वम् मःन सूं ऐं ॐ॥३१॥
ॐ ऐं हौं नमः रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्
मःन हौं ऐं ॐ॥३२॥
ॐ ऐं श्व्रं नमः विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ती विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः
मःन श्व्रं ऐं ॐ॥३३॥
ॐ ऐं व्रूं नमः देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् मःन व्रूं ऐं ॐ॥३४॥
ॐ ऐं स्फ्रूं नमः प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्त्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव मःन स्फ्रूं ऐं ॐ॥३५॥
ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच मःन ह्रीं ऐं ॐ॥३६
ॐ ऐं लँ नमः वरदाहं सुरगणाः वरं यं मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् मःन लँ ऐं ॐ॥३७॥
ॐ ऐं ह्सौं नमः देवा ऊचुः मःन ह्सौं ऐं ॐ॥३८
ॐ ऐं सें नमः सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेतत्त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् मःन सें ऐं ॐ॥३९॥
ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच मःन ह्रीं ऐं ॐ॥४०
ॐ ऐं ह्रीं नमः वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ मःन ह्रीं ऐं ॐ॥४१॥
ॐ ऐं विं नमः नन्दगोपकुले जाता यशोदा गर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी मःन विं ऐं ॐ॥४२॥
ॐ ऐं प्लीं नमः पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् मःन प्लीं ऐं ॐ॥४३॥

ॐ ऐँ क्ष्म्क्लीँ नमः भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्रचित्तान्सुदानवान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः मःन क्ष्म्क्लीँ ऐँ ॐ॥४४॥
ॐ ऐँ तस्त्राँ नमः ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् मःन तस्त्राँ ऐँ ॐ॥४५॥
ॐ ऐँ प्रँ नमः भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनंभसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्योनिजा मःन प्रँ ऐँ ॐ॥४६॥
ॐ ऐँ म्लीँ नमः ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्त्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः मःन म्लीँ ऐँ ॐ॥४७॥
ॐ ऐँ स्त्रूँ नमः ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः मःन स्त्रूँ ऐँ ॐ॥४८॥
ॐ ऐँ क्ष्माँ नमः शाकंभरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् मःन क्ष्माँ ऐँ ॐ॥४९
ॐ ऐँ स्तूँ नमः दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले मःन स्तूँ ऐँ ॐ॥५०॥
ॐ ऐँ स्ह्रीँ नमः रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः मःन स्ह्रीँ ऐँ ॐ॥५१
ॐ ऐँ थ्श्रीँ नमः भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदाऽरुणाख्यैस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति मःन थ्श्रीँ ऐँ ॐ॥५२
ॐ ऐँ भ्रौँ नमः तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् मःन भ्रौँ ऐँ ॐ॥५३
ॐ ऐँ श्राँ नमः भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति मःन श्राँ ऐँ ॐ॥५४
ॐ ऐँ म्लीँ नमः तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् मःन म्लीँ ऐँ ॐ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः॥११॥



अथ द्वादशोऽध्यायः

देवी चरित के पाठ का माहात्म्य

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन।

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः देव्युवाच मःन ह्रीँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ आँ नमः एभिस्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् मःन आँ ऐँ ॐ॥२॥

ॐ ऐँ श्रीँ नमः मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्त्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥३॥

ॐ ऐँ आँ नमः अष्टम्यां च चतुर्द्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
स्तोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् मःन आँ ऐँ ॐ॥४॥

ॐ ऐँ क्लीँ नमः न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्दुष्कृतोत्था न चापदः।
न भविष्यति दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् मःन क्लीँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ क्रूँ नमः शत्रुतो न भयं तेषां दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्संभविष्यति मःन क्रूँ ऐँ ॐ॥६॥

ॐ ऐँ श्रूँ नमः तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् मःन श्रूँ ऐँ ॐ॥७॥

ॐ ऐँ प्राँ नमः उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम मःन प्राँ ऐँ ॐ॥८॥

ॐ ऐँ क्रूँ नमः यत्रैतत्पठ्यते सम्यक् नित्यमायतने मम।

सदा न तद्विमोक्ष्यामि सानिध्यं तत्र मे स्थितम् मःन क्रूँ ऐं ॐ॥ ९॥
ॐ ऐं दिँ नमः बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च मःन दिँ ऐं ॐ॥ १०॥
ॐ ऐं फ्रेँ नमः जानताऽजानता वापि बलिं पूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् मःन फ्रेँ ऐं ॐ॥ ११॥
ॐ ऐं हँ नमः शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः मःन हँ ऐं ॐ॥ १२॥
ॐ ऐं सः नमः सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः मःन सः ऐं ॐ॥ १३॥
ॐ ऐं चेँ नमः श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमांश्च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् मःन चेँ ऐं ॐ॥ १४॥
ॐ ऐं सूँ नमः रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् मःन सूँ ऐं ॐ॥ १५॥
ॐ ऐं प्रीँ नमः शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम मःन प्रीँ ऐं ॐ॥ १६॥
ॐ ऐं व्लूँ नमः उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते मःन व्लूँ ऐं ॐ॥ १७॥
ॐ ऐं आँ नमः बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदं च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् मःन आँ ऐं ॐ॥ १८॥
ॐ ऐं औँ नमः दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् मःन औँ ऐं ॐ॥ १९॥
ॐ ऐं ह्रीँ नमः सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः मःन ह्रीँ ऐं ॐ॥२०
ॐ ऐं क्रीँ नमः विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या मःन क्रीँ ऐं ॐ॥२१
ॐ ऐं द्राँ नमः प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृदुच्चरितश्रुते।

श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति म:न द्राँ ऐँ ॐ॥२२
ॐ ऐँ श्रीँ नमः रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्त्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् म:न श्रीँ ऐँ ॐ॥२३
ॐ ऐँ स्लीँ नमः तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः म:न स्लीँ ऐँ ॐ॥२४
ॐ ऐँ क्लीँ नमः ब्रह्मणा च कृता यास्ताः प्रयच्छन्ति शुभां गतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥२५
ॐ ऐँ स्लूँ नमः दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः म:न स्लूँ ऐँ ॐ॥२६
ॐ ऐँ ह्रीँ नमः राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्ते वध्ये बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥२७
ॐ ऐँ व्लीँ नमः पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा म:न व्लीँ ऐँ ॐ॥२८
ॐ ऐँ त्रोँ नमः स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा म:न त्रोँ ऐँ ॐ॥२९
ॐ ऐँ ओँ नमः दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम म:न ओँ ऐँ ॐ॥३०
ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच म:न श्रौँ ऐँ ॐ॥३१
ॐ ऐँ ऐँ नमः इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा
म:न ऐँ ऐँ ॐ॥३२
ॐ ऐँ प्रेँ नमः पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातंकाः स्वाधिकारान्यथा पुरा म:न प्रेँ ऐँ ॐ॥३३
ॐ ऐँ द्रूँ नमः यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि म:न द्रूँ ऐँ ॐ॥३४
ॐ ऐँ क्लूँ नमः जगद्विध्वंसके तस्मिन्महोग्रेऽतुलविक्रमे॥
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः म:न क्लूँ ऐँ ॐ॥३५॥
ॐ ऐँ औँ नमः एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।

सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् मःन औँ ऐँ ॐ॥३६॥
ॐ ऐँ सूँ नमः तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति मःन सूँ ऐँ ॐ॥३७॥
ॐ ऐँ चेँ नमः व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया मःन चेँ ऐँ ॐ॥३८॥
ॐ ऐँ ह्रँ नमः सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी मःन ह्रँ ऐँ ॐ॥३९॥
ॐ ऐँ प्लीँ नमः भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते मःन प्लीँ ऐँ ॐ॥४०॥
ॐ ऐँ क्षाँ नमः स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् मःन क्षाँ ऐँ ॐ॥४१॥

इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम
द्वादशोऽध्यायः॥१२॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

सुरथ और वैश्य समाधि को देवी का वरदान

''ध्यानम्''

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः-
बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतिर्धारयन्तीं शिवां भजे
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन।

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ऋषिरुवाच मःन श्रौँ ऐँ ॐ॥१

ॐ ऐँ व्रीँ नमः एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत मःन व्रीँ ऐँ ॐ॥२॥

ॐ ऐँ ओँ नमः विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तथा त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः मःन ओँ ऐँ ॐ॥३॥

ॐ ऐँऔँ नमः मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् मःन औँ ऐँ ॐ॥४

ॐ ऐँ ह्राँ नमः आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा मःन ह्राँ ऐँ ॐ॥५॥

ॐ ऐँ श्रीँ नमः मार्कण्डेय उवाच मःन श्रीँ ऐँ ॐ॥६

ॐ ऐँ श्राँ नमः इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः मःन श्राँ ऐँ ॐ॥७

ॐ ऐँ ओँ नमः प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च मःन ओँ ऐँ ॐ॥८

ॐ ऐँ प्लीँ नमः जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः मःन प्लीँ ऐँ ॐ॥९

ॐ ऐँ सौँ नमः स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।



तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् म:न सौँ ऐँ ॐ॥१०

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।

निराहारौ यतात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥११

ॐ ऐँ क्रीँ नमः ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।

एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैयतात्मनोः म:न क्रीँ ऐँ ॐ॥१२

ॐ ऐँ ल्लूँ नमः परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका म:न ल्लूँ ऐँ ॐ॥१३॥

ॐ ऐँ क्लीँ नमः देव्युवाच म:न क्लीँ ऐँ ॐ॥१४

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।

मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥१५॥

ॐ ऐँ प्लीँ नमः मार्कण्डेय उवाच म:न प्लीँ ऐँ ॐ॥१६

ॐ ऐँ श्रीँ नमः ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यग्रजन्मनि।

अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् म:न श्रीँ ऐँ ॐ॥१७॥

ॐ ऐँ ल्लीँ नमः सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।

ममेत्यहमिति प्राज्ञः संगविच्युतिकारकम् म:न ल्लीँ ऐँ ॐ॥१८॥

ॐ ऐँ श्रूँ नमः देव्युवाच म:न श्रूँ ऐँ ॐ॥१९

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्
म:न ह्रीँ ऐँ ॐ॥२०

ॐ ऐँ त्रूँ नमः हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति
म:न त्रूँ ऐँ ॐ॥२१॥

ॐ ऐँ हूँ नमः मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः
म:न हूँ ऐँ ॐ॥२२

ॐ ऐँ ह्रौं नमः सावर्णिको नाम मनुर्भवान्भुवि भविष्यति
म:न ह्रौं ऐँ ॐ॥२३॥

ॐ ऐँ प्रीँ नमः वैश्यवर्य त्वयास्मत्तो वरो यश्चाभिवाञ्छितः
म:न प्रीँ ऐँ ॐ॥२४

ॐ ऐँ ऊँ नमः तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति

मःन ऊँ ऐँ ॐ॥२५॥

ॐ ऐँ सूँ नमः मार्कण्डेय उवाच मःन सूँ ऐँ ॐ॥२६

ॐ ऐँ ह्लौँ नमः इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्

मःन ह्लौँ ऐँ ॐ॥२७

ॐ ऐँ षौँ नमः बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः मःन षौँ ऐँ ॐ॥२८

ॐ ऐँ आँ नमः सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः

मःन आँ ऐँ ॐ॥२९॥

ॐ ऐँ ओँ नमः एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।

सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः मःन ओँ ऐँ ॐ॥३०॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरदानप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

''इसके अनन्तर पुनः नवार्णजप पूर्वोक्त रीति से करना चाहिए। नवार्ण एवं सप्तशती न्यास की विधियाँ पहले दी जा चुकी है। फिर देवी सूक्त, रात्रिसूक्त एवं रहस्यत्रय का पाठ करना चाहिए।''



अथ ऋग्वेदोक्तदेवीसूक्तम्

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मक सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवी माहात्म्यपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः–
सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः,
शंखं चक्रधनुश्शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा,
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला मनः विच्चे
चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

मानसोपचार पूजन।



देवीसूक्तम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः मया सो
अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं
ते वदामि मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवी आ विवेश
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥८॥



अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥९।.
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥११॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे
नमः या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१४॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१५।.
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानामखिलेषु या।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२८॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
स्तुताः सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेशदिनेशसेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३०॥



अथ प्राधानिकं रहस्यम्

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीसरस्वत्यो देवताः यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषा प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
आराध्यं यन्मया देव्या स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२॥

ऋषिरुवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ ३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ ४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ ५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ ६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि मनः
विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।

नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥११॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते
सुखम् मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ १३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१८।.
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२२
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३०॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥

॥इति प्रधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्॥

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥५॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥११॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नाराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्विचित्।
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥३२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।

प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३३
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३४।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुमाहितः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३५।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३६।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३८।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ।।३९।।

।।इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।।

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥ ५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥९॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१०
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।)
अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुः स्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥११॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१५॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१८।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥१९
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता

मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२१॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२२॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्
मनः विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ ॥२५॥
(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

॥इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्॥

इसके अनन्तर पुनः शाप-विमोचन करना चाहिए।

ॐ श्रीदुर्गायै नमः

श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सती साध्वी भवप्रीता भवानी भव मोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।२।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनोबुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।३।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।४।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।५।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी

म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।६।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वन दुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।७।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृति:
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।८।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्याच बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।९।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१०।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।११।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्यधारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यति:
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।१२।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नम:
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता वलप्रदा।

महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१३॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१४॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१५
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१६॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१७॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१८॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्
म:न विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥१९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन-सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यंत्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदाधारयते पुरारिः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥२०॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥२१॥

इति श्रीविश्वसारतंत्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ॥
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी

मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नमः
नामवलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः
मःन विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ।।



अथ दुर्गाष्टाक्षरसहस्रनामस्तोत्रम्

भैरव उवाच।

अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि
रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं यामिनामपि।।१
श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम्
मंत्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम्।।२
यत्पठित्वा शिवे धृत्त्वा देवीनामसहस्रकम्
अश्वमेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम्।।३
श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम्
गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम्।।४

ॐ श्री दुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिरनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गादेवता दुं बीजम्, ह्रीँ शक्तिः, ॐ कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः।

ॐ महेश्वर ऋषये नमः शिरसि॥१
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे॥२
ॐ श्रीदुर्गा देवतायै नमो हृदि॥३
ॐ दुँ बीजाय नमो नाभौ॥४
ॐ ह्रीँ शक्तये नमो मुखे॥५
ॐ कीलकाय नमः पादयोः॥६
ॐ विनियोगाय: नमः सर्वाङ्गे॥७
ॐ ह्रीँ दुर्गा जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका
प्रचण्डा चण्डिका चंडी चण्डमुण्डनिषूदिनी॥५
अनसूया त्रुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जकालया
प्रलयस्थितिसंभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी॥६
महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी
मदालसा मदोत्तुंगा मदिरा मदनप्रिया॥७
अलिव्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी
आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी॥८
मनोन्मनी महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मी सरस्वती
सरित्कादंबरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी॥९
गणांबिका जया पाती तपना तापहारिणी
तपोमयी दुरालंभा दुष्टग्रहनिवारिणी॥१०
दुःखघ्नी सुखदा माध्वी परमामृतसूःसुरा
सुधासुधांशुनिलया प्रलयानलसंनिभा॥११
समस्तसम्पद्भोजविलया कलिकालया
विद्येश्वरी विश्वमयी विराट्छन्दोगतिर्मतिः॥१२
धृतिश्चदांभिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी
गरिष्ठारिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाकुला॥१३
अकुस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी
विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकांतापराजिता॥१४

अजिता कुलिका लंपा लंपटा त्रिपुरेश्वरी
त्रितयीवेदविन्यासा सन्यासा सुमतिर्भया।।१५
अभया स्वर्मुखी देवी महौषधिरलंबुषा
चपलाचण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिषूदिनी।।१६
चपलाक्षी मदाविष्टामदिरारुणलोचना
पुरीत्रिपुरसूराद्या रमा रामा मनोरमा।।१७
संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा
शशांकमुकुटा श्यामासुरा सुन्दरलोचना।।१८
विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला
मनः शिला च कस्तूरी मगृनाभिर्मृगेक्षणा।।१९
मृगारिवाहनासाध्वीमानदामत्तभाषिणी
नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया।।२०
पुण्यापुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया
चामुण्डा चोग्रमुण्डा च महाचण्डतमा उमा।।२१
तमस्विनी प्रभाज्योत्स्ना महाज्योतिः स्वरूपिणी
स्वरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता।।२२
सृष्टिस्थितिः क्षेमकरी क्षामा क्षामोन्नतस्तनी।
क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा।।२३
दंतुरा दाडिमप्रीतिर्दया दांभिकसूदिनी।
राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा।।२४
कबंधा कंदरा कृत्या कृत्तिका कटकांतका।
कलंकरहिता काली कंपा काश्मीरवल्लभा।।२५
काशी कीर्तिप्रदा कांची काश्मीरी कोकिलस्वना
प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा।।२६
रतिः स्तुति स्तुरी तुर्या तोतुला तलवासिनी
तपः प्रिया सरिच्छ्रेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा।।२७
यामी यमांतका याम्या यमुना स्वर्णदी तडित्
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी।।२८

विगता विगतप्रश्ना कृशा कृष्टासिधारिणी
वारी वराम्बरधरा वरदा वीरसूदिनी।।२९
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती
दरी धनप्रिया धात्री धात्रीवल्ली महोदरी।।३०
गणेश्वरी गणा कांची कांचीकिंकिणिघंटिका।
माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी।।३१
पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा
स्वाभाविकगुणा गुण्या गांभीर्यगुणभूषण।।३२
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्ततिरुपिणी
तेजस्विनी सदानन्दा सभासंतोषवर्धिनी।।३३
तर्पणा कर्षणा होत्री संकल्पा शुभमंत्रिका
दर्भा द्रोणिकला शान्ता समिधा सुरवेदिका।।३४
धूमाहुतिश्चिरमतिश्चामीकररुचिश्चिता
दिव्यानलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती।।३५
अपर्णा सुफला यज्ञा समया निर्भयामया।
भीमस्वना भर्गशिखाभास्वती भाकरा विभा।।३६
विभावरी नदी नंद्या नद्यावर्तप्रवर्तिनी।
पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा पद्मनाभप्रसूः।।३७
विश्वमाया विश्वबाला विश्वंभरविलासिनी।
उरगेशा पद्मनाभा पद्मनाभप्रसूः प्रजा।।३८
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः।
संपुटा शयना शय्या शासना शमनांतका।।३९
श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशुवल्लभा।
स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कंपहारिणी।।४०
चंपका भूधरा चीना दीना दीनजनप्रिया।
वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी।।४१
समुद्रासंगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी।
पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया।।४२

माधवी मधुपानस्था मंदिरा मंदुरा मृगी।
ममर्षाभिरुषा रेवा रेवती रमणी रमा।।४३
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता चान्नपूर्णा महेश्वरी।
अणुरूपा जगज्योतिः समस्तासुरघातिनी।।४४
गारुडी गगनालंबा लंबमानकचप्रिया।
पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा।।४५
बलाका जगदंता च जरा जयवरप्रदा।
प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रमा।।४६
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा।
कीरी करालदेहा च शेमुषी मक्षिकां मषी।।४७
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा।
शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती।।४८
तथ्या पथ्यकरी रथ्या रथस्था विततस्वरा।
महती रागिणी मार्गी शुचिहासा हरीश्वरी।।४९
हरिद्रलांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी।
अंबालिकांबा देवेशी ह्यनद्याग्निशिखा श्रुतिः।।५०
अलसाल्पगतिश्चात्यानंतानंतगुणाश्रया।
आद्याचादित्यसंकाशा ह्यादित्यकुलसुन्दरी।।५१
आत्मरूपाधिशमनी चादिमायादिदेवता।
इन्द्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना।।५२
उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुंगा चोक्षवाहजा।
उत्तंका चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरूगर्विणी।।५३।।
ऊष्मा ऊर्णाच गुर्वंगी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका।
ऋद्धिश्चर्चा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री च वार्तकी।।५४
ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा।
लृकारा लृक्वुरा लीना लृकारवरधारिणी।।५५
एणांकमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला।
ऐंकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतिः।।५६

ॐ कारबीजरूपा च औत्रिकी बीजधारिणी।
अम्बिका लंपिकांबाच अस्वरोद्गाररूपिणी।।५७
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा।
कदम्बनिलया कंथा कांचीमंडनमण्डिता।।५८
कलंकरहिता कूर्पा कांचनाभा करीरगा।
कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा।।५९
कुलस्था कौलिनी कल्या कुरुकुल्ला कपालिनी।
कपालकुलनिर्विण्णा क्रेंकरा कंजलोचना।।६०
खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा।
खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा।।६१
खगायुधा खगगतिः खकाराशरभूषणा।
गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजनी गदा।।६२
गोधा गधाधरप्राज्या गगनेशी महीमला।
घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी।।६३
घुनसारप्रिया साम्या घवर्णरूत्तभूषणा।
चांद्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना।।६४
चञ्चरीकस्वना देवी चञ्चच्चामीकरांगदा।
छत्रिकाच्छुरिका छच्छाछत्रचामरभूषणा।।६५
ज्रींकारी जलजिह्वा च जृंभिका जलयोगिनी।
जटाजूटधरा जातिर्जाती पुष्पसमानना।।६६
जलेश्वरी जगद्धेया जानकी जननीजटा।
झंझाझरी झरत्कारी तरत्कांची त्वर्किकिणी।।६७
झिटिका झंपकृज्झंपा झंपत्रासनिवारिणी।
ञणुरूपाञक्कहस्ता ञकाराक्षरसंमता।।६८
टंकायुधा महातथ्या टंकारा करुणा सती।
ठक्कुरा ठत्कारा ठानी डिंडीरवसना डला।।६९।।
ढंडानिलमयी ढंडा ढणत्काकरा ढसा।
णांताणणी नीलायुधा नवर्णाक्षरभूषणा।।७०

तरुणी तुंदिला तोदा तामसी तामसप्रिया।
ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राबंरधरा तुला।।७१
तापत्रयहरी तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा।
स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला।।७२
दंतिनी दंतुरा दावी देवकी देवनायिका।
दामिनीदमिनी दंड्या दंडहस्ता दुरानतिः।।७३
दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्रविडवासिनी।
दूरस्था दुंदुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी।।७४
दुःखघ्नी च दुगाद्रष्ट्री दया दांभिकनाशिनी।
धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा।।७५
धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी।
धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना।।७६
नलिनी नर्तकी नांतानंगा नलिनलोचना।
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा नमिः।।७७
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी।
निरंजनजनिर्जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी।।७८
नटिकी नाट्यनिरतानवनीतप्रियानिला।
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा।।७९
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला।
परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोणिः पुलोमजा।।८०
पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाटीरवाहना।
पापघ्नी पद्मिनी पाली पत्नी परमसुन्दरी।।८१
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा।
पूर्णिमा पंचमी पौत्री पुरुरववरप्रदा।।८२
पंचयज्ञा पंचशरी पंचाशन्मनुवल्लभा।
पांचाली पंचपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा।।८३
फलिनी फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया।

फिरंगहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा।।८४
बलमाया बलस्तन्या विल्वसेना बलाबला।
बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी।।८५
बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बंधनमोचिनी।
भगिनी भगमाला च भगालिंगामृतस्त्रवा।।८६
भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगमर्षिणी।
भगलिंगास्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी।।८७
मत्ता मनोहरा मेना मैनाकजननी मुरी।
मुरली मानवी मोक्त्री मनस्विजनमोदिता।।८८
मत्तमातंगगा यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया।।८९
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्यूपमालिनी।
रंजिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा।।९०
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी।
राज्ञी रात्रिचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी।।९१
ललिता ललितालापा लोचा ललनलालसा।
लाटीरद्रुममासा च लाटीरद्रुमवर्तिनी।।९२
लंका ललज्जटाजूटा लंघिता सुरसुन्दरी।
लोकेशवरदा लीना लयकर्त्री महालया।।९३
वेदिर्विनग्ना वाणी च वेणा वेणुर्वनेश्वरी।
वंद्यमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका।।९४
शंखिनी शंखवलया शंखायुधधरा शमा।
शशिमंडलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी।।९५
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी शमा।
सिंधुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी।।९६
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्थासुरसूदिनी।
सुरेश्वरी संपदाद्या समस्ताचलचारिणी।।९७
समदा संमसिः संमा सवना सवनेश्वरी।
हंसी हरिप्रिया हास्या हरिनेत्रा हरांबिका।।९८

हेषा हरीश्वरी हीरा हलिनी हलदायिनी।
हे हाहा हारवा हाला हालाहलहताशया।।९९
क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमांबरधराक्षया।
क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्या क्षितिभृत्क्षणदा क्षुधा।।१००
क्षत्रिया ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षंबीजमण्डिता।
लक्ष्यबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका।।१०१
दुर्गाघनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी।
दुर्गादुर्गार्तिनाशिनी, ॐ ह्रीँ दुं बीजमण्डिता।।१०२
इति नामसहस्त्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम्।
दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम्।।१०३
सर्वमंत्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम्।
श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम्।।१०४
यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेत्तथा।
स महापातकैर्मुक्तो देवदानसेवितः।।१०५
इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत्।
दुर्गानामसहस्त्रं तु मूलमंत्रैकसाधनम्।।१०६
अर्द्धरात्रे पठेद्धीरो मधुरं भवसेवितम्।
त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः।।१०७
यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुंतलः।
तस्य वैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति।।१०८
दहनादिव देवेशि पतंगकुलमद्रिजे।
य पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः।।१०९
तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद् गद्यपद्यभाक्।
यः पठेत् सततं देवि शयने स्त्रीरताकुलः।।११०
स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः।
वाग्भिर्वागीशंसदृशः कवित्त्वेन सितोपमः।।१११
तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सोमसंन्निभः।
बलेन वायुतुल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः।।११२

देवि किं बहुनोक्तेन सभवेद् भैरवोपमः।
स्तंभनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकक्षमः॥११३
रवौ भूर्जे लिखेद्देवि निशीथे चाष्टगन्धकैः।
सस्तन्यरेतोराजस्कैः साधको मंत्रसाधकः॥११४
लिखित्त्वा वेष्टयेन्नाम सहस्रमणिमीश्वरि।
श्वेतवस्त्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्॥११५
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः।
संपूज्य गुटिकां देवि शुभाहे साधकोत्तमः॥११६
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां कामदायिनीम्।
रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत्॥११७
वन्ध्या वामभुजे धृत्त्वा कृत्त्वा साधकपूजनम्।
लभते तनयान्देवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान्॥११८
गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा।
साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्दुर्गास्वरूपिणी॥११९
योऽर्चयेत् साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत् प्रिये।
पठेद्वर्म शिवे मन्त्रं नामसाहस्त्रिकं परम्॥१२०
अंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना शृणु।
वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे॥१२१
ग्रहयक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा।
वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत्॥१२२
स्तंभयेद्वायुसूर्यौ च चेन्द्रादीन्साधकोत्तमः।
मोहयेत् त्रिजगत्सद्यः कांताश्चाकर्षयेद्ध्रुवम्॥१२३
मारयेदखिलाञ्छत्रून् रिपूनुच्चाटयेत्तथा।
वशयेद्देवताः सद्यः किं पुनर्मानवाञ्छिवे॥१२४
शमयेदखिलान् रोगान् महोत्पातानुपद्रवान्।
किं किं न लभते वीरो दुर्गा पञ्चाङ्गपूजनात्॥१२५
इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरी।
सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम्॥१२६

महीचानक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम्।
पठेत् संपूजयेद्देव्या मंत्रनामसहस्रकम्।१२७
इदं सारो हि तंत्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम्।
दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्।।१२८
अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमवाप्नुयात्।।१२९
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च।
शांताय भक्तियुक्ताय देयं नाम सहस्रकम्।।१३०
विना दानं न गृह्णीयात् न दद्याद्दक्षिणां विना।
दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद्ध्रुवम्।।१३१
इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।१३२

इति श्री देवीरहस्यतंत्रोक्तं दुर्गाष्टाक्षरनामसहस्रस्तोत्रंसम्पूर्णम्।।



अथ दकारादिदुर्गासहस्रनामस्तोत्रम्

श्री देव्युवाच

मम नाम सहस्रं च शिवपूर्वविनिर्मितम्।
तत्पठ्यतां विधानेन तदा सर्वं भविष्यति।।१
इत्युक्त्वा पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान्।
तदेव नामसाहस्रं दकारादि वरानने।।२
रोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखविनाशकम्।
सर्वासां पूजितं नाम श्री दुर्गा देवता मता।।३
निजबीजं भवेद्बीजं मंत्रं कीलकमुच्यते।
सर्वाशापूरणे देवी विनियोगः प्रकीर्तितः।।४
दुं दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलानिवासिनी।

दुर्गमार्गानुसंचारा दुर्गमार्गनिवासिनी।।५
दुर्गमार्गप्रविष्टा च दुर्गमार्गप्रवेशिनी।
दुर्गा दुर्गमार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया।।६
दुर्गमार्गगृहीतार्चा दुर्गमार्गस्थितात्मिका।
दुर्गमार्गस्तुतिपरादुर्गमार्गस्मृतिः परा।।७
दुर्गमार्गसदास्थली दुर्गमार्गरतिप्रिया।
दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी।।८
दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रादुर्गमार्गप्रवर्तिनी।
दुर्गासुर निहंत्री च दुर्गसुरनिषूदिनी।।९
दुर्गासुरहरा दूती दुर्गासुरविनाशिनी।
दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सुका।।१०
दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता।
दुर्गासुरवधप्रेप्सु दुर्गासुरमखान्तकृत्।।११
दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी।
दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सदा।।१२
दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तनी।
दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तनी।।१३
दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी।
दुर्गदैत्यहरत्राता दुर्गदैत्यासृगुन्मदा।।१४
दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता।
दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशरदा।।१५
दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्ध विमर्दिनी।
दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धाट्टहासिनी।।१६
दुर्गयुद्धामहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी।
दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेश निषेविणी।।१७
दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी।

दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया।।१८
दुर्गमस्थान संस्थाना दुर्गमध्यानुसाधना।
दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी।।१९
दुर्गमागमसंधाना दुर्गमागम संस्तुता।
दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिसंमता।।२०
दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता।
दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा।।२१
दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता।
दुर्गमाचारसंतुष्टा दुर्गमाचरितोषिता।।२२
दुर्गमाचार निर्वृता दुर्गमाचार पूजिता।
दुर्गमाचारकलिता दुर्गमस्थानदायिनी।।२३
दुर्गमप्रेम निरता दुर्गमद्रविणप्रदा।
दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी।।२४
दुर्गनाडीमार्गगतिर्दुर्गनाडीप्रचारिणी।
दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता।।२५
दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा।
दुर्गनाडीरतरता दुर्गनाडीसंस्तुता।।२६
दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता।
दुर्गनाडीक्रोडस्था दुर्गनाडीसंस्तुता।।२७
दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडी निषेविता।
दरिस्थाना दरिस्थानवासिनी दनुजान्तकृत्।।२८
दरीकृततपस्या च दरीकृतहरार्चना।
दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरति क्रिया।।२९
दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडिपुत्रिका।
दरीसंदर्शनरता दरीरोपितवृश्चिका।।३०
दरी गुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा।

दनुजान्तकरी दीना दनुसंतानदारिणी।।३१
दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी।
दानवध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी।।३२
दानवी दानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा।
दानवेन्द्रनिहंत्री च दानवद्वेषिणी सती।।३३
दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता।
दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा।।३४
दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया।
दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा।।३५
दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया।
दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी।।३६
दानवारिधृतप्रेमा दु:खशोकविमोचिनी।
दु:खहन्त्री दु:खदात्री दु:खनिर्मूलकारिणी।।३७
दु:खनिर्मूलनकरी दु:खदार्यरिनाशिनी।
दु:खहरा दुखनाशा दु:खग्रामा दुरासदा।।३८
दु:खहीना दु:खधारा द्रविणाचारदायिनी।
द्रविणोत्सर्गसंतुष्टा द्रविणत्यागतोषिका।।३९
द्रविणस्पर्शसंतुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा।
द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा।।४०
द्रविणस्पर्शकरी द्रविणस्पर्शनातुरा।
द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसधिता।।४१
द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका।
द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी।।४२
द्रविणाकर्षणकरी द्रविणौघविसर्जनी।
द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणचलवासिनी।।४३
दीनमाता दीनबन्धुर्दीनविघ्नविनाशिनी।

दीनसेव्या दीनसिद्धा दीनसाध्या दिगम्बरी।।४४
दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी।
दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी।।४५
दीनमानवचेत:स्था दीनमानवहर्षदा।
दीनदैन्यनिघातेच्छुर्दीनद्रविणदायिनी।।४६
दीनसाधनसंतुष्टा दीनदर्शनदायिनी।
दीनपुत्रादिदात्री च दीनसंपद्विधायिनी।।४७
दत्तात्रेय ध्यानरता दत्तात्रेयप्रपूजिता।
दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धा दत्तात्रेयविभाविता।।४८
दत्तात्रेयकृतार्हा च दत्तात्रेयप्रसाधिता।
दत्तात्रेयहर्षदात्री च दत्तात्रेयसुखप्रदा।।४९
दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा।
दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता।।५०
दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी।
दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी।।५१
दत्तात्रेयकृतानन्दा दत्तात्रेयांशसंभवा।
दत्तात्रेयविभूतिस्था दत्तात्रेयानुसारिणी।।५२
दत्तात्रेयगीतिरता दत्तात्रेयधनप्रदा।
दत्तात्रेयदु:खहरा, दत्तात्रेयवरप्रदा।।५३
दत्तात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा।
देवकन्या देवमान्या देवदु:खविनाशिनी।।५४
देवसिद्धा देवपूज्या देवेज्या देववन्दिता।
देवमान्या देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी।।५५
देवरम्या देवता देवकौतुकतत्परा।
देवक्रीडा देवव्रीडा देववैरिविनाशिनी।।५६
देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी।

देवदेवप्रिया देवी देवदानववन्दिता॥५७
देवदेवरतानन्दा देवदेववरोत्सुका।
देवदेवप्रेमरता देवदेवप्रियंवदा॥५८
देवदेवप्राणतुल्या देवदेवनितम्बिनी।
देवदेवहृतमना देवदेवसुखावहा॥५९
देवदेवक्रोडरता देवदेवसुखप्रदा।
देवदेवमहानन्दा देवदेवप्रचुम्बिता॥६०
देवदेवोपभुक्ता च देवदेवानुसेविता।
देवदेवगतप्राणा देवदेवगतात्मिका॥६१
देवदेवहर्षदात्री देवदेवसुखप्रदा।
देवदेवमहानन्दा देवदेवविलासिनी॥६२
देवदेवधर्मपत्नी देवदेवमनोगता।
देवदेववधू देवदेवार्चनप्रिया॥६३
देवदेवाङ्कनिलया देवदेवाङ्गशायिनी।
देवदेवाङ्गसुखिनी देवदेवाङ्गवासिनी॥६४
देवदेवाङ्गभूषा च देवदेवाङ्गभूषणा।
देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रियान्तकृत्॥६५
देवदेवप्रियप्राणा देवदेवप्रियात्मिका।
देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया॥६६
देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकप्रिया।
देवदेवार्चकाविघ्ना देवदेवप्रसूरपि॥६७
देवदेवस्य जननी देवदेवविधायिनी।
देवदेवस्य रमणी देवदेवहृदाश्रया॥६८
देवदेवेष्ट देवी च देवतापसतापिनी।
देवताभावसंतुष्टा देवताभावतोषिता॥६९
देवताभाववरदा देवताभावसिद्धिदा।

देवताभावसंसिद्धा देवताभावसंभवा॥७०
देवताभावसुखिनी देवताभाववन्दिता।
देवताभावसुप्रीता देवताभावहर्षदा॥७१
देवताविघ्नहंत्री च देवतादिष्टनाशिनी।
देवतापूजितपदा देवताप्रेमतोषिता॥७२
देवतागारनिलया देवतासौख्यदायिनी।
देवतानिजभावा च देवताहृतमानसा॥७३
देवताकृतपादार्चा देवताहृतभक्तिका।
देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतातनुः॥७४
दुँ दुगायै नमो नाम्ना हुँफणमन्त्रस्वरूपिणी।
दूँ नमो मंत्ररूपाच च दूँ नमो मूर्तिकात्मिका॥७५
दूरदर्शिप्रियादुष्टादुष्टभूतनिषेविता।
दूरदर्शिताप्रेमरता दूरदर्शिप्रियंवदा॥७६
दूरदर्शिसिद्धिदात्री दूरदर्शिप्रतोषिता।
दूरदर्शिकण्ठसंस्था दूरदर्शिप्रहर्षिता॥७७
दूरदर्शिगृहीतार्चा दूरदर्शिप्रतर्पिता।
दूरदर्शिप्राणतुल्या दीर्घदर्शिसुखप्रदा॥७८
दूरदर्शिभ्रान्तिहरा दूरदर्शिहृदास्पदा।
दूरदर्श्यरिविद्भावा, दीर्घदर्शिप्रमोदिनी॥७९
दीर्घदर्शिहर्षदात्री दीर्घदर्शिप्रहर्षिता॥८०
दीर्घदर्शिमहानन्दादीर्घदर्शिगृहालया।
दीर्घदर्शिगृहीतार्चा दीर्घदर्शिहृतार्हणा॥८१
दया दानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला।
दयार्द्रा च दयाशीला दयाद्या च दयात्मिका॥८२
दयाम्बुधिर्दयासारा, दयासागरपारगा।
दयासिन्धुर्दयाभारा दयावत्करुणाकरी॥८३

दयावद्वत्सलादेवी दयादानरता सदा।।
दयावद्भक्तिसुखिनीदयावत्परितोषिता।।
दयावत्तारणपरा दयावत् सिद्धिदायिनी।८६
दयावत्पुत्रभावा दयावत्पुत्ररूपिणी।।८७
दयावद्देहनिलया दयाबन्धुर्दयाश्रया।।८८
दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी।
दयालुशरणासक्ता दयालुदेहमन्दिरा।।८९
दयालुभक्तिभावस्था दयालुप्राणरूपिणी।
दयालुसुखदा दम्भा दयालुप्रेमवर्षिणी।।९०
दयालुवशगा दीर्घा दीर्घाङ्गी दीर्घलोचना।
दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घबहुलतात्मिका।।९१
दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दारुणा।
दारुणासुरहंत्री च दारुणासुरदारिणी।।९२
दारुणाहवकर्त्री च दारुणाहवहर्षिता।
दारुणाहवहोमढ्या दारुणचलनाशिनी।।९३
दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता।
दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी।।९४
दारुणेक्षणसंयुक्ता दोष्चतुष्कविराजिता।
दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता।।९५
दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यातविक्रमा।
दाशरथार्चितपदा दाशरथिप्रिया सदा।।९६
दाशरथिप्रेमतुष्टा दाशरथिरतिप्रिया।
दाशरथिप्रियकरी दाशरथिप्रियंवदा।।९७
दाशरथीष्टसंदात्री दाशरथीष्टदेवता।
दाशरथिद्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूलदा।।९८
दाशरथिप्रियतमा दाशरथिप्रपूजिता।

दशाननारिसंपूज्या दशाननारिदेवता।।९९

दशाननारिप्रमदा दशाननारिजन्मभूः।

दशाननारिरतिदा दशाननारिसेविता।।१००

दशाननारिसुखदा दशाननारिवैरिहृत्।

दशाननारीष्टदेवी दशग्रीवारिवंदिता।।१०१

दशग्रीवारिजननी दशग्रीवारिभाविनी।

दशग्रीवारिसहिता दशग्रीवसभाजिता।।१०२

दशग्रीवारिरमणी दशग्रीववधूरपि।

दशग्रीवनाशकर्त्री दशग्रीववरप्रदा।।१०३

दशग्रीवपुरस्था च दशग्रीववधोत्सुका।

दशग्रीवप्रीतिदात्री दशग्रीवविनाशिनी।।१०४

दशग्रीवाहवकरी दशग्रीवानपायिनी।

दशग्रीवप्रिया वन्द्या दशग्रीवहृता तथा।।१०५

दशग्रीवाहितकरी दशग्रीवेश्वरप्रिया।

दशग्रीवेश्वरप्राणा दशग्रीववरप्रदा।।१०६

दशग्रीवेश्वररता दशवर्षीयकन्यका।

दशवर्षीयबाला च दशवर्षीयवासिनी।।१०७

दशपापहरा क्षम्या दशहस्त विभूषिता।

दशशस्त्रलसद्दोष्का दशदिक्पालवंदिता।।१०८

दशावताररूपा च दशावताररूपिणी।

दशविद्याभिन्नदेवी दशप्राणस्वरूपिणी।।१०९

दशविद्यास्वरूपा च दशविद्यामयी तथा।

दृक्स्वरूपा दृक्प्रदात्री दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी।।११०

दिगन्तरा दिगन्तस्था दिगम्बरविलासिनी।

दिगम्बरसमाजस्था दिगम्बरप्रपूजिता।।१११

दिगम्बरसहचरी दिगम्बरकृतास्पदा।

दिगम्बरहतचित्ता दिगम्बरकथाप्रिया।।११२
दिगम्बरगुणरता दिगम्बरस्वरूपिणी।
दिगम्बरशिरोधार्या दिगम्बरहताश्रया।।११३
दिगम्बरप्रेमरता दिगम्बररतातुरा।
दिगम्बरीस्वरूपा च दिगम्बरीगणार्चिता।।११४
दिगम्बरीगणप्राणा दिगम्बरीगणप्रिया।
दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरी।।११५
दिगम्बरगणस्पर्शामदिरामानविह्वला।
दिगम्बरीकोटिवृता दिगम्बरीगणावृता।।११६
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा।
दुरन्तदानवद्वेष्टी दुरन्तदनुजातन्तकृत्।।११७
दुरन्तपापहन्त्री च दस्रनिरतारकारिणी।
दस्रमानससंस्थाना दस्रज्ञानविवर्धिनी।।११८
दस्रसंभोगजननी दस्रसंभोगदायिनी।
दस्रसंभोगभवना दस्रविद्याविधायिनी।।११९
दस्रोद्वेगहरा दस्रजननी दस्रसुन्दरी।
दस्रभक्तिविधाज्ञाना दस्रदिृष्टविनाशिनी।।१२०
दस्रापकारदमनी दस्रसिद्धिविधायिनी।
दस्रताराराधिता च दस्रमातृप्रपूजिता।।१२१
दस्रदैन्यहरा चैव दस्रताततनिषेविता।
दस्रपितृशतज्योतिर्दस्रकौशलदायिनी।।१२२
दशशीर्षारिसहिता दशशीर्षारिकामिनी।
दशशीर्षपुरी देवी दशशीर्षसमानिता ।।१२३
दशशीर्षारिसुप्रीता दशशीर्षवधूप्रिया।
दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी।।१२४
दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्षहरात्मिका।

दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षारिवंदिता।।१२५
दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी।
दशशीर्षज्ञानदात्री दशशीर्षारिदेहिनी।।१२६
दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्ररूपता।
दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारणी।।१२७
दशशीर्षभ्रातृतुष्टा दशशीर्षवधूप्रिया।
दशशीर्षवधूप्राणा दशशीर्षवधूरता।।१२८
दैत्यगुरुरता साध्वी दैत्यगुरुप्रपूजिता।
दैत्यगुरूपदेष्ट्री च दैत्यगुरुनिषेविता।।१२९
दैत्यगुरुगतप्राणा दैत्यगुरुतापनाशिनी।
दुरन्तदु:खशमनी दुरन्तदमनी तमी।।१३०
दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिकी।
दुरन्तवैरिदमनी दुरन्तदैत्यनाशिनी।।१३१
दुरन्तकलुषघ्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी।
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी।।१३२
दर्शनीया च दृश्याच दृश्या च दृष्टिगोचरा।
दूतीयागप्रिया दूती दूतीयागकरप्रिया।।१३३
दूतीयागकरानन्दा दूतीयागसुखप्रदा।
दूतीयागकरायातादूतीयागप्रमोदिनी।।१३४
दुर्वास:पूजिता चैव दुर्वासोमुनिभाविता।
दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमुनभाविता।।१३५
दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता।
दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनिसिद्धिदा।।१३६
दुर्वासोनुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता।
दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता।।१३७
दुर्वासोमुनिसंचारा दुर्वासोहृदयंगमा।

दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा।।१३८
दुर्वासस्तपसाराध्या दुर्वासस्तपसाश्रया।
दुर्वासस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी।।१३९
दुर्वासोमुनिकन्या दुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदा।
दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा।।१४०
दरघ्नी दरहन्त्री दरयुक्ता दराश्रया।।१४१
दरस्मेरा दरापांगी दया दात्री दयाश्रया।
दस्रपूज्या दस्रमाता दस्रदेवी दुरोन्मदा।।१४२
दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रतापविमोचिनी।
दस्रमोक्षहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका।।१४३
दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या दैत्यगुर्वंनाप्रिया।
दैत्यगुर्वंगनासिद्धा दैत्यगुर्वंगनोत्सुका।।१४४
दैत्यगुरुप्रियतमा देवगुरुनिषेविता।
देवगुरुप्रसूरूपा देवगुरुकृतार्हणा।।१४५
देवगुरुप्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता।
देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा।।१४६
देवगुरुज्ञानदात्री देवगुरुप्रमोदिनी।
दैत्यस्त्रीगणसंपूज्या दैत्यस्त्रीगणपूजिता।।१४७
दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणि।
देवस्त्रीगणपूज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता।।१४८
देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता।
देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता।।१४९
देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुचामरवीजिता।
देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपिता।।१५०
देवांगनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमाः।
देवांगनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका।।१५१

देवस्त्रीगणहस्तस्थदीपमालाविलोकना।
देवीस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी।।१५२
देवनारीकरगतवासकासवपाथिनी।
देवनारीकङ्कतिकाकृतकेशनिमार्जना।।१५३
देवनारीसेव्यगात्रा देवनारीकृतोत्सुका।
देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजिता।।१५४
देवनारीविचित्रांगी देवस्त्रीदत्तभोजना।
देवस्त्रीगणगीताच देवस्त्रीगीतोत्सुका।।१५५
देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यदर्शिनी।
देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादूपदाम्बुजा।।१५६
देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्प निषेदुषी।
देवनारीचारुकराकलितांघ्र्यादिदेहिका।।१५७
देवनारीकरव्यग्रतालवृन्तमरुत्सुखा।
देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा।।१५८
देवकोटिस्तुतिनुता देवकोटिकृतार्हणा।
देवनारीगीतगुणादेवकोटिकृतस्तुतिः।।१५९
दन्तदष्ट्योद्वेगफला देवकोलाकुला।
द्वेषरागपरित्यक्ता द्वेषरागविवर्जिता।।१६०
दामपूज्या दामभूषा दामोदरविलासिनी।
दामोदरप्रेमरता दामोदरभगन्यपि।।१६१
दामोदराभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा।
दामोदराभिन्नदेहा दामोदररतिप्रिया।।१६२
दामोदराभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा।
दामोदरकृतप्राणा दामोदरगतात्मिका।।१६३
दामोदरकौतुकाढ्या दामोदरकलाकला।
दामोदरालिंगितांगी दामोदरकुतूहला।।१६४

दामोदरकृताह्लादा दामोदरसुचुम्बिता।
दामोदरसुता कृष्टा दामोदरसुखप्रदा।।१६५
दामोदरसहाढ्या च दामोदरसहायिनी।
दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा।।१६६
दामोदरानुकूला च दामोदरनितम्बिनी।
दामोदरजलक्रीडाकुशला दर्शनप्रिया।।१६७
दामोदरजलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदा
दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिनी तथा।।१६८
दामोदरभ्रातृका च दामोदरपरायणा
दामोदरधरा दामोदरवैरिविनाशिनी।।१६९
दामोदरोपजाया च दामोदरनिमंत्रिता
दामोदरपराभूता दामोदरपराजिता।।१७०
दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा
दामोदरोत्सवरता दामोदरोत्सवावहा।।१७१
दामोदरस्तन्दात्री दामोदरगवेषिता
दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयन्तीप्रसाधिता।।१७२
दमयन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्वरूपिणी
दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिभाविता।।१७३
दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी
दमनर्षिस्वरूपाच दम्भपूरितविग्रहा।।१७४
दम्भहन्त्री दम्भधात्री दम्भलोकविमोहिनी
दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परमर्दिनी।।१७५
दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसन्तानदारिणी
दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तारोग्या च दाम्भिका।।१७६
दत्तपुत्रा दत्तदारादत्तहारा च दारिका
दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना।।१७७

दत्तयतिर्दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका
दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्‌यनाशिनी।।१७८
दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गा च दासदा
दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासी शतप्रदा।।१७९
दाररूपा दारवासा दारवसिहृदास्पदा
दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया।।१८०
दारवासिविनिर्मिता दारवासिसमर्चिता
दारवास्याहतप्राणा दारवास्यारिनाशिनी।।१८१
दारवासिविघ्नहरा दारवासिविमुक्तिदा
दाराग्निरूपिणी दारा दारकार्यरिनाशिनी।।१८२
दम्पती दम्पतीष्टा दम्पतिप्राणरूपिका
दम्पतीस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनाप्रिया१८३
दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी
दाम्पत्याचारनिरता दम्पत्यामोदमोदिता।।१८४
दाम्पत्यामोदसुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी
दम्पतीष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी।।१८५
दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी
दाडिमीफलसंतुष्टा दाडिमीफलमानसा।।१८६
दाडिमीवृत्रसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी
दाडिमीवृक्षरूपा दाडिमीवनवासिनी।।१८७
दाडिमीफलसाम्योरूपयोधरसमान्विता
दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी।।१८८
दशकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः
दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी।।१८९
दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी
दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी।।१९०

दक्षात्मजा दक्षसूनुर्दक्षजा दक्षजातिका
दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा।।१९१
दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी ;दक्षकन्यका
दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा।।१९२
दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता
दक्षिणाचारसुखिनी दक्षिणाचारसाधिता।।१९३
दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्दक्षिणाचारवन्दिता
दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता।।१९४
द्वारपाल प्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता
द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी।।१९५
द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता
दोषाकरा दोषहरा दोषराशि विनाशिनी।।१९६
दोषाकर विभूषाढ्या दोषाकरकपालिनी
दोषाकर सहस्राभा दोषाकरसमानना।।१९७
दोषाकरमुखी दिव्या दोषाकरकराग्रजा
दोषाकरसमज्योतिर्दोषाकरसुशीतला।।१९८
दोषाकरश्रेणिदोषसदृशायांगवीक्षणा
दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता।।१९९
दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका
दोषाकरोल्लसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी।।२००
दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया
दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूमता।।२०१
दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरपि
दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी।।२०२
दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा
दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी।।२०३
दोषापूजकवात्सल्यकारिणी जगदम्बिका
दोषापूजक वैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत्।।२०४

दोषापूजकसंतुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा
दमनप्रसूनसंपूज्या दमपुष्पप्रियासदा॥२०५
दुर्योधनप्रपूज्या च दुःशासनसमर्चिता
दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधिः॥२०६
दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता
दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा॥२०७
दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोहरा
दण्डपाणिहृतप्राणा दण्डपाणिसुसिद्धिदा॥२०८
दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता
दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता॥२०९
दण्डपाणिप्राप्तचर्चा दण्डपाण्युन्मुखी सदा
दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखी॥२१०
दण्ड हस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत्
दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा॥२११
दण्डिविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी
दण्डप्रिया दण्डिगज्या दण्डिसंतोदायिनी॥२१२
दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी
दस्युवर्गकृतार्हा च दस्युवर्गविनाशनी॥२१३
दस्युनिर्णाशिनी दस्युकुलनिर्णाशिनी तथा
दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा॥२१४
दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राणिणी तथा
दुष्टवर्गनिग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी॥२१५
दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी
दूषकद्वेषणकरी दाहिकादहनात्मिका॥२१६
दारुकारिनिहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता
दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवंदिता॥२१७
दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता

दर्भमयी दर्भतनुर्दर्भसर्वस्वरूपिणी॥२१८
दर्भकर्माचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा
दर्भानुकूलादर्भार्यादर्वीपात्रानुदामिनी॥२१९
दमघोषप्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा
दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी॥२२०
दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्णाशितमहाबला
दन्तदंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका॥२२१
दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तिनिर्णाशितासुरा
दधिपूज्यादधिप्रीता दधीचिवरदायिनी॥२२२
दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी
दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी॥२२३
दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता
दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी॥२२४
दधीचिकुलसंभूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा
दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता॥२२५
दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता
दधीचिसुखदात्री च दधीचिदैन्यहारिणी॥२२६
दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी
दधीचिकुलसंभूता दधीचिकुलपालिनी॥२२७
दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी।
दधीचिदानसंतुष्टा दधीचिदानदेवता॥२२८
दधीचिजपसंप्रीता दधीचिजपमानसा।
दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका॥२२९
दधीचिजपसंतुष्टा दधीचिजपतोषिणी।
दधीचितपसाराध्या दधीचिशुभदायिनी॥२३०
दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युतिः।२३१

नाम्नां सहस्रं दुर्गाया: दादीनामिति कीर्तितम्।
य: पठेत् साधकाधीश: सर्वसिद्धिर्लभेत्तु स:।।२३२
प्रातर्मध्याह्नकाले च संध्यायां नियत: शुचि:।
तथाऽर्धरात्रसमये स महेशइवापर:।।२३३
शक्तियुक्तो महारात्रौ महावीर: प्रपूजयेत्।
महादेवीं मकाराद्यै: पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमै:।।२३४
य: संपठेत् स्तुतिमिमां स च सिद्धिस्वरूपधृक्।
देवालये श्मशाने च गंगातीरे निजे गृहे।।२३५
वारांगनागृहे चैव श्री गुरो: सन्निधावपि
पर्वते प्रान्तरे घोरे स्तोत्रमेतत्सदा पठेत्।।२३६
दुर्गानामसहस्रं हि दुर्गां पश्यति चक्षुषा।
शतावर्तनमेतस्य पुरश्चरणमुच्यते
स्तुतिसारो निगदित: किं भूय: श्रोतुमिच्छसि।।२३७

इति कुलावर्णोक्तदकारादिदुर्गासहस्रनामस्तोत्रम्।।

अथ श्रीदुर्गाकवचम्

श्री भैरव उवाच।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मंत्रगर्भकम्
दुर्गाया: सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम्।।१
परमार्थप्रदं नित्यं महापातक नाशनम्
योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम्।।२
विना दानेन मंत्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायक:।।३
भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी जगानन:।।४
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभ: प्रिये
सूर्यस्तमोपहो लोके चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा।।५
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्

मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मंत्रसाधकः।।६।।
कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता।।७।।
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता।।८
ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीँ मे पातु ललाटकम्
दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम।।९
मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला
वायुर्नासांसदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी।।१०
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी
भेकीबीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका।।११।।
ह्रीँ श्रीँ पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्कवासिनी।
ऊँ ऐँ क्लीँ पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी।।१२
ऊँ सौः क्लीँ मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी।
ऐँ श्रीँ ह्रीँ पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी।।१३।।
सौः ऐँ ह्रीँ पातु में वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा।।१४
श्रीँ ह्रीँ ऐँ पातु मे पार्श्वौं हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीँ हूँ ऐँ पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी।।१५
ॐ क्रीँ हूँ पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐँ क्लीँ सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम।।१६
ॐ ह्रीँ श्रीँ पातु शिश्नं मे देवी श्रीबगलामुखी।
ऐँ सौः क्लीँ सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता।।१७
ॐ ह्रीँ ऐँ श्रीँ ह्सौः पायादूरू मम मनोन्मना।
ॐ जूँ सः सौः पातु जानु जगदीश्वरपूजिता।।१८
ॐ ऐँ क्लीँ पातु मे जङ्घे मेरुपर्वतवासिनी।
ॐ ह्रीँ श्रीँ गीँ सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी।।१९
ॐ ह्रीँ दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ च वैष्णवी तथा।।२०

दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मेऽपराजिता।।२१
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा।।२२
प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका।।२३
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका
वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना।।२४
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना
रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद्भूतेशबल्लभा।।२५।।
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा।।२६
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीँ दुर्गा नवाक्षरा।
इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम्।।२७।।
मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम्
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ।।२८
वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम्
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्।।२९
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम्
अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम्।।३०
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचमन्त्रसिद्धिदम्
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे।।३१
रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान् कृत्त्वा कर्माह्निकं प्रिये
श्रीचक्राग्रेऽष्टगंधेन साधको मंत्रसिद्धये।।३२
लिखित्त्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्
किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्।।३३
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत्
धनार्थी धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले।।३४
तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्त्वा भूर्जपत्रके
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्।।३५

सुवर्णेनाथ संवेष्ट्यधारयेद्रक्तरज्जुना
गुटिका कामदादेवी देवानामपि दुर्लभा।।३६।।
कवचस्यास्य गुटिकां धृत्त्वा मुक्तिप्रदायिनीम्
कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते।।३७
महिमानं महादेवि जिह्वकोटिशतैरपि
अदातव्यमिदं वर्म मंत्रगर्भं रहस्यकम्।।३८
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम्
अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने।।३९
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम्
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च।।४०
शांताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलवासिने
इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः।।४१
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्
गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।४२

।।इति देवीरहस्यतंत्रोक्तं श्रीदुर्गाकवचम्।।

अथ ब्रह्माण्डमोहनाख्यं दुर्गाकवचम्

नारद उवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद।
ब्रह्माण्डमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद।।१

नारायण उवाच

श्रृणु वक्ष्यामि हे वत्सः कवचं च सुदुर्लभम्।
श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा।।२
ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे।
धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा।।३
त्रिपुरारिश्चि यद्धृत्त्वा जघान त्रिपुरं पुरा।
मुमोच ब्रह्मा यद्धृत्त्वा मधुकैटभयोर्भयात्।।४
सञ्जहार रक्तबीजं यद्धृत्त्वा भद्रकालिका।

यद्धृत्त्वा हि महेन्द्रश्च संप्राप कमलालयाम्।।५।।
यद्धृत्त्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयङ्करः।
यद्धृत्त्वा शिवतुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः।।६
ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तः स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु।
मंत्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः।।७
विचारो नास्ति वेदेच ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने।
मन्त्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः।।८
मम वक्त्रं सदापातु ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः।
ॐ दुर्गेच इति कण्ठं मंत्रः पातु सदा मम।।९
ॐ ह्रीँ श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कन्धं पातु निरन्तरम्।
ह्रीँ श्रीँ क्लीमिति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा।।१०
ह्रीँ मे वक्षस्थलं पातु हँ सँ श्रीमिति सन्ततम्।
ऐँ श्रीँ ह्रीँ पातु सर्वाङ्गं स्वप्ने जागरणे सदा।।११
प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका।
दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी।।१२
वारूण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमङ्गला।
उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया।।१३
जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका।
इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम्।।१४
यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालङ्कारचन्दनैः।।१५।।
कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः।
स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे।।१६
यत्फलं लभते लोकस्तदेद्धारणे मुने।
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद्ध्रुवम्।।१७
लोकश्च सिद्धकवचो नावसीदति संकटे।

न तस्य मृत्युर्भवति जले वह्नौ विषे ज्वरे।।१८
जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि सर्वसिद्धीश्वरीश्वरम्।
यदि स्यात् सिद्धकवचो विष्णुतुल्यो भवेद् ध्रुवम्।।१९

इति ब्रह्मवैवर्तप्रकृतिखण्डान्तर्गतदुर्गाकवचं सम्पूर्णम्।।

↔↔↔

अथ चण्डिका मालामंत्रः

ॐ अस्य श्री चण्डिकामालामंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः, श्रीचण्डिका देवता ॐ ह्रः बीजम्, ॐ सौः शक्तिः ॐ ह्रौँ कीलकम्, मम चण्डिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचण्डिकामालामंत्रजपे विनियोगः।

ॐ ह्रामित्यादयः षडङ्गन्यासाः।

''अथ ध्यानम्''

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलाम्,
मालादामविभूषितामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः।
श्रीँ ह्रीँ क्लीँ वरमंत्रराजसहितामानन्दपूर्णात्मिकाम्,
श्रीशैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे।।

मानसोपचार या यथासामर्थ्य पूजन।

अथ मंत्रः–

ॐ ह्रः ॐ सौँ ॐ ह्रौँ ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ श्री जय जय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महिकृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासाद्धवलिकृतदिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीये भूतवेतालपरिवृते प्रकम्पिधराधरे मधुकैटभमहिषासुरधूम्रलोचन–चण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भदैत्यनिकृन्ते कालरात्रिमाहमाये शिवे नित्ये ॐ ऐँ ह्रीँ ऐन्द्रि आग्नेयि नैऋति वारुणि वायव्ये कौबेरि ईशान्ये ब्रह्मविष्णुशिवस्थिते

त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवी-वाराहीन्द्राणीईशानीमहालक्ष्मी इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणिमुकुट-रत्नमहाज्वालामलमणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमाङ्गनवरत्ननिधिकोटितत्त्वबाहुजिह्वावाणी शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मिके, क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्वल महाविषोपविषगन्धर्वविद्याधराधिपते। ॐ ऐँकारा ॐ ह्रीँकारा ॐ क्लीँकारा हस्ते ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ अनग्नेऽनग्ने पाते प्रवेशय प्रवेशय ॐ द्राँ द्रीँ शोषय-२ ॐ द्रीँ द्रीँ होमय ॐ क्लाँ क्लाँ दीपय ॐ ब्लूँ ब्लूँ संतापय २ ॐ सौँ सौँ उन्मादय ॐ म्लैँ म्लैँ मोहय ॐ खाँ खाँ शोधय२ ॐ द्याँ द्याँ उन्मादय२ ॐ हीँ हीँ आवेशय२ ॐ स्त्रीँ स्त्रीँ उच्छादय २ ॐ स्त्रीँ स्त्रीँ आकर्षय २ ॐ हुँ हुँ आस्फोटय२ ॐ त्रूँ त्रूँ त्रोटय२ ॐ छाँ छाँ छेदय ॐ कूँ कूँ उच्चाटय २ ॐ हूँ हूँ हन २ ॐ ह्लीँ ह्लीँ मारय २ ॐ घ्रीँ घ्रीँ घर्षय २ ॐ स्वीँ स्वीँ विध्वंसय २ ॐ प्लूँ प्लूँ प्लावय २ ॐ भ्राँ भ्राँ भ्रामय २ ॐ म्राँ म्राँ दर्शय २ ॐ दाँ दाँ दिशो बन्धय२ ॐ दीँ दीँ वर्तिनामेकाग्रचिता विशिकुरुतेङ्गये ॐ हाँ ह्रीँ हूँ ह्रौँ हैँ ह्वः ॐ फ्राँ फ्रीँ फ्रूँ फ्रैँ फ्रौँ फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय २ अमुकं वशं कुरु भूतप्रेतपिशाचब्रह्मपिशाच-ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनीडाकिनीसर्पश्वापदत-स्करादिकं नाशय२ मारय२ भञ्जय२ ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वाहा।

इसका सुवासिनी कुमारी का पूजन करके नित्य १२१ बार जप करना चाहिए। इस प्रकार जप करने पर स्त्री या पुरुष राजद्वार, श्मशान,विवाद, शत्रुसंकट, उच्चाटन संबंधी सभी कार्य अपने अनुसार कर सकता है।

इति अथर्वणागमसंहितोक्तश्रीचण्डिकामन्त्रनिरूपणम्।।

अथ रुद्रचण्डीपाठः

श्री शङ्कर उवाच

चण्डिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि।
अनन्तफलमाप्नतो देवि चण्डीप्रसादतः।।१
रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम्।
नवावृत्तिफलं तस्य जायते नात्र संशयः।।२
सोमवारे यदा चण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः:।
सहस्त्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते।।३
कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम्।
शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं ध्रुवम्।।४
गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम्।
शुक्रे देवी जगद्धात्री चण्डीपाठे न शाङ्करि।।५
ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चण्डि समाहितः।
शनिवारे जगद्धात्रि कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम्।।६
अत एव महेश्वानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत्।
स सद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत्।।७
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम्।
पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः।।८
धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्नविंभूषणम्।
चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी।।९
घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता।।१०
रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी।
तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा।।११
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका।।१२

शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशा गणभूषिता।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी।।१३
श्रीविद्या परमा विद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी।
दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका।।१४
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी।।१५
रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा।
भारणी भद्रकाली च शिवा घोरभयानका।।१६
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा।
मङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धभयङ्करी।।१७
विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा।
तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्माया मनोहरा।।१८
तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१९
इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत्।
नान्यांस्तु पाठयेद्देवि पठने ब्रह्महाभवेत्।।२०
यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः।
ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम्।।२१
श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम्।
तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातृगमनपातकम्।।२२
सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रजायते।
परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।।२३
जन्मजन्मान्तरात्पापाद्गुरुहत्यादिपातकम्।
मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसंगमात्।।२४
मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने।
मिथ्यायाश्चैव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात्।।२५

श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले।
स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत्।।२६
यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचण्डिकाम्।
पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत्।।२७
अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः।
रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै।।२८
शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै।
ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठायां जायते कृमिः।।२९
शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः।
गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वरागतः।।३०
प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे।
तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे।।३१
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम्।
तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः।।३२
भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः।
भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः।।३३
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः।
प्रेतवद्देवि विश्वेशिभकारः प्रतेवत्सदा।।३४
आरोग्यं जयं पुण्यं नातः सुखविवर्धनम्।
धनं पुत्रजरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम्।।३५
अर्द्धांगरोगान्मुच्येत दद्रुरोगाच्च पार्वति।
सत्यं सत्यं जगद्धात्रि महामाये शिवे शिवे।।३६
चण्डे चण्डि महारात्रे चण्डिका व्याधिनाशिनी।
मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी।।३७
सर्वदुःखाद्विमुच्येत भक्तया चण्डीं शृणोति यः।
ब्राह्मणो हितकारी च पठेन्नियतमानसः।।३८
मंगलं मंगलं ज्ञेयं मंगलं जयमंगलम्।

भवेद्धि हि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः।।३९
तत्त्वज्ञानेन निधनकाले निर्वाणमाप्नुयात्।
मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा।।४०
चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद्ब्राह्मणोऽपि च।
निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः।।४१
सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद्ग्रहदोषतः।
मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत्।।४२।।
महाचण्डी शिवा घोरा महाभीमा भयानका।
काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी।।४३
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा।
देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसंमता।।४४
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी।
मत्स्याप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया।।४५
मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता।
महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा।।४६
वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवर्द्धिनी।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविपदनाशिनी।।४७
इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य।
चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमंदिरं किल।।४८
जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले।
रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले।।४९
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्रमुखसमन्विता।।५०
शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता।
भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी।।५१
सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी।।५२
कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी।
अतिमंत्रा महालज्जा सर्वमंगलदायिनी।।५३
घोरतंत्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा।

मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा।।५४
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगार्द्रैरपि सेविता।
भयानका महादेवी महादु:खविनाशिनी।।५५
चण्डिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा।
वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता।।५६
माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता।
चामुण्डा नारसिंही च नृसिंहशत्रुमर्दिनी।।५७
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी।
इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।५८
नैव शोकं नैव रोगं नैव दु:खं भयं तथा।
आरोग्यं मंगलं नित्यं करोति शुभमंगलम्।।५९
महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्यमुत्तमम्।
अभक्तायन दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम्।।६०
तव भक्ताय शांताय शिवविष्णुप्रियाय च।
दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि।।६१
अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादत:।
अश्वमेधवाजपेयराजसूयशतानि च।।६२
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवता:।
दुर्गेयं मृण्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम्।।६३
मंत्रमक्षरसंज्ञानं करोत्यपि नराधम:।
अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ।।६४
लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनाच्छ्रवणात्तु य:।
तत्त्वमस्यादिवाक्येन मुक्तिं प्राप्नोति दुर्लभाम्।।६५

।।इति रुद्रयामलोक्तश्रीरुद्रचण्डीनिरूपणम्।।

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।

पाठमात्रेण संसिद्ध्येत कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुंण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूं क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः।।४।।

अथ मन्त्रः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा।

।।इति मन्त्रः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।

नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः।।१।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः।।२।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।

ऐँकारी सृष्टिरूपायै ह्रीँकारी प्रतिपालिका स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

क्लीँकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥५॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥५॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

धाँ धीँ धूँ धूर्जटेः पत्नी वाँ वीँ वूँ वागधीश्वरी

क्राँ क्रीँ क्रूँ कालिका देवि शाँ शीँ शूँ मे शुभं कुरु स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय

ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौं ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

भ्राँ भ्रीँ भ्रूँ भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

अँ कँ चँ टँ तँ पँ यँ शं वीँ दुं ऐँ वीँ हँ क्षँ

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।

पाँ पीँ पूँ पार्वती पूर्णा खाँ खीँ खूँ खेचरी तथा स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा साँ सीँ सूँ सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुं ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुं क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।

अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौँ हुँ क्लीँ जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हँ सँ लँ क्षँ फट् स्वाहा–

यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।

न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा स्वाहा फट् क्षँ लँ सँ हँ ज्वल विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ प्रज्वल प्रज्वल ज्वल ज्वल ज्वालय ज्वालय सः जूँ क्लीँ हुँ ग्लौँ ॐ। विच्चे चामुण्डायै क्लीँ ह्रीँ ऐँ ॐ नमः।।

।।इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

....

।। दुर्गासप्तशती बीजाक्षराणि ।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चै १०८।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि।।

तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।।

ॐ ऐँ श्रीँ नमः १ ॐ ऐँ ह्रीँ नमः २ ॐ ऐँक्लीँ नमः ३

ॐ ऐँश्रीँ नमः ४ ॐ ऐँप्रीँ नमः ५ ॐ ऐँह्राँ नमः ६

ॐ ऐँह्रीँ नमः ७ ॐ ऐँस्रौँ नमः ८ ॐ ऐँप्रेँ नमः ९

ॐ ऐँम्रीँ नमः १० ॐ ऐँह्ल्रीं नमः ११ ॐ ऐँम्लीं नमः १२

ॐ ऐँस्त्रीँ नमः १३ ॐ ऐँक्राँ नमः १४ ॐ ऐँह्स्लीँ नमः १५

ॐ ऐँक्रीँ नमः १६ ॐ ऐँचाँ नमः १७ ॐ ऐँभेँन नमः १८

ॐ ऐँक्रीँ नमः १९ ॐ ऐँवैँ नमः २० ॐ ऐँह्रौँ नमः २१

ॐ ऐँयुँ नमः २२ ॐ ऐँजुँ नमः २३ ॐ ऐँहँ नमः २४

ॐ ऐँशँ नमः २५ ॐ ऐँरौँ नमः २६ ॐ ऐँयँ नमः २७

ॐ ऐँविँ नमः २८ ॐ ऐँवैँ नमः २९ ॐ ऐँचेँ नमः ३०
ॐ ऐँह्रीँ नमः ३१ ॐ ऐँक्रूँ नमः ३२ ॐ ऐँसँ नमः ३३
ॐ ऐँकँ नमः ३४ ॐ ऐँश्राँ नमः ३५ ॐ ऐँत्रोँ नमः ३६
ॐ ऐँस्त्राँ नमः ३७ ॐ ऐँज्यँ नमः ३८ ॐ ऐँरौँ नमः ३९
ॐ ऐँद्राँ नमः ४० ॐ ऐँद्रोँ नमः ४१ ॐ ऐँह्राँ नमः ४२
ॐ ऐँदूँ नमः ४३ ॐ ऐँशाँ नमः ४४ ॐ ऐँमीँ नमः ४५
ॐ ऐँश्रौँ नमः ४६ ॐ ऐँजुँ नमः ४७ ॐ ऐँहल्रुँ नमः ४८
ॐ ऐँश्रूँ नमः ४९ ॐ ऐँप्रीँ नमः ५० ॐ ऐँरँ नमः ५१
ॐ ऐँवँ नमः ५२ ॐ ऐँव्री नमः ५३ ॐ ऐँल्लँ नमः ५४
ॐ ऐँस्त्रौँ नमः ५५ ॐ ऐँल्वाँ नमः ५६ ॐ ऐँलूँ नमः ५७
ॐ ऐँसाँ नमः ५८ ॐ ऐँरौँ नमः ५९ ॐ ऐँहौँ नमः ६०
ॐ ऐँक्रूँ नमः ६१ ॐ ऐँशौँ नमः ६२ ॐ ऐँश्रौँ नमः ६३
ॐ ऐँव नमः ६४ ॐ ऐँत्रूँ नमः ६५ ॐ ऐँक्रौँ नमः ६६
ॐ ऐँक्लूँ नमः ६७ ॐ ऐँक्लीँ नमः ६८ ॐ ऐँश्रीँ नमः ६९
ॐ ऐँव्लूँ नमः ७० ॐ ऐँठाँ नमः ७१ ॐ ऐँठ्रीँ नमः ७२
ॐ ऐँस्त्राँ नमः ७३ ॐ ऐँस्लूँ नमः ७४ ॐ ऐँक्रैँ नमः ७५
ॐ ऐँच्राँ नमः ७६ ॐ ऐँफ्राँ नमः ७७ ॐ ऐँजीँ नमः ७८
ॐ ऐँलूँ नमः ७९ ॐ ऐँस्लूँ नमः ८० ॐ ऐँनोँ नमः ८१
ॐ ऐँस्त्रीँ नमः ८२ ॐ ऐँप्रूँ नमः ८३ ॐ ऐँस्रूँ नमः ८४
ॐ ऐँज्राँ नमः ८५ ॐ ऐँवाँ नमः ८६ ॐ ऐँओँ नमः ८७
ॐ ऐँश्रौँ नमः ८८ ॐ ऐँऋँ नमः ८९ ॐ ऐँरूँ नमः ९०
ॐ ऐँक्लीँ नमः ९१ ॐ ऐँदुँ नमः ९२ ॐ ऐँह्रीँ नमः ९३
ॐ ऐँगूँ नमः ९४ ॐ ऐँलाँ नमः ९५ ॐ ऐँह्राँ नमः ९६
ॐ ऐँगँ नमः ९७ ॐ ऐँऐँ नमः ९८ ॐ ऐँश्रौँ नमः ९९
ॐ ऐँजूँ नमः १०० ॐ ऐँडेँ नमः १०१ ॐ ऐँश्रौँ नमः १०२
ॐ ऐँछ्राँ नमः १०३ ॐ ऐँक्लीँ नमः १०४

॥इति प्रथमोऽध्याय:॥१॥

ॐ ऐँश्रौँ नम: १ ॐ ऐँश्रीँ नम: २ ॐ ऐँह्सूँ नम: ३
ॐ ऐँहौँ नम: ४ ॐ ऐँह्रीँ नम: ५ ॐ ऐँअँ नम: ६
ॐ ऐँक्लीँ नम: ७ ॐ ऐँचाँ नम: ८ ॐ ऐँमु नम: ९
ॐ ऐँडाँ नम: १० ॐ ऐँयैँ नम: ११ ॐ ऐँविं नम: १२
ॐ ऐँच्चेँ नम: १३ ॐ ऐँईं नम: १४ ॐ ऐँसौँ नम: १५
ॐ ऐँव्राँ नम: १६ ॐ ऐँत्रौँ नम: १७ ॐ ऐँलँ नम: १८
ॐ ऐँवँ नम: १९ ॐ ऐँह्राँ नम: २० ॐ ऐँक्रीँ नम: २१
ॐ ऐँसौँ नम: २२ ॐ ऐँयँ नम: २३ ॐ ऐँऐँ नम: २४
ॐ ऐँमूँ नम: २५ ॐ ऐँस: नम: २६ ॐ ऐँहँ नम: २७
ॐ ऐँसँ नम: २८ ॐ ऐँसोँ नम: २९ ॐ ऐँशँ नम: ३०
ॐ ऐँहँ नम: ३१ ॐ ऐँह्रौँ नम: ३२ ॐ ऐँम्लीँ नम: ३३
ॐ ऐँयूँ नम: ३४ ॐ ऐँत्रँ नम: ३५ ॐ ऐँस्त्रीं नम: ३६
ॐ ऐँ आँ नम: ३७ ॐ ऐँप्रेँ नम: ३८ ॐ ऐँशँ नम: ३९
ॐ ऐँह्राँ नम: ४० ॐ ऐँस्मँ नम: ४१ ॐ ऐँऊँ नम: ४२
ॐ ऐँगूँ नम: ४३ ॐ ऐँव्यूँ नम: ४४ ॐ ऐँहूँ नम: ४५
ॐ ऐँभैँ नम: ४६ ॐ ऐँह्राँ नम: ४७ ॐ ऐँक्रूँ नम: ४८
ॐ ऐँमूँ नम: ४९ ॐ ऐँल्री नम: ५० ॐ ऐँश्राँ नम: ५१
ॐ ऐँद्रूँ नम: ५२ ॐ एद्व्रँ नम: ५३ ॐ ऐँह्सौँ नम: ५४
ॐ ऐँक्राँ नम: ५५ ॐ ऐँस्हौँ नम: ५६ ॐ ऐँम्लूँ नम: ५७
ॐ ऐँश्रीँ नम: ५८ ॐ ऐँगैँ नम: ५९ ॐ ऐँक्रूँ नम: ६०
ॐ ऐँत्रीँ नम: ६१ ॐ ऐँक्स्त्रीँ नम: ६२ ॐ ऐँकँ नम: ६३
ॐ ऐँफ्रोँ नम: ६४ ॐ ऐँह्रीँ नम: ६५ ॐ ऐँशाँ नम: ६६
ॐ ऐँक्ष्म्रीँ नम: ६७ ॐ ऐँरोँ नम: ६८ ॐ ऐँडुं नम: ६९

॥ इति द्वितीयोऽध्याय:॥२॥

ॐ ऐँश्रौँ नम: १ ॐ ऐँक्लीँ नम: २ ॐ ऐँसाँ नम: ३

ॐ ऐँत्रो ँ नमः ४ ॐ ऐँप्रू नमः ५ ॐ ऐँग्लौ ँ नमः ६

ॐ ऐँक्रौ ँ नमः ७ ॐ ऐँव्रीं नमः ८ ॐ ऐँस्ली ँ नमः ९

ॐ ऐँह्री ँ नमः १० ॐ ऐँहौ ँ नमः ११ ॐ ऐँश्राँ नमः १२

ॐ ऐँग्रीं नमः १३ ॐ ऐँक्रूँ नमः १४ ॐ ऐँक्री ँ नमः १५

ॐ ऐँयाँ नमः १६ ॐ ऐँद्लूँ नमः १७ ॐ ऐँदू नमः १८

ॐ ऐँक्षँ नमः १९ ॐ ऐँओ ँ नमः २० ॐ ऐँक्रौ ँ नमः २१

ॐ ऐँक्ष्म्क्लरीं नमः २२ ॐ ऐँवाँ नमः २३ ॐ ऐँश्रूँ नमः २४

ॐ ऐँग्लूँ नमः २५ ॐ ऐँल्रीं नमः २६ ॐ ऐँप्रे ँ नमः २७

ॐ ऐँहूँ नमः २८ ॐ ऐँह्रौ ँ नमः २९ ॐ ऐँदे ँ नमः ३०

ॐ ऐँनूँ नमः ३१ ॐ ऐँआँ नमः ३२ ॐ ऐँफ्राँ नमः ३३

ॐ ऐँप्री ँ नमः ३४ ॐ ऐँदँ नमः ३५ ॐ ऐँफ्रीं नमः ३६

ॐ ऐँह्री ँ नमः ३७ ॐ ऐँगूँ नमः ३८ ॐ ऐँश्रौ ँ नमः ३९

ॐ ऐँसाँ नमः ४० ॐ ऐँश्री ँ नमः ४१ ॐ ऐँजुँ नमः ४२

ॐ ऐँहँ नमः ४३ ॐ ऐँसँ नमः ४४

।।इति तृतीयोध्याय:।।३।।

ॐ ऐँश्रौ ँ नमः १ ॐ ऐँसौ ँ नमः २ ॐ ऐँदीं नमः ३

ॐ ऐँप्रे ँ नमः ४ ॐ ऐँयाँ नमः ५ ॐ ऐँरूँ नमः ६

ॐ ऐँभँ नमः ७ ॐ ऐँसूँ नमः ८ ॐ ऐँश्राँ नमः ९

ॐ ऐँओ ँ नमः १० ॐ ऐँलूँ नमः ११ ॐ ऐँडूँ नमः १२

ॐ ऐँजूँ नमः १३ ॐ ऐँधूँ नमः १४ ॐ ऐँत्रँ नमः १५

ॐ ऐँह्लीं नमः १६ ॐ ऐँश्री ँ नमः १७ ॐ ऐँईं नमः १८

ॐ ऐँह्राँ नमः १९ ॐ ऐँहल्रूँ नमः २० ॐ ऐँक्लूँ नमः २१

ॐ ऐँक्राँ नमः २२ ॐ ऐँल्लूँ नमः २३ ॐ ऐँफ्रँ नमः २४

ॐ ऐँक्ली ँ नमः २५ ॐ ऐँम्लूँ नमः २६ ॐ ऐँघ्रै ँ नमः २७

ॐ ऐँश्रौ ँ नमः २८ ॐ ऐँह्रौ ँ नमः २९ ॐ ऐँव्रीं नमः ३०

ॐ ऐँह्री ँ नमः ३१ ॐ ऐँत्रौ ँ नमः ३२ ॐ ऐँहल्लौ ँ नमः ३३

ॐ ऐंगीं नमः ३४ ॐ ऐंयूं नमः ३५ ॐ ऐंह्रीँ नमः ३६
ॐ ऐंह्लँ नमः ३७ ॐ ऐंश्रौँ नमः ३८ ॐ ऐंओँ नमः ३९
ॐ ऐंअँ नमः ४० ॐ ऐंम्हौँ नमः ४१ ॐ ऐंप्रीँ नमः ४२

।।इति चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

ॐ ऐंश्रौँ नमः १ ॐ ऐंप्रीँ नमः २ ॐ ऐंओँ नमः ३
ॐ ऐंह्रीँ नमः ४ ॐ ऐंल्रीं नमः ५ ॐ ऐंत्रोँ नमः ६
ॐ ऐंक्राँ नमः ७ ॐ ऐंह्सौँ नमः ८ ॐ ऐंह्रीँ नमः ९
ॐ ऐंश्रौँ नमः १० ॐ ऐंह्रूँ नमः ११ ॐ ऐंक्लीँ नमः १२
ॐ ऐंरौँ नमः १३ ॐ ऐंस्त्रीँ नमः १४ ॐ ऐंम्लीँ नमः १५
ॐ ऐंप्लुं नमः १६ ॐ ऐंम्हौँ नमः १७ ॐ ऐंस्त्रीँ नमः १८
ॐ ऐंग्लूं नमः १९ ॐ ऐंव्रीं नमः २० ॐ ऐंसौँ नमः २१
ॐ ऐंलूं नमः २२ ॐ ऐंल्लूँ नमः २३ ॐ ऐंद्राँ नमः २४
ॐ ऐंक्साँ नमः २५ ॐ ऐंक्ष्रीँ नमः २६ ॐ ऐंग्लौँ नमः २७
ॐ ऐंस्कँ नमः २८ ॐ ऐंत्रूँ नमः २९ ॐ ऐंस्क्लूं नमः ३०
ॐ ऐंक्रौँ नमः ३१ ॐ ऐंछ्रीं नमः ३२ ॐ ऐंम्लूं नमः ३३
ॐ ऐंक्लूं नमः ३४ ॐ ऐंशाँ नमः ३५ ॐ ऐंल्हीं नमः ३६
ॐ ऐंस्त्रूं नमः ३७ ॐ ऐंल्लीँ नमः ३८ ॐ ऐंलीँ नमः ३९
ॐ ऐंसँ नमः ४० ॐ ऐंलूं नमः ४१ ॐ ऐंह्सूं नमः ४२
ॐ ऐंश्रूं नमः ४३ ॐ ऐंजूं नमः ४४ ॐ ऐंह्स्ल्रीँ नमः ४५
ॐ ऐंस्कीं नमः ४६ ॐ ऐंक्लाँ नमः ४७ ॐ ऐंश्रूं नमः ४८
ॐ ऐंहँ नमः ४९ ॐ ऐंह्लीं नमः ५० ॐ ऐंक्स्त्रूं नमः ५१
ॐ ऐंद्रौँ नमः ५२ ॐ ऐंक्लूं नमः ५३ ॐ ऐंगाँ नमः ५४
ॐ ऐंसँ नमः ५५ ॐ ऐंल्स्राँ नमः ५६ ॐ ऐंफ्रीँ नमः ५७
ॐ ऐंस्लाँ नमः ५८ ॐ ऐंल्लूं नमः ५९ ॐ ऐंफ्रेँ नमः ६०
ॐ ऐंओँ नमः ६१ ॐ ऐंस्म्लीँ नमः ६२ ॐ ऐंह्राँ नमः ६३
ॐ ऐंऊँ नमः ६४ ॐ ऐंह्लँ नमः ६५ ॐ ऐंहूँ नमः ६६

ॐ ऐंनँ नमः ६७ ॐ ऐंस्त्राँ नमः ६८ ॐ ऐंवँ नमः ६९

ॐ ऐंमँ नमः ७० ॐ ऐंम्क्लाँ नमः ७१ ॐ ऐंशाँ नमः ७२

ॐ ऐंल्लँ नमः ७३ ॐ ऐंभैँ नमः ७४ ॐ ऐंल्लूँ नमः ७५

ॐ ऐंहौँ नमः ७६ ॐ ऐंईं नमः ७७ ॐ ऐंचेँ नमः ७८

ॐ ऐंल्क्रीँ नमः ७९ ॐ ऐंह्ल्रीं नमः ८० ॐ ऐंक्ष्म्ल्रीं नमः ८१

ॐ ऐंपूं नमः ८२ ॐ ऐंश्रौँ नमः ८३ ॐ ऐंह्रौँ नमः ८४

ॐ ऐंभ्रूं नमः ८५ ॐ ऐंक्स्त्रीँ नमः ८६ ॐ ऐंआँ नमः ८७

ॐ ऐंक्रूं नमः ८८ ॐ ऐंत्रूं नमः ८९ ॐ ऐंडुं नमः ९०

ॐ ऐंजाँ नमः ९१ ॐ ऐंहल्रूँ नमः ९२ ॐ ऐंफ्रौँ नमः ९३

ॐ ऐंक्रौँ नमः ९४ ॐ ऐंकिं नमः ९५ ॐ ऐंग्लूँ नमः ९६

ॐ ऐंछ्क्लीँ नमः ९७ ॐ ऐंरँ नमः ९८ ॐ ऐंक्सैँ नमः ९९

ॐ ऐंस्तुं नमः १०० ॐ ऐंश्रौँ नमः १०१ ॐ ऐंश्रीँ नमः १०२

ॐ ऐंओँ नमः १०३ ॐ ऐंलूँ नमः १०४ ॐ ऐंल्हूँ नमः १०५

ॐ ऐंल्लूँ नमः १०६ ॐ ऐंस्क्रीँ नमः १०७ ॐ ऐंस्त्रोँ नमः १०८

ॐ ऐंस्भ्रूँ नमः १०९ ॐ ऐंक्ष्म्क्लीँ नमः ११० ॐ ऐंव्रीं नमः १११

ॐ ऐंसीं नमः ११२ ॐ ऐंभूँ नमः ११३ ॐ ऐंलाँ नमः ११४

ॐ ऐंश्रौँ नमः ११५ ॐ ऐंस्हैँ नमः ११६ ॐ ऐंह्रीँ नमः ११७

ॐ ऐंश्रीँ नमः ११८ ॐ ऐंफ्रैं नमः ११९ ॐ ऐंरूँ नमः १२०

ॐ ऐंच्छ्रूँ नमः १२१ ॐ ऐंल्हूँ नमः १२२ ॐ ऐंकँ नमः १२३

ॐ ऐंद्रूँ नमः १२४ ॐ ऐंश्रीँ नमः १२५ ॐ ऐंसाँ नमः १२६

ॐ ऐंह्रीँ नमः १२७ ॐ ऐंएँ नमः १२८ ॐ ऐंस्कीं नमः १२९

॥इति पञ्चमोऽध्यायः॥५॥

ॐ ऐंश्रौँ नमः १ ॐ ऐंओँ नमः २ ॐ ऐंत्रूँ नमः ३

ॐ ऐंह्रौँ नमः ४ ॐ ऐंक्रौँ नमः ५ ॐ ऐंश्रौँ नमः ६

ॐ ऐंत्रीँ नमः ७ ॐ ऐंक्लीँ नमः ८ ॐ ऐंप्रीँ नमः ९

ॐ ऐंह्रीँ नमः १० ॐ ऐंह्रौ नमः ११ ॐ ऐंश्रौँ नमः १२

ॐ ऐँएँ नमः १३ ॐ ऐँओँ नमः १४ ॐ ऐँश्रीँ नमः १५

ॐ ऐँक्राँ नमः १६ ॐ ऐँहूँ नमः १७ ॐ ऐँछ्राँ नमः १८

ॐ ऐँक्ष्म्क्लरीं नमः १९ ॐ ऐँल्लुँ नमः २० ॐ ऐँसौँ नमः २१

ॐ ऐँह्लौँ नमः २२ ॐ ऐँसौँ क्रुँ नमः २३ ॐ ऐँसौँ नमः २४

।।इति षष्ठोऽध्यायः।।६।।

ॐ ऐँश्रौँ नमः १ ॐ ऐँकुँ नमः २ ॐ ऐँह्लीं नमः ३

ॐ ऐँह्रँ नमः ४ ॐ ऐँमूँ नमः ५ ॐ ऐँत्रौँ नमः ६

ॐ ऐँह्रौँ नमः ७ ॐ ऐँओँ नमः ८ ॐ ऐँह्सूँ नमः ९

ॐ ऐँक्लूँ नमः १० ॐ ऐँक्रैं नमः ११ ॐ ऐँनैँ नमः १२

ॐ ऐँलूँ नमः १३ ॐ ऐँह्स्लीँ नमः १४ ॐ ऐँप्लूँ नमः १५

ॐ ऐँशाँ नमः १६ ॐ ऐँस्लूँ नमः १७ ॐ ऐँप्लाँ नमः १८

ॐ ऐँप्रेँ नमः १९ ॐ ऐँअँ नमः २० ॐ ऐँऔँ नमः २१

ॐ ऐँम्लरीं नमः २२ ॐ ऐँश्राँ नमः २३ ॐ ऐँसौँ नमः २४

ॐ ऐँश्रौँ नमः २५ ॐ ऐँप्रीँ नमः २६ ॐ ऐँह्स्त्रीँ नमः २७

।।इति सप्तमोध्यायः।।७।।

ॐ ऐँश्रौँ नमः १ ॐ ऐँम्ल्ह्ररीं नमः २ ॐ ऐँप्रूँ नमः ३

ॐ ऐँएँ नमः ४ ॐ ऐँक्रोँ नमः ५ ॐ ऐँईं नमः ६

ॐ ऐँएँ नमः ७ ॐ ऐँल्री नमः ८ ॐ ऐँफ्रौँ नमः ९

ॐ ऐँम्लूँ नमः १० ॐ ऐँनोँ नमः ११ ॐ ऐँहूँ नमः १२

ॐ ऐँफ्राँ नमः १३ ॐ ऐँग्लौँ नमः १४ ॐ ऐँस्मोँ नमः १५

ॐ ऐँसौँ नमः १६ ॐ ऐँश्रीँ नमः १७ ॐ ऐँस्होँ नमः १८

ॐ ऐँख्सेँ नमः १९ ॐ ऐँक्ष्म्लीँ नमः २० ॐ ऐँह्रौँ नमः २१

ॐ ऐँवीं नमः २२ ॐ ऐँलँ नमः २३ ॐ ऐँल्सीं नमः २४

ॐ ऐँब्लीँ नमः २५ ॐ ऐँत्स्रोँ नमः २६ ॐ ऐँब्रुँ नमः २७

ॐ ऐँश्क्लाँ नमः २८ ॐ ऐँश्रूँ नमः २९ ॐ ऐँह्रीँ नमः ३०

ॐ ऐँशीं नमः ३१ ॐ ऐँक्लीँ नमः ३२ ॐ ऐँक्लौँ नमः ३३

ॐ ऐँफ्रँ नमः ३४ ॐ ऐँह्ल नमः ३५ ॐ ऐँक्लूँ नमः ३६

ॐ ऐँर्तां नमः ३७ ॐ ऐँम्लँ नमः ३८ ॐ ऐँहँ नमः ३९

ॐ ऐँस्लूँ नमः ४० ॐ ऐँऔँ नमः ४१ ॐ ऐँल्हौँ नमः ४२

ॐ ऐँल्श्रीं नमः ४३ ॐ ऐँयाँ नमः ४४ ॐ ऐँथ्लीँ नमः ४५

ॐ ऐँल्हीं नमः ४६ ॐ ऐँग्लौँ नमः ४७ ॐ ऐँह्रौँ नमः ४८

ॐ ऐँप्राँ नमः ४९ ॐ ऐँक्रीँ नमः ५० ॐ ऐँक्लीँ नमः ५१

ॐ ऐँन्लुँ नमः ५२ ॐ ऐँहीं नमः ५३ ॐ ऐँह्लौँ नमः ५४

ॐ ऐँह्रैँ नमः ५५ ॐ ऐँभ्रँ नमः ५६ ॐ ऐँसौँ नमः ५७

ॐ ऐँश्रीँ नमः ५८ ॐ ऐँप्सू नमः ५९ ॐ ऐँद्रौँ नमः ६०

ॐ ऐँस्त्राँ नमः ६१ ॐ ऐँह्स्लाँ नमः ६२ ॐ ऐँस्ल्रीँ नमः ६२

।।इत्यष्टमोऽध्यायः।।८।।

ॐ ऐँरौँ नमः १ ॐ ऐँक्लीँ नमः २ ॐ ऐँम्लौँ नमः ३

ॐ ऐँश्रौँ नमः ४ ॐ ऐँग्लीँ नमः ५ ॐ ऐँह्रौँ नमः ६

ॐ ऐँह्सौँ नमः ७ ॐ ऐँईं नमः ८ ॐ ऐँब्रूँ नमः ९

ॐ ऐँश्राँ नमः १० ॐ ऐँलूँ नमः ११ ॐ ऐँआँ नमः १२

ॐ ऐँश्रीँ नमः १३ ॐ ऐँक्रौं नमः १४ ॐ ऐँप्रँ नमः १५

ॐ ऐँक्लीँ नमः १६ ॐ ऐँभ्रूँ नमः १७ ॐ ऐँह्रौँ नमः १८

ॐ ऐँक्रीँ नमः १९ ॐ ऐँम्लीँ नमः २० ॐ ऐँग्लौँ नमः २१

ॐ ऐँह्सूँ नमः २२ ॐ ऐँप्लीँ नमः २३ ॐ ऐँह्रौँ नमः २४

ॐ ऐँह्स्राँ नमः २५ ॐ ऐँस्हौँ नमः २६ ॐ ऐँल्लूँ नमः २७

ॐ ऐँक्स्लीँ नमः २८ ॐ ऐँश्रीँ नमः २९ ॐ ऐँस्तूँ नमः ३०

ॐ ऐँच्रेँ नमः ३१ ॐ ऐँवीं नमः ३२ ॐ ऐँक्ष्लूँ नमः ३३

ॐ ऐँश्लूँ नमः ३४ ॐ ऐँक्रूँ नमः ३५ ॐ ऐँक्राँ नमः ३६

ॐ ऐँह्रौँ नमः ३७ ॐ ऐँक्राँ नमः ३८ ॐ ऐँस्थ्लीँ नमः ३९

ॐ ऐँम्रूँ नमः ४० ॐ ऐँफ्रूँ नमः ४१

।।इति नवमोऽध्यायः।।९।।

ॐ ऐँश्रौँ नमः १ ॐ ऐँह्रीँ नमः २ ॐ ऐँक्लूँ नमः ३

ॐ ऐँह्रीँ नमः ४ ॐ ऐँम्लँ नमः ५ ॐ ऐँश्रौँ नमः ६

ॐ ऐँह्रीँ नमः ७ ॐ ऐँग्लीँ नमः ८ ॐ ऐँहँ नमः ९

ॐ ऐँधूँ नमः १० ॐ ऐँहुं नमः ११ ॐ ऐँद्रौँ नमः १२

ॐ ऐँश्रौं नमः १३ ॐ ऐँत्रूँ नमः १४ ॐ ऐँब्रूँ नमः १५

ॐ ऐँफ्रैं नमः १६ ॐ ऐँह्राँ नमः १७ ॐ ऐँजुं नमः १८

ॐ ऐँसौँ नमः १९ ॐ ऐँस्लूँ नमः २० ॐ ऐँप्रेँ नमः २१

ॐ ऐँह्स्वाँ नमः २२ ॐ ऐँप्रीँ नमः २३ ॐ ऐँफ्राँ नमः २४

ॐ ऐँक्रीँ नमः २५ ॐ ऐँश्रीँ नमः २६ ॐ ऐँक्राँ नमः २७

ॐ ऐँसः नमः २८ ॐ ऐँक्लीँ नमः २९ ॐ ऐँव्रेँ नमः ३०

ॐ ऐँइँ नमः ३१ ॐ ऐँज्स्हल्रीं नमः ३२

।।इति दशमोऽध्यायः।।

ॐ ऐँश्रौँ नमः १ ॐ ऐँक्रँ नमः २ ॐ ऐँश्रौँ नमः ३

ॐ ऐँल्लीँ नमः ४ ॐ ऐँप्रेँ नमः ५ ॐ ऐँसौः नमः ६

ॐ ऐँस्हौँ नमः ७ ॐ ऐँत्रूँ नमः ८ ॐ ऐँक्लीँ नमः ९

ॐ ऐँस्क्लीँ नमः १० ॐ ऐँप्रीँ नमः ११ ॐ ऐँग्लौँ नमः १२

ॐ ऐँह्स्ह्रीँ नमः १३ ॐ ऐँस्तौँ नमः १४ ॐ ऐँलीँ नमः १५

ॐ ऐँम्लीँ नमः १६ ॐ ऐँस्तूँ नमः १७ ॐ ऐँज्स्हीँ नमः १८

ॐ ऐँफ्रँ नमः १९ ॐ ऐँक्रँ नमः २० ॐ ऐँह्लीँ नमः २१

ॐ ऐँल्लूँ नमः २२ ॐ ऐँक्ष्म्रीँ नमः २३ ॐ ऐँश्रूँ नमः २४

ॐ ऐँइँ नमः २५ ॐ ऐँजूँ नमः २६ ॐ ऐँत्रैँ नमः २७

ॐ ऐँदूँ नमः २८ ॐ ऐँह्रौँ नमः २९ ॐ ऐँक्लीँ नमः ३०

ॐ ऐँसूँ नमः ३१ ॐ ऐँहौँ नमः ३२ ॐ ऐँश्व्रँ नमः ३३

ॐ ऐँव्रूँ नमः ३४ ॐ ऐँस्फ्रूँ नमः ३५ ॐ ऐँह्रीँ नमः ३६

ॐ ऐँ लँ नमः ३७ ॐ ऐँ हसौँ नमः ३८ ॐ ऐँ सेँ नमः ३९

ॐ ऐँह्रीँ नमः ४० ॐ ऐँह्रीँ नमः ४१ ॐ ऐँ विं नमः ४२

ॐ ऐँप्लीँ नमः ४३ ॐ ऐँक्ष्म्क्लीँ नमः ४४ ॐ ऐँत्स्राँ नमः ४५

ॐ ऐँप्रँ नमः ४६ ॐ ऐँम्लीँ नमः ४७ ॐ ऐँस्रूँ नमः ४८

ॐ ऐँक्ष्माँ नमः ४९ ॐ ऐँस्तूँ नमः ५० ॐ ऐँस्ह्रीँ नमः ५१

ॐ ऐँथ्रीँ नमः ५२ ॐ ऐँक्रौँ नमः ५३ ॐ ऐँश्राँ नमः ५४

ॐ ऐँम्लीँ नमः ५५ ।।इत्येकादशोध्यायः।।११।।

ॐ ऐँ ह्रीँ नमः १ ॐ ऐँ आँ नमः २ ॐ ऐँ श्रीँ नमः ३

ॐ ऐँ आँ नमः ४ ॐ ऐँ क्लीँ नमः ५ ॐ ऐँ क्रूँ नमः ६

ॐ ऐँ श्रूँ नमः ७ ॐ ऐँ प्राँ नमः ८ ॐ ऐँ क्रूँ नमः ९

ॐ ऐँ दिँ नमः १० ॐ ऐँ फ्रँ नमः ११ ॐ ऐँ हँ नमः १२

ॐ ऐँ सः नमः १३ ॐ ऐँ चेँ नमः १४ ॐ ऐँ सूँ नमः १५

ॐ ऐँ प्रीँ नमः १६ ॐ ऐँ व्लूँ नमः १७ ॐ ऐँ आँ नमः १८

ॐ ऐँ औँ नमः १९ ॐ ऐँ ह्रीँ नमः २० ॐ ऐँ क्रीँ नमः २१

ॐ ऐँ द्राँ नमः २२ ॐ ऐँ श्रीँ नमः २३ ॐ ऐँ स्लीँ नमः २४

ॐ ऐँ क्लीँ नमः २५ ॐ ऐँ स्लूँ नमः २६ ॐ ऐँ ह्रीँ नमः २७

ॐ ऐँ व्लीँ नमः २८ ॐ ऐँ त्रोँ नमः २९ ॐ ऐँ ओँ नमः ३०

ॐ ऐँ श्रौँ नमः ३१ ॐ ऐँ ऐँ नमः ३२ ॐ ऐँ प्रेँ नमः ३३

ॐ ऐँ दूँ नमः ३४ ॐ ऐँ क्लू नमः ३५ ॐ ऐँ औँ नमः ३६

ॐ ऐँ सूँ नमः ३७ ॐ ऐँ चेँ नमः ३८ ॐ ऐँ ह्रँ नमः ३९

ॐ ऐँ प्लीँ नमः ४० ॐ ऐँ क्षाँ नमः ४१

।।इति द्वादशोऽध्यायः।।

ॐ ऐँश्रौँ नमः १ ॐ ऐँव्रीँ नमः २ ॐ ऐँओँ नमः ३

ॐ ऐँऔँ नमः ४ ॐ ऐँह्राँ नमः ५ ॐ ऐँश्रीँ नमः ६

ॐ ऐँश्राँ नमः ७ ॐ ऐँओँ नमः ८ ॐ ऐँप्लीँ नमः ९

ॐ ऐँसोँ नमः १० ॐ ऐँह्रीँ नमः ११ ॐ ऐँक्रीँ नमः १२

ॐ ऐँल्लूँ नमः १३ ॐ ऐँक्लीँ नमः १४ ॐ ऐँह्रीँ नमः १५

ॐ ऐँप्लीँ नमः १६ ॐ ऐँश्रीँ नमः १७ ॐ ऐँल्लीँ नमः १८

ॐ ऐंश्रूँ नमः १९ ॐ ऐंह्रीँ नमः २० ॐ ऐंत्रूँ नमः २१
ॐ ऐंहूँ नमः २२ ॐ ऐंह्राँ नमः २३ ॐ ऐंप्रीँ नमः २४
ॐ ऐंऊँ नमः २५ ॐ ऐंसूँ नमः २६ ॐ ऐंह्लौँ नमः २७
ॐ ऐंषौँ नमः २८ ॐ ऐंआँ नमः २९ ॐ ऐंओँ नमः ३०

इति त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

इति सप्तशतीमन्त्राणां बीजमन्त्राः समाप्ताः॥

॥श्रीगणेशाय नमः॥

अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनीयतन्त्रोक्तानि॥

प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः 'प्रणवं' जपेन्मन्त्रसिद्धिः॥१॥ अग्रे सर्वत्रश्लोकपदं मंत्रोपलक्षणम् सप्रणवमनुलोमव्याहतित्रयमादौ॥ अन्ते तु विलोमँ तदित्यवं प्रतिश्लोकं शतावृत्तापाठेऽतिशीघ्रं सिद्धिः॥२॥ प्रतिश्लोकमादौ 'जात वेदस' इत्यृचं पठेत्सर्वकामसिद्धिः॥३॥ अपमृत्युवारणाय त्र्यंबक' मन्त्रं पठेत् आदावंते च शतमित्यर्थः॥ प्रतिश्लोकं तन्मन्त्रजप इत्यन्यत्र॥४॥ प्रति श्लोकं 'शूलेन पाहि नो देवि इति पाठादपमृत्युनाशः॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपे अपमृत्युवारणम्॥५॥ प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त०' इतिश्लोकं पठेत्सर्व कार्यसिद्धिः॥६॥ प्रतिश्लोकं करोतु सा नः शुभ० इत्यर्द्धं पठेत् सर्वकार्यसिद्धिः॥७॥ स्वाभीष्टवरप्राप्तये 'एवं देव्यावरंलब्ध्वा०' इतिश्लोकं पठेत्॥८॥ सर्वापत्तिवारणाय प्रतिश्लोकं 'दुर्गे स्मृता'इति पठेत्॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वाजपः॥९॥ 'सर्वाबाधा०' इत्यस्यलक्षजपेप्रतिश्लोकंपाठेवा श्लोकोक्तं फलम्॥१०॥ 'इत्थंयदायदाबाधा०' इति श्लोकजपे महामारीशांतिः॥११॥ 'ततो वव्रे नृपो राज्य-' इतिमंत्रस्य जपे पुनः स्वराज्यलाभः॥१२॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि' इत्यनेने सदीपबलिदाने घंटाबंधने च बालग्रहशांति॥१३॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेन पठित्वा ततो

विपरीतक्रमेण द्वितीयामनुलोमेन तृतीयामित्येवमावृत्तित्रयेण शीघ्रं कार्यसिद्धिः॥१४॥ सर्वापत्तिवारणाय 'दुर्गेस्मृता०' इत्यर्द्धंतत्तो 'यदंति यच्च दूरके' इत्यृचँ तदँते 'दारिद्र्यदुख०' इत्यर्द्धमेव कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः॥१५॥ 'काँसोस्मि०' इति इत्यृचँ प्रतिश्लोकँ पठेल्लक्ष्मीप्राप्तिः॥१६॥ प्रतिश्लोकमूअनृणा अस्मिन्० इत्यृतँ पठेदृण परिहारः॥१७॥ मारणार्थम् 'एवमुक्त्वा समुत्पत्य०' इतिश्लोकँ प्रश्लिोकँ पठेत् 'मरणोक्तावृत्तिभिःफलसिद्धिः॥१८॥ 'ज्ञानिनामपि चेताँसि' इति श्लोकजपमात्रेण सद्योमोहनमित्यनुभवसिद्धम् प्रतिश्लोकँतच्छ्लोकपाठँ त्ववश्यम्॥१९॥ 'रोगानशेषान्०' इति श्लोकस्य प्रतिश्लोकँ पाठे सकलरोगनाशः॥ तन्मात्रजपेऽपि सः॥२०॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गँभीरा०' इतिश्लोकस्य प्रतिश्लोकँपाठे पृथग्जपेवाविद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतनाशश्च॥२१॥ 'भगवत्याकृतँसर्वम्०' इत्यादि-द्वादशोत्तरशताक्षरो मँत्रःसर्वकामदः सर्वापत्तिवारणश्च॥२२॥ 'देवि प्रपन्नार्तिहरे' इतिश्लोकस्य यथाकार्यलक्षायुतसहस्रशतान्यतमसँख्याजप प्रतिश्लोकँ पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च॥ एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोके दीपाग्रे केवलमेव नमस्करणेऽतिशीघ्रँ सिद्धिः॥ प्रतिश्लोकँ कामबीजसँपुटितस्य एकचत्वारिंशद्दिनँ त्रिरावृत्तौ सर्वकामसिद्धिः॥२३॥ एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहँ द्वादशावृत्तौ वशीकरणम्॥२४॥ मायाबीजंसंपुटितस्य फट्पल्लवसहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तावुच्चाटनसिद्धिः॥२५॥ तादृशमेव दिनचतुष्टयमेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः॥२६॥ एकोनपंचाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं श्रीबीजसंपुटितस्य पंचदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः॥२७॥ प्रतिश्लोकं वाग्बीजसंपुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः॥२८॥

अथ शतचण्डीविधिः

शंकरस्य भवान्यावा प्रासादनिकटे शुभम्।
मण्डपं द्वारवेद्याढ्यं कुर्यात्सध्वजतोरणम्।।१।।
तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽप वा।
स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा वृणुयादृश वाडवान् (वाडवा ब्राह्मणाः)।।२।।
जितेन्द्रियान्सदाचारान्कुलीनान्सत्यवादिनः।
व्युत्पन्नांश्चण्डिकापाठरताँल्लज्जादयावतः।।३।।
मधुपर्कविधानेन स्वर्णवस्त्रादिदानतः।।
जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम्।।४।।
ते हविष्यान्नमश्नंतो मंत्रार्थगतमानसाः।।
भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चंडिकास्तवम्।।५।।
मार्कण्डेय पुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतसः।।
नवार्णं चण्डिकामंत्रं जपेयुश्चायुतं पृथक्।।६।।
(पृथक्संपुटकरणादिति शेषः)।। प्रत्येकं ब्राह्मणैरयुतजपः कार्यः।।

अष्टमीनवमी चतुर्दशीपौर्णमासीषु यथा शतावृत्तिसमाप्तिर्भवति तथाऽऽरंभः कर्तव्य इति सांप्रदायिकाः।।

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम्।।
द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत्।।१।।

तासां क्रमेण नामानि– कुमारी १ त्रिमूर्तिः २ कल्याणी ३ रोहिणी ४ कालिका ५ चण्डिका ६ शाँभवी ७ दुर्गा ८ सुभद्रा ९ इति नाममंत्रैस्तासां पूजा। तत्रहीनाधिकाङ्गी कुष्ठव्रणयुता अंधा काणा कुरूपा केकरा कुबरालोमयुग्देहा दासीजा रोगिणीत्येवमाद्यावर्ज्याः।।

विप्रां सर्वेष्टसंसिद्ध्यै यशसेक्षत्रियोद्भवाम्
वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्।।
गन्धपुष्पधूपदीपभक्ष्यभोज्यैर्यथाशक्ति वस्त्राभरणैश्च पूजयेत्।।
द्विवर्षा सा कुमार्य्युक्तात्रिमूर्तिर्हायनत्रिका।।
चतुरब्दा तूकल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी।।

षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायनी।।
अष्टवर्षा शांभवी स्याद्दुर्गा तु नवहायनी।।
सुभद्रा दशवर्षोक्तानाममन्त्रैः प्रपूजयेत्।।
तासामावाहने मन्त्रः प्रोच्यते शंङ्करोदितः।।
मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणांरूपधारिणीम्।।
नवदुर्गात्मकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।।
कुमारिकादिकन्यानां पुजामंत्रान्ब्रुवेऽधुना।।
जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तुते।।
त्रिपुरां त्रिपुराधारांत्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम्।।
त्रैलोक्यवंदितां देवी त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्
कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।
अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्
अनंतशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।
कामचारीं शुभां कांतां कालचक्रस्वरूपिणीम्।।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।।
चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजनीम्।।
पूजयामि सदा देवी चण्डिकाचंडविक्रमाम्।।
सदानंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम्।।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम्।।
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्।।
पूजयामि सद् भक्त्यादुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम्।।
सुंदरां स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।
एतैर्मंत्रैः पुराणोक्तैस्तां तां कन्यां समर्चयेत्।।

।।इति कुमारिकाणां पूजनम्।।

वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले।।
घटं संस्थाप्य विधिना तत्रावाह्यार्चयेच्छिवाम्।
तदग्रे कन्याकाश्चापि पूजयेद्ब्राह्मणानपि।।
उपचारैस्तु विविर्धर्नवार्णावरणान्यपि।।
ॐकार: प्रथमंपीठं पूजयेत्सम्प्रदायत:।।
पूर्वादिदिक्षु पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम्।।
गणेशक्षेत्रपालौच पादुका बटुकास्त्रय:।।
आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु पूज्यं देवीचतुष्टयम्।।
जया च विजया चैव जयन्तीचापराजिता।।

पूर्वोक्तयंत्रे पूर्वकोणेसरस्वतीसहितो ब्रह्मा श्रीसहितोविष्णुनैर्ऋत्यामुमया शिवो वायव्यां षट्कोणे चक्रमध्यस्थमध्यबीजे श्रीमहालक्ष्मी:।। ह्री ँ महाकाली ऐ ँ महासरस्वती दक्षिणवामयो:।। उदीच्यां सिंहोदक्षिणे महिष:।। षट्कोणेषु नंदजारक्तदन्तिकाशाकंभरीदुर्गाभीमाभ्रामर्य्य:।। सबिन्दुनामाद्यवर्णताराद्याश्चासां नाममंत्रा: पूजादौ।। तार: प्रणव:।। अष्टत्रयेषु ब्रह्माणीमाहेश्वरीकौमारी वैष्णवीवाराहीनारसिंह्यैन्द्रीचामुण्डा उक्तरीत्या नाम मन्त्रै: पूज्या:।। ततो विष्णुमायादिचतुर्विंशति देवता: प्रागादिक्रमेणकेसरेषु पूज्या:।। प्रतिपत्रं च केसरत्रयम्।। ताश्च विष्णुमाया १ चेतना २ बुद्धि ३ निद्रा ४ क्षुधा ५ छाया ६ शक्ति ७ तृष्णा ८ क्षान्ति ९ जाति १० लज्जा ११ शान्ति १२ श्रद्धा १३ कांति १४ लक्ष्मी १५ धृति १६ वृत्ति १७ स्मृति १८ दया १९ तृष्टि २० पुष्टि २१ मातृ २२ भ्रांति २३ चिति २४ रूपा एतावत्य:।। (सप्तशतीस्तवे पञ्चमाध्याये आसां चतुर्विंशतीनां न पाठ इत न भ्रामितव्यम्।। कात्यायनीयतंत्राविरोधात्।।

नालमूले तु संपूज्य माधवादिचतुष्टयम्।।
आधार: कूर्मशेषौ च चतुर्थी पृथिवी नृप।।
गृहकोणेषु गणेश: क्षेत्रपालो बटुको योगिन्य:।।
प्रागादिदिक्षु इंद्राद्याश्चेति।। सर्वं चतुर्दिनं कुर्यात्।।

तत्र प्रथमेऽह्नि एकावृत्तिर्द्वितीये द्वे तृतीये तिस्रश्चतुर्थे चतस्त्रइति।।पञ्चमे।। होम: होमद्रव्याणि।।

पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलादिभिः।।
मातुलिंगैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलयुतैस्तिलैः।।
जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिरिति।।
सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिमंत्रं हुतं चरेत्।।
अयुतं च नवार्णेन स्थापितऽग्नौ विधानतः।।
कृत्वाऽऽवरणदेवानां होमं तन्नाम मंत्रतः।।
कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यगदेवमग्निंविसृज्य च।।
अभिषिचेच्चयष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः।।
निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणांदिशेत्।।
भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः।।
तेभ्योऽपि दक्षिणांदत्त्वा गृह्णीयादाशिषस्तथा।।
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यंत्युपद्रवाः।।

।। इति शतचण्डीविधिः।।

श्रीदुर्गामानसपूजनम्

उद्यच्चन्दनकुङ्कुमारुणपयोधाराभिराप्लावितां
नानानर्घ्यमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके।
आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो
मातः सुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात्।।१।।
देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं
चञ्चत्काञ्चनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्।
एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं
गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके।।२।।
पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो
गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम्।
तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनीस्त्रोतसि
स्नात्वा प्रोज्जवलगन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।३।।

सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां
सचन्दनसकुङ्कुमागुरुभरेण विभ्राजिताम्।
महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां
गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे॥४॥
गन्धर्वामरकिन्नरप्रियतमासंतानहस्ताम्बुज-
प्रस्तारैर्ध्रियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम्।
मातर्भास्वरभानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं
चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम्॥५॥
स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका
मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये।
हारो वक्षसि कङ्कणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके
विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम्॥६॥
ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं
सिन्दूरं विलसल्ललटाफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्।
राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदलश्रीमोचने लोचने
तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे॥७॥
अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं
निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे।
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमै-
र्विनिर्मितमघच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम्॥८॥
कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं
चञ्चच्चम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्।
देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादिकुम्भव्रजै-
रम्भःशाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके॥९॥
कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती-
मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः।
पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारसस्रोतसा
ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये॥१०॥

मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजै-
मध्वीकैः सह कुङ्कुमैः सुरचितै सर्पिर्भिरामिश्रितैः।
सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये
धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे॥११॥

घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो
महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः।
सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वितस्तव
त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे॥१२॥

जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं
युक्तं हिङ्गुमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः।
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं
नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे॥१३॥

लवङ्गकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं
सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम्।
सुधामधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं
गृहाण मुखपङ्कजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम्॥१४॥

शरत्प्रभवचन्द्रमः स्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं
गलत्सुरतरङ्गिणीललितमौक्तिकाडम्बरम्।
गृहाण नवकाञ्चनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं
महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत्॥१५॥

मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं
शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्।
सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः
स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः॥१६॥

स्वर्गाङ्गणे वेणुमृदङ्गशङ्खभेरीनिनादैरुपगीयमाना।
कोलाहलैराकलिता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय॥१७॥

देवि भक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते।
तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम्॥१८॥
एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः।
यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात्॥१९॥

↔↔↔

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्णं तदस्तु मे॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥

॥श्रीदुर्गार्पणमस्तु॥

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वनुसरणं क्लेशहरणम्।।१।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।२।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।३।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवी द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।४।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।६।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं

भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।७।।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे।

न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै

मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।८।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः

किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे

धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।९।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।११।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।१२।।

।।इति देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।



परिमल पब्लिकेशन्स
२७/२८, शक्ति नगर दिल्ली ११०००७
दूरभाष - 23845456
E-mail : parimal@ndf.vsnl.net.in
Website: www.parimalpublication.com